



I SSN 2229-547X VI DEHA

विदेह ११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक



११४)

अ अकमे अङ्क:-

## १. संपादकीय संदेश

### २. गद्य



२.१.१. अविरुद्ध श्रीराष्ट्र-गणिपद्मक कारणातिक



आलोचनात्मक अध्यायन प्रतिकूल लोकार्पण  
कामत- कतः छा कव छी लय!! नष्टक:- शिफित छै



२.२.१. पुष्पा मल्ल- मणिपद्म जयन्तीपर्व दिवसीय  
विधिवानुष्ठान द्वारा करि शोभा ९ सितम्बर २०१२ कै सम्पन्न



२. नरेंद्र कुमार सा-नीतिशैली सौम्या मोदीक  
समर्पण/ ठंडाक मौसम मे गर्मायित रिहावक बाजरीति/ ३  
अर्द्धरुक्मिणी बाह्यगतिक रिहाव दोवा दबतंगा, मोहो जेतोह  
दुखडी/ जापान आ कनाडाक दोवा पर्व जयताह मोदी/ मैथिल  
ब्रह्माकै किशोर नमो नमक बाजरी कति कयननि मोमिया स  
तेह/ रिहावमे निरेशक गङ्गा जलमोक बैनरैक/ मधुरी सहित  
तीन जगह पर्व रगत पीपा पुन/ पंचायत प्रतिनिधि



२.३. निरुद्ध सा 'एवम्' - मैथिली उपन्यास  
साहित्यिक विकासमे हविमोहन साक योगदान



२.४. जगन्नाथे जगन्नाथ गङ्गा- किछु बिहारी कथा



२.५. ब्रह्म गङ्गा- ब्रह्म जल पिबि



२.६. क्याव जगन्नाथ-वधूकथा- वधूकथा



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



२.१.१. उम शंकर-लोक रसियाव/विहारी कथा-



वीम ठोका २. गेवुधन शंकर- मैथिली महिला आ



खिदी ३. केवाम दास-महिलाक लेबक कथा संग्रह 'खिदी'



२.१.२. गुरु प्रदेव जी  
गंगेन

गुलाब साई चन्दन कथाव साक

३. गद्य



३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर अतिव- की लहेव आ  
की लोवा लाव (आमे गीत)- (आगी)



३.२. गिरिव सा-लो बाण्डपद- बाण  
बिवास साह जीक पृथी कबिता



३.३. जगदीश अमाद गल्ल-१० लोष्ट गीत

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* विदेह अथवा योशिनो पौष्पिक अ पत्रिका विदेह'



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,  
संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मानवीय



३४.५.

वाङ्मय गीत २.

उपलब्धि सा



३५.

मन्त्री कायत



३६.

नन्द विवास बाघ जीक दृष्टी करिता



३७.

जगदानन्द सा मन्त्र



३.४. किशोर काशीगढ़



४. मिथिला कवि-संगीत १.

जाति सा टोषी



२. बख्शिश मिसे (चित्रमय मिथिला) ३. उमेशने  
मन्दव (मिथिलाक रत्नपति/ मिथिलाक खीर-खण्ड/ मिथिलाक  
खिलगी)





३. गद्य-पद्य भावना: श्री. उषा शर्मा क डोगरी करिताक



हिन्दी अनुवाद: शीमती बज्जी शर्मा आ मैथिली अनुवाद :  
डा. गीतु कमार सिंह



३. रौवाना प्रते-१. जगदीश प्रसाद मण्डल-रौन विरुति



कथा- रूढ़ि या दान्दी २. अमी कागत- दूरी  
रौन करिता

भाषागत बला-वैकल्य -मासक मैथिली, विदेहक मैथिली-अंग्रेजी  
आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अष्टवर्षागव पत्रिका लेब मर्क-डिजिटल)  
एम्प्ले एम्प्ले. सर्वर आधारित-Based on ms-sql server





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानुषीमिह

Maithili -English and English-Maithili  
Dictionary.]

बिदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक ( ब्रैल, तिरहुता आ  
देवनागरी मे ) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंकपव  
उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e  
journal ( in Braille, Tirhuta and  
Devanagari versions ) are available for  
pdf download at the following link .

बिदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ  
देवनागरी कपमे Videha e journal's all old  
issues in Braille Tirhuta and Devanagari  
versions

बिदेह अ-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह अ-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



↑ बिदेह आब.एस.एस.सी.डी. एनीमेटेडवर्क अपन साइट/  
ब्रैलपव नगाडु ।



ब्रैल "लखाउठ" पव "एड गाडजेठ" मे "सीड"  
सेलेक्ट कर "सीड यू.आर.एल."

मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँगप केनासँ

बिंदु बिदेह *Videha बिदेह* [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई  
पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अथवा मैथिली पत्रिका अ पत्रिका बिदेह*



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सोहो बिदेह शीड थोपु कऱ सकेत छी । गुगल बीडबमे पठरौ  
जेत <http://reader.google.com/> पब जा कऱ Add a  
Subscription ऐष सिक कऱ ओ खी  
अथ <http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कऱ  
ओ Add ऐष दऱौड ।



[Join official Videha facebook group.](#)



[Join Videha google groups](#)



बिदेह वेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल  
पोडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल  
छी, (cannot see/write Maithili in  
Devanagari / Mthilakshara follow links  
below or contact at [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com))  
तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाड । सगहि बिदेहक  
सँभ मैथिली भाषागक/ वचना लेखक नर-पुवान अक



पढ़ें ।

<http://devanaagari.i.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रॉन्गमे

ऑनलाइन देवनागरी ठागप कक, रॉन्गमे कापी कक आ रड  
डाक्यूमेंटमे पोस्ट कक रड फागनके सेर कक । विशेष  
ज्ञानकारीक लेन ggajendra@videha.com पर संपर्क  
कक । ) (Use Firefox 4.0

(from [WWW.MOZILLACOM](http://WWW.MOZILLACOM)) / Opera / Safari /  
Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google  
Chrome for best view of 'Videha' Maithili  
e-journal at <http://www.videha.co.in/> .)

Go to the link below for download of old  
issues of VIDEHA Maithili e magazine in  
.pdf format and Maithili Audio / Video /  
Book / paintings / photo files . बिदेहक प्रवास अंक  
आ ऑडियो / रीडियो / पोथी / चित्रकला / फोटो सभक फागन  
सभ (उच्चारण, रीड स्वयं साव आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड  
कवरॉक हेतु नीचाँक लिंक पर जाई ।

### VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी करि, नाष्टककार आ  
धर्मशास्त्री विद्यापतिक स्थाप्ता । भारत आ लगानक माष्टमे  
पसवण मिथिलाक धवती प्रोटीन कानहिँ महान प्रकय ओ महिना



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

गान्धी

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकय ओ महिला  
लोकनिक छि मिथिला बने मे देखु ।



लौरी-शंकवक पानरंशे कानक मुर्ति, एहिमे  
मिथिलाकबमे (१२०० रर्य पुरक) अभिलेख अकित अछि ।  
मिथिलाक भावत आ लगानक माष्टिमे पसबन एहि तबहक अग्र्या  
प्राप्ति आ नर स्थाप, छि, अभिलेख आ मुर्तिकनक हेतु  
देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अग्र्या  
संगति बिदेहक सर्त-गजल आ नृज सरिस आ मिथिला, मैथिल आ  
मैथिलीसँ सम्बन्धित रेखांश सतक संग्रह संकलनक लेन  
देखु बिदेह सूचना सर्क अग्र्या

बिदेह ज्ञानरुतक डिस्कमन होबसपार जाड ।

"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरुत) पब  
जाड ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ए रैव मुन प्रकाश(२०१२) साहित्य अकादेमी, दिल्लीक जेन अहाँक  
नखबिमे कोन मुन मैथिली पोथी उपहास अछि ?

Thank you for voting !

श्री राजदेव मण्डलक “अर्थेवा” (कविता-संग्रह) 12.71%

श्री रोजन ठाकुरक “रौंछीक अपमान आ जीवनदेरी”(दूधौ नष्टक)  
10.77%

श्रीमती आशा मिश्रक “उच्छा” (उपन्यास) 6.35%

श्रीमती गंगा साक “अव्युत्ति” (कथा संग्रह) 4.7%

श्री उदय नावाण मिह “नटकेत”क “सा एन्ट्रीया प्ररिने  
(नष्टक) 5.25%

श्री सुभाष चन्द्र यादवक “रौंछीक रिंगडित” (कथा-संग्रह)  
4.97%

श्रीमती रीणा कर्ण- भारणाक अहिर्गजव (कविता संग्रह)  
5.25%

श्रीमती शैलजिका रमिक “किन्तु-किन्तु जीवण (आमेकथा)  
8.56%

श्रीमती रिता बाणीक “भाग रौ आ रौनचन्द्रा” (दूधौ नष्टक)  
6.63%

श्री महाप्रकाश-संग समय के (कविता संग्रह) 5.52%



श्री ताराबन्ध रियोगी- प्रलय बहन् (कविता-संग्रह) 4.97 %

श्री महेश्वर मर्णियाक “डूतना घेन” (नष्टक) 9.67 %

श्रीमती नीता साक “देशे-कान” (कथा-संग्रह) 5.52 %

श्री मियाबाय सा “सबस” क थोड़ आनि थोड़ पाणि (गजल संग्रह) 7.18 %

Other : 1.93 %

अ रैव हरा प्रवक्ता(२०१२) [महिल अकादेमी, दिल्ली] क लेख अहाँक  
बज्रबिमे कोष कोष लेखक उपहास छथि ?

Thank you for voting !

श्रीमती ज्ञाति स्मृति टोषवीक “अर्चि” (कविता संग्रह)  
27.71 %

श्री रिनीत उपेनक “हम प्रेक्षित छी” (कविता संग्रह) 7.83 %

श्रीमती कामिनीक “समयसँ सम्राट कलेत”, (कविता संग्रह)  
6.02 %

श्री प्रदीप काष्ठिक “रिचदन्ती रक्ता कानक बति” (कविता संग्रह) 4.22 %



श्री आशीय अन्तिहावक "अन्तिहाव आथव" (गज्जन् सङ्ग्रह)  
21.69 %

श्री अक्काभ सौवभक्त "एतल्लै ठा नहि" (करिता सङ्ग्रह)  
6.02 %

श्री दिगीग क्काव सा "कुष्ठन"क जगल्ले बहल्लै (करिता सङ्ग्रह)  
7.23 %

श्री आदि यागारवक "भोथव पैमिनसँ निथन" (कथा सङ्ग्रह)  
6.02 %

श्री उमेशे मल्लनक "निस्तुकी" (करिता सङ्ग्रह) 11.45 %

Other : 1.81 %

ए लेव अन्नराद प्रवक्ताव (२०१२) [साहित अकादेमी, दिल्ली]क लेल  
अहक नञ्जविमे के उग्राङ्ग छथि ?

Thank you for voting !

श्री नरेशे क्काव रिकन "समाति" (मवाठी उग्राङ्ग श्री रिष्टु  
सथावास थास्तकव) 33.33 %



श्री महेश्वर बाबायण बाबा "कार्मेनीन" (कौकशी उपायस श्री  
दायामदव गोरजो) 12.04 %

श्री देवरेन्द्र ना "अवतार" (रौश्या उपायस श्री दिव्यान्द् पानित)  
12.04 %

श्रीमती मेणका मल्लिक "देशे श्री अथ करिता सत" (लपानीक  
अवतारद गुन- वेमिका थापा) 16.67 %

श्री प्रशुत कमाव कथप श्रीमती मेमिरौला- मैथिली गीतगोरिन्द  
( जयदेव संस्कृत) 13.89 %

श्री बाबाबायण सिंह "मल्लिक" (श्री तकरी शिरनेकर पत्रिक  
मनयानी उपायस) 11.11 %

Other : 0.93 %

लेखनो प्रवक्तव-समग्र योगदान २०१२-१३ : समानांतर साहित्य  
अकादमी, दिल्ली

Thank you for voting !





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

श्री राजकमल नान दास 50%

श्री डा. अमरेश्वर 28.72%

श्री लक्ष्मण सिंह 19.15%

Other : 2.13%

## 1.संपादकीय

१

राजकमल टोषरी: मोलाग्रह (सुभाष चन्द्र यादव) जे सहित  
अकादेमी द्वारा बाबदेर मा श्री मोहन भावदाजक प्रपास  
प्रकाशित ले भ२ सकन।

[https://docs.google.com/a/videha.com/viewer?  
a=v&pid=sites&srcid=dmlkZWVhLmNvbXx2aVRIa  
GEtcG90aG8Z3g6NDNiMmVhYThlOTNiMDA5Zg](https://docs.google.com/a/videha.com/viewer?a=v&pid=sites&srcid=dmlkZWVhLmNvbXx2aVRIaGEtcG90aG8Z3g6NDNiMmVhYThlOTNiMDA5Zg)

- राजकमल टोषरी: मोलाग्रह (सुभाष चन्द्र यादव)  
download  
link [https://sites.google.com/a/videha.com/videha-  
potahi/Home/Rajkamal\\_Mbnograph.pdf?atredirects=0&d=1](https://sites.google.com/a/videha.com/videha-potahi/Home/Rajkamal_Mbnograph.pdf?atredirects=0&d=1)



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गङ्गेशगुप्त

[https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot hi /Home/Raj kamal \\_Mnograph.pdf?att r edi r ect s =0&d=1](https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot hi /Home/Raj kamal _Mnograph.pdf?att r edi r ect s =0&d=1)

dbb13891-a-96a2f0ab-s-

sites.google.egr ouns.com

September 11 at 11:28pm · Like · 1 · Remove  
Pr evi ew



**Gangesh Gunjan** बाजकमान जी (बिहारी)क प्रकवा काण  
मे पडन तं डन, मे कतोक रर्थ भ गेलै आरौ। ह्दा  
मे एहन ककग डैक मे अहीक एहि जेम्स बुकिया समाद मे  
स्पर्ध भेलया। तेँ एकव  
धन्यवाद अही केँ दैत छी गजेंद्र जी। ... ओना रात्रिक तं अ  
जे सम्पूर्ण  
पठरौ मं पहिल मोन "रिवज" भ गेल। ले पठि भेल आगाँ  
। नीक केलेहोले लेष्ट पव द  
क। समकालीन आ आगत पीढ़ी सेहो बुझओ अ कावी-कथा।  
हमवा मन लोकक रिडयेंना देखु  
जे पूवा प्रकवा अपन अग्रज- मित्र- अग्रज मं जूडन अछि।  
मे एहन ऐतिहासिक दृष्टिणा  
भ गेल अछि। उतुवदागी राजिगत हम कतहू मं ले। ह्दा  
साहित्यिक पीढ़ीक  
लैतिकता मं "अपवाद रौध" सहरी लेन अतिशेष्ट छी। उगाय ?  
समस्त,



11 सितम्बर 2012 11:26 pm को, Gajendra Thakur <  
Thursday at 2:13pm via . Unlike . 4

**Gajendra Thakur** गर्गेश प्रज्जल जीक हिन्यात प्रशंसनीय  
अछि । जूँ सृष्टिस-को केव विरोध मुकसँ भेल बहिरै तँ  
परिवर्तित भेल बहिरै, सए अछि उपाय ।

२

साहित्य अकादेमीसँ सम्मानक गद लेल कानाराज्यावी (बैलेक  
मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट  
साहित्य अकादेमी द्वितीय मैथिली सम्मानक दूना लेल जे सन्ध्या  
सभ निर्धारित अछि ओकर नाम अछि:- विद्यापति मेरा सन्ध्या,  
दवडंगा; सट्टि रौनगाथ टोपरी “रौजू” आ अध्यात्म- ग. चन्द्रनाथ  
मिश्र अमर । अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दवडंगा;  
सट्टि डा. गणपति मिश्र , अध्यात्म बहुरि न. जयमन्त मिश्र ।  
चेतना समिति, पटना, सट्टि श्री विरेकाशन्द ठाकुर, अध्यात्म  
श्रीमति प्रमिता सा । वरुण मधुसूदन कोला सन्ध्या, समुद्रतः  
रतमान अध्यात्म श्री हेतुकव सा । किशोरीकाश मिश्र मिथिला  
सांस्कृतिक परिषद (जे सन्ध्या विद्यापतिके पाग पहिवा कऽ हुनका  
बौद्ध धर्म कवरीक कष्ट लेल), रतमान अध्यात्म श्री  
सुबेन्द्र नावायण सा आ सट्टि गंगाधर सा । पंचायन मिश्र  
अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, गनारवाद, आ मैथिली  
लोक साहित्य परिषद, कोनकाता, समुद्रतः रतमान अध्यात्म-



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अस्मिन् निह । ए मे सँ किछ सँज्ञाक नाम आ रतिगान अथाक्ष  
आदिमे परिवर्तन समुद्र अछि ।

ए मे सँ अधिकतम सँज्ञा कागजी अछि रा साहित्यिक ले  
बाजलैतिक अछि आ जातिवाद, फेडरवाद आ आधुनिक आधुनिक  
संचालित अछि ।

३

सबसँ ठीक पञ्चाति गामसँ नर क२ देशे भूमिमे दोबस हरा  
उठन । दूदा हरोक कथिक सीमा तँ भिन्न-भिन्न अछि, कतो  
लेत रना भूमिमे अगला बस चर्छेत अछि, तँ कतो सद्गदमे  
जराव उठैत अछि, कतो गहाडसँ ठकवा या तँ मेघे दिन  
उछा जागत अछि रा पञ्चवराहि तकि-तकि पड ।गत  
अछि । कतो समतल भूमिमे गाढ-रिबीड उछाडेत तँ कतो  
सरोवरक हनगरी, तँ कतो मन्द गतिक सुहारण हरा मेहो दैत  
अछि । अरसवक नाभ जेकरा जते तेठैक चाहिये से ले  
तेठै पोले । जँ से ले पेलक तँ उद्यागिक फेडरक अपेक्षा  
प्रति फेडर किअ पडुआ गेल । तनहि तमसगव राजि  
दिअ जे महावायु कथिक उद्यागिक फेडरमे अगुआ गेल आ  
रिहाव पडुआ गेल, अ तमसगव राजन भेल । दूदा महावायु  
रा कथिकक उद्यागकेँ देखे छि तँ अहो देखए पडत जे  
उद्याग जमीनगव जमीनगव दमा की छै । की अ रात मुठ  
जे रिहावक अपेक्षा उद्यागक किमलकेँ आमेहत्याक लौरत  
छह । तँ देशेक सब बाज्यक अगल-अगल समस्या छै ।

20



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अगना-अगना ठगसँ देखै पड़ै । हृदा की अ उचित ले जे  
रिहायो मरतत भावतक अग छी, एककपता हेराक छल्लि ।  
आग रिहाय ले, आला-आला बाज्यकेँ रिहायसँ रैनी समस्या  
छे जेकव समाधान जकवी अछि । भवहि रैगान, केवन जकाँ  
ले, हृदा आला-आल बाज्यमे देखोसि तँ नगरें कएन ।  
मिथिलाछला ए दोकस हरसँ अलग ले बहन । पुरवा दवर्तगा  
जिनाक मधुर्षी सरडिरीजमे, जे अखन जिना अछि, जमीनक  
भवगुव एककपता अछि, हृदा खेत तँ तखन खेत जखन  
ओका भवगुव पाणि भेटै । उचित रीखा, उचित खादक संग  
मशीन लाल फूमि किमान सेहो भेटै । दम रैथि पुरहिँ कोसी  
नहर योजनाक पाछु प्रगतिशील किमानो आ बुद्धिजीवियो उठि  
क२ ठाठ बहनाह, हृदा कियो सुनिहाव ले । जँ सुनोना गेल  
तँ काजक तेहेन कप धेनक जे पटाम रैथिमे योजना ले  
पुति भ२ सकन अछि । धाव-धुवक संग एहेन नापवराही भेल  
जे मिथिलाछलक अघासँ रैनी जमीन माथिसँ राब रैनि गेल अछि ।  
ओना धाव रैहूतो अछि, जगमे किछ एहना अछि जे हज्जावो  
रैथिसँ अगन दिना ले रैदनक, हृदा कोसी-कमाना-रैनाकेँ तँ  
भौतो खेना-खेना, आ गीतो गारि-गारि तते सुआगत  
नोगत बहन अछि जे अघासँ रैनी जमीनकेँ कमजोब माल  
शेक्तिहीन रैना देनक अछि । राब केशा उगजाउं भूमि रैगत,  
छेठ सरान ले अछि । बाजनीतिक दशा एहेन जे  
हृदयकथिआग्येक पाछु पछि सब अगलमे ओसवअन अछि ।  
मिथिलाछलक कोना समस्या मिथिलक ले अगितु देशक छी ।  
समस्याक समाधान केशा एत तेहीमे सब ओसवा-ओसवा  
बाजनीति क२ बहना अछि । आठ रैजे रातिकेँ सितावपव  
सुनताह जे “परन प्रिय पारन मिथिला देने । ”



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

झलिना रैवमा देमैक अंग छी तहिना तँ देमो रैवमाक अंग  
छिई । तँए देमैक दावेन हरा रैवमोमे रहन । सांगकिमक  
उतव-रागलिग जकाँ गामक रागलिग शुक भेल । एक मंग  
वंग-रिवंगक हराक प्रेममे भेल । अछ्छा रैवदी हूअ नागन ।  
किछ ब्रती गामोसँ उठैए तँ किछ राहोसँ पसहि-पसहि आरैए  
नागन ।

अखन धरि गाममे जाति-समप्रदायक हरा ले आएन छन ।  
झलिना कहियो मावि-दंगा हूअ ओ या तँ आन गामसँ हूअ, रा  
एक-छैन दोसब छैनक रीट । रीमो जातिसँ दुपबरना गाम  
रैवमा । पारनि-तिहावमे गजगष्ट होएते आएन अछि । ह्रदा  
तैयो तँ छनिते बहले । गजगष्टे केना ल होई, अवासँ रैसी  
सुत्रीगण भादरक बरि कबिते छथि । ह्रदा पारनिक रिवाला  
भिन्न-भिन्न । कियो दूनु माँस निखड करै छथि, तँ कियो एक  
सम् । कियो लालछी पवहेज करै छथि, तँ कियो अन्न छोर्डा  
फलेछी मेरन करै छथि । तहिना घड़ी पारनि । एक तँ मानक  
दू-तीन मास, माओन, आमीन छेतमे होए तँ दोसब रूधरावि,  
सोमरावि आ शुक्ररावि सेहो होए ।

करौव पथक प्ररचनकर्ता आरि-आरि माया-जानक निषदा करैत  
आ मेरक सतकेँ छेतैरौ करैत छथि । मेरको वंग-रिवंगक ।  
तह्रमे रैवमामे आलो गजगष्ट । एक दिस सए घबक जँला  
रैसती छैन, छैन ए दुआले ले जे गोठिया ले फुँटमाड । अछि,  
मे एकोछी रैवमार ले । ओना समाजक पथनिवपेक्षक थियामसँ  
नीके अछि । तहिना दोसब दिस दलितोक छैन अछि । थान-  
पारिसँ न२ क२ अकाम धरिक शिकारी । रीटक जे जाति अछि  
ओ धार्मिक पथ (सामप्रदायिक) सँ जुड़न अछि । जातिक तीव्र



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रैयार-साकठ केव रीट रिराद चलेत अछि तँ एक जातिक  
दोसबाक रीट । करीब पथक रीट समसोता भेल । समसोता  
भेल जे श्रद्ध-कर्मक पढाति, सत्सनावागण पुजाक पढाति करीब  
पथी भणडावा सेहो हुअ, से हुअ नागन । एक दिस दोसब  
सम्प्रदायक रिराधमे रैजरो कलेत आ दोसब दिस मंग गिनि  
बहरो कलेत अछि । तहियो करीब पथ मजगुज भेल, अधिक  
समर्थक अछि, आगयो अछि । तग रीट एकठा घटना मडन  
(धामक) जातिमे हँसन । द्वागथ सुले दामक प्रभार, मडला-  
झुथियो (धामक-मनाह) आ रैवेगयोमे बहनि । बयोतक चना-  
चनती गाममे कम । नलोबमे बुद्धी दाम बयोतक महथ रैनि  
गेनाह । दियानिक नष्टमे रैवमा आरि अगल दियामे एक  
गोठेकेँ कठी द२ मेरक रैना जेननि । दियामे मेरक रैनि  
जेननि । ओना साममे एक रैव सुलेदाम माम दिसक जेन एरो  
कलेत भनाह द्वा रीटमे जँ कतो भणडावा भेल तँ दम द२  
रैजागयो जेन जागत भनि ।

नलोबरनाक चेनाकेँ अगल चेना (बयोतमे करीब पथी) रैना  
जेननि । एक दिस रैयार रैयार (साकठ) केँ चेतेरैतो तँ दोसब  
दिस ब्रुठे-पाठ चलेत । मेरक ब्रुठेनामे नलोबरना बुद्धी दाम  
हबमाण जावी जेननि- “जलिना ओकव (घुवण दामक मेरक)  
काणमे मत्रि देनिअ आ ओ दोसब मत्रि न२ जेनक तहिना  
कडू तेन ठहका क२ ओकवा काणमे देलेँ आ ओग मंग नागन  
मत्रि निकालि देलेँ ।”

उकापव चेष्ट पाइन । द्वागथरेना जुरार देनथि जे हुकव  
(बुद्धी दामक) पथे कमजोव भनि । ओगमे जुरारकेँ पोछ  
गति-झुक्ति हेते । पहिले रवदान क२ जोथू । जँ से ले



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यपद्य

कवताह तँ मेरकक काणमे तेन ठारि देताह, मे ले  
चनतनि । कम-कम हूँ नागन । गायक दूध-दबईज्जाक  
झूझ झूझा यएह रैनि गेन । समाजक किछ लोक थूनी जे  
तल धावक-धावक रीच नड १७ अडि तँ दोसब दिस जाति-  
पातिगव छै पडि गेन डन । कावण जे जहिया कमजोर  
पार्श्वक बैनी, धाक छोड सडकपव अलैत अडि, तहिया समाजक  
रीच जे करीब पथ माननिहार डनाह, हुनका सरहक रीच  
थेलाग-पीलागमे एककपता आरि गेन डले । करीब पथीमे  
तलडावाक महत्त्वपूर्ण आधार छै । जहिया जगन्नाथमे अष्टका  
पवसाद होग छै तग सदृश करीब पथक रीच एक-दोसबाक  
रीच पवसादीक चननि अडि ।

करीब पथ-बसोत दूध पथक तला-तलीमे गाम रैछै नागन ।  
तीन-चारि छुकड़िमे गाम रैछै गेन । करीब पथ (समृद्धि) म  
कमजोर संगठन बसोत समृद्धिदायक डन । एक गाम दू गाम  
कतेको गायक करीब पथरैना सब मैदानमे उतलैक तैयारी  
कवए नगनाह । रैबमाक रैगलैक गाम जगदव अडि । ओना  
पलापञ्चामे जगदव-रैबमाक नाउसँ जानन जागत अडि ।  
जगदव छोछैछै गाम अडि । भूमिहार खेती आ बाजगुत  
रैहसँथक अडि । ओना रैबली, यादव, तेली, दूधध, धूमिया,  
सोनाव, मल्लह मेहो अडि झूझा अन्तर्गतक । जगदवमे नथूनी  
मिहक सबदारी डननि, आ अन्तर्गत भूमिहार हुनकव नछैत  
डननि । जगसँ पचकोसीमे सगड़ १-समष्टिक कारोबार चलेत  
डननि । जगदवक नथूनी मिह मेहो करीब पथी । ओ लोहिया  
पञ्चीक बाजगुते महात्माक मेरक । ओ सँथामे कम झूझा  
शक्तिशाली बहथि । समृद्धिदायक कणमे जगदव कतेको  
छुकड़िमे रैछै । बाजगुत करीब पथी दिस तँ भूमिहार बाधा-





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

प्रयाण सम्प्रदाय दिस, यादर-रैवरी, दूमाध करीव पथ दिस । तँ  
धुनियाँ गमनाय दिस । गमनाह तँ सहजहि थान-गामिये बहनिहाव  
झी तँए रैवरी सम्प्रदायमे किअए जाएत । करीव पथीक  
समसंकेत हवा सुनि जाहियागङ्गीरना महात्मा जगदबसे आरि क२  
आमन नगा देननि आ आन-आन मेरकास सतकेँ अरौले मेहो  
कहि देननि । महाभावत नड १७ जकाँ रैवरीक धवती सन-  
सन कबए जागल ।

शोम्वार्थक समथ निर्धारित भेल । मेला जकाँ गाम भ२ छेल ।  
परागङ्गीक आरि रैवरी दिस ठेकठेकी नगोल, रुदा उटित भेल,  
सही भेल नगोलरैवरी रुदी दाम कनी पाछु हष्ट मारि-दंगाम गामकेँ  
रैवा लेननि ।

जगदीशे प्रसाद मन्दन जीक परिवार आलो सतवगी । एक दिस  
समाजक सभ पारनि, देरमथानसँ जूझत तँ पितार्जी सुले दामक  
पिताक मेरक (करीव पथमे जेकवा मेरक कहल जा छै ओकरे  
दोसब ठाम चेना कहल जा छै । ) जगदीशे प्रसाद मन्दन  
जीक पितार्जीक करीव पथी रिटावधवाक प्रभार । मास-मास  
दिस दवरैज्जापव सतसंग-भजन चलिने बहेत दुनहि । तेसब  
दिस जगदीशे प्रसाद मन्दन जीक माथ, समसुतीपव जिनाक सालो-  
पठनियाँ रैनाक मेरक । नहिलेसँ सीथ भ२ आधन बहनि, हुनक  
तेसले सम्प्रदाय, गुरु रैवरी रैवरीत आ साकठो चेना मत्रि  
द२ रैवरीत, मानमे एक रैव घुमेत-घामेत हुनो आरि क२  
पान-सात दिस बहेत दुनह । औलस दुनह, अगल हाथे  
भोजन रैवरी दुनह ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रैबसा दुर्गमिथानमे रैबि-प्रदान ले हेरौक यएह काबो डन जे  
एक स्थानक समाज रैबिार समुदायसँ जुड़न तँ दोसब स्थानमे  
नथुनी मिहक रटिम्बर बहनि तँए से ले भेल ।

जहिया दृष्टिगव चढन रैबिमे चाँव-गामि देना पढाति  
मडसठको, मडरैमनु, गड-थीरो थिचडि यो आ सुन्दर भात  
सेहो रैलैत अछि तहिया रैबतन देन चाँव-गामि जकाँ रैबसाक  
दुर्गा-पुजा एक संग कतेको रसतु रैलौनक । अथन धरि  
गनाकाये दुर्गा-पुजा एक जातिक रा महनथानाक पुजा डन  
उगपव छै पड़न । संग अहो छै पड़न जे सत जातिक  
रुमाविक पहुँचक संग साँम सेहो पहुँचोन (दीप जेसि साँम देर)  
जेन । जेकर प्रचार आला-आन गाममे भेल । दोसब दिन  
रैबि प्रदान ले हएँ सेहो एकठाँ बग पकड़नक । यएह  
परिस्थिति रैबसा दुर्गापुजाकेँ बाजनीतिक कग पकड़ौनक ।

दुनु स्थानक रीच एकठाँ जरेबदस्त थामि रैलौनक । एक स्थान  
जेहो समाजक रैबन बहन तँ दोसब सतासँ जुड़ि जेन । सतासँ  
जुड़ि काबो भेल जे मधेयबक मधेयब रैलौक प्रहृत ।  
अष्टीगम पंचायतक रैलौक मधेयब । गुना गिना-जुना क२  
जातिक आधार ले बाजनीतिक आधार ठाठ भेल । साँस  
मधेयबमे कते जातिक हथिया डन । सिर्फ हसनमान हथिया  
हठन बहन । ले तँ सरहक समर्थन बहनि । काबो डन जे  
जाति कोलो किएक ले हथि हथि हथि हथि हथि हथि हथि  
डन । तँसँ अहिसो एकछान डन । दुनु हथिबक प्रयोग उ  
सत केननि । जतए जातिक गव नहनि ततए जातिक आ  
जतए से ले ततए बाजनीतिक बग चढैथि । जतए चढाक  
कग बाजगाव दिन रैठन । रैलौक अहिस उठि क२ सेहो दुर्गा



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सुथान पङ्क्ति नगन । जग दिस मेला होग तग दिस या त  
कोला नर योजनाक आरेदन निखए पङ्क्ति जागत रा कोला  
रैरावा कवए । ओना दुर्गापूजाक पहिन नात गौआकेँ ग भेन  
जे किछ गोष्टे छोडि अधिकशि परिवारवमे बृहन्नरम्था पेशिन  
भेष्ट गेन । रैलोकक सतम छोष्ट पंचायत रेवना आ सतम  
रेसी गोष्टेकेँ पहिन रेव बृहन्न पेशिन भेष्टन ।

रुद्रा तीतर-तीतर जखनदम्त प्रतिफिया भेन । किछ गोष्टे  
रैलोक प्रसाद दुखले कमि बहनाह त किछ गोष्टे फज्जमति सुनि  
गाम-गाम चर्क रुद्रा रैलन । गामक बाजनीतिमे सेहो मोड़  
आएन । मोड़ अरैक कावण भेन जे गामक तीतर जे  
जातिक रैलरैष्ट अछि ओहो कते बगक अछि । ओना दुर्गापूजामे  
रैलन रैष्ट गेन बहनि । दुनु सुथानकेँ हुनकव समर्थन बहनि ।  
एक दिस पंडित ब्याकवाचार्य उदित नारायण ना पंडित भेनाह  
त दोसर दिस रैदिक, ब्याकवाचार्य पंडित कामेश्वर ना  
भेनाह । १९७२ ग.क रुथिया (पंचायत रुथिया) दुनारमे रैलन  
रुथिया हावरौ केनाह आ जीतरौ केनाह । रैलन मिश्र, जिषका  
अक्षरक रौध ले बहनि रुद्रा गणपदवीस काज करैक चलेत  
गामे ले अचनक लताक श्रेणीमे डुनाह । अगल त रुथिया ले  
रैलनाह रुद्रा अपन समर्थक रुथिया बहनि । हावना उतव  
बाजनीतिमे पडाव खेननि । सबसठिक दुनारमे काँग्रसकेँ  
जखनदम्त धक्का नगन बहए । मधेश्वर रैलोकक लता जाणकी  
राँव (श्री जाणकीनन्दन सिंह) डुनाह, जे रिवायक बहि  
प्रतिनिधित्व कइ चुकन डुनाह । ओ छुष्टि कइ महामाया राँवक संग  
जखनदम्त दनमे आरि चुकन डुनाह । जे नात नेशिनिष्ट  
पार्टीकेँ भेष्टन आ रासुदेर राँव (श्री रासुदेर प्रसाद महतो)  
एम.एम.ए. भेनाह ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जार्जि तक रैगारैष्टि- रैगमारक ज़ाँझा पाँट खण्डमे रिताजित  
अछि । उला छुनारक नाँउगव एक बहे छन दूदा सामाजिक  
ब्यवहारमे दूरी रैगन छननि । कमहानिस्ट पार्टी जे १९७२ ई.मे  
पहिल रैगन छन उगमे ज़ाँझा सभ ठुँष्ट कमहानिस्ट पार्टी रैगन  
बहनि । पाँटो खण्डक अलग-अलग सामाजिकता छननि ।  
कथो-कटुमेती आ खाला-पीनमे दूरी छननि । रैवग, कोगव,  
कियोठमे एककपता छन । एककपता ए जे खेनाग-पीनाग  
पारनि-तिहाव एकवगाह छननि । धावक दु खण्डमे रिताजित  
छन, अखला अछि । दूनुक रीटक दूरी अछि अछि । तेकव  
कावा अछि जे रैहूत पहिलेसँ धावक खरामियो करैत आएन  
अछि आ किसानियो जिनगी रैगा ज़ीरैत आएन अछि । तल्ला  
मल्लाहो रिताजित अछि । दूसहव परिवार जेवगव अछि दूदा  
उकवामे सेहो फुँटफुँट होगते बहे छै । तेकव कावा होग  
छै जे कोला तोज-काजमे सभकेँ सभ ले खुआ पलैत अछि  
जगसँ अगलामे रिताजित बहे ।

मधेखुव रैलोकसँ न२ क२ गाम धरिक छेँसँ रैछु मित्रि छेँस  
गोनाह । खुवला सगी सभ जे बहनि उ सभ सन्यास न२  
जेननि । सिङ्गातक नाँउगव अगल रौष्ट अर्पित केल बहनाह ।  
रैछु मित्रि रैग प्रभावित भ२ जेननि । जगसँ यत्र-कत्र  
रौजए नगनाह । नतीजा जेननि जे पोखरिमे डूरा-डूरा एत  
दूकियोनकनि जे पीठीमे ज़रैवदसूत या भ२ जेननि ।  
दवर्तगामे अँगलेशेन जेननि तखन या ठीक जेननि ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सन् सैतानीस...

भावतक स्वतंत्र विचारिक मण्डा हलवा बहन छन ।

झुदा कम्युनिस्ट पार्टीक मागनाग छन जे भावत स्वतंत्र ले भेन  
अछि ।

अमली स्वतंत्रता भेटैरै रौकी छै...

मिथिलाक एकठा गाय...

जग्य भेन बहए एकठा रँचाक.. ओही रँथ ...

ओग स्वतंत्र रा स्वतंत्र ले भावतमे...

पिताक मृत... गवारी... केस मोकदया...

रचितक लेन संघर्षमे भेटैले स्वतंत्र भावतक रा स्वतंत्र ले भेन  
भावतक जेन....

आग रैबामे पाँच-दस रीघास पौघ जेत ककरो ले..

ओग गामे जरीत अछि आगयो किसानी आमिर्भब संयुति...

प्रवाहितरादगव त्रौलारादक एकछत्र बाज्यक जत२ भेन समाप्ति..

संघर्षक समाप्ति रौद जिणकव लेखन मैथिली साहित्यमे आनि

देनक प्रगर्जागवा...

जगदीश प्रसाद मण्डन- एकठा रौयोआहने... गजेन्द्र ठाकुर द्वारा  
(अध्वरतते...)

ए बचनगव अणन मंतर [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब  
पठाउ ।

बिंदु र बिदे *Videha बिदेह* [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha bt Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अंथय मैथिली पाक्षिक अ पत्रिका बिदेह*



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गजेंद्र ठाकुर



गजेंद्र ठाकुर

[gajendra@videha.com](mailto:gajendra@videha.com)

[http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post\\_3709.html](http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html)

र.स.



र.स. श्रीराम-गणिगद्यक कारप्रतिक



आलोचनामेक अध्याय पुस्तकक लोकार्पण  
कायत- कतः जा कहव छी हम।। नईक:- सिद्धि तै



२.२.१. पुष्पा मल्ल- मणिपद्म जयन्तीपर्व दिवसीय  
विधिवानुष्ठान द्वारा करि शोभा ९ सितम्बर २०१२ कै सम्पन्न



२. नरेंद्र कुमार सा-नीतिशेखर मोहंता मोदीक  
समर्पण/ ठाकुर मोहंता से गर्मायित विवाहक बाजरीति/ ३  
अर्द्धशतककै राष्ट्रपतिक विवाह दोवा दवर्तगा, मोहंता जेताह  
दुखडी/ जापान आ कनाडाक दोवा पर्व जयताह मोदी/ मैथिल  
ब्रह्मणकै किशोर नमोदक बाजरी कति कयनमि मोहंता स  
तेह/ विवाहमे निवेशक गङ्गा जलमोक वैभवैक/ मधुरी सहित  
तीन जगह पर्व रगत पीपा पुन/ पंचायत प्रतिनिधि



२.३. शिरकुमार सा 'एवम्'- मैथिली उपन्यास  
साहित्यक विकासमे हविमोहन साक योगदान



२.४. जगन्नाथे जगन्नाथ गङ्गा- किछु बिहारी कथा



२.५. बिहारी गङ्गा- बिहारी गङ्गा



२.६. बिहारी गङ्गा- बिहारी गङ्गा





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



२.१.१. उमा शंकर-लोक-रहित-कथा-



रीम ठोका २. गेवुधन शंकर-मैथिली महिला आ



खिदी ३. केवाम दास-मैथिली लोक कथा संग्रह 'खिदी'



२.५.५. प्रदीप छी  
गंगेश

गुलाब साई चन्दन कविता साक



१. अवधित शंकर-मैथिली कविता



आलोचनात्मक अध्ययन पुस्तक लेखिका-  
कविता- कविता आ कविता छी लय! / नोट:- निम्नलिखित छी



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१

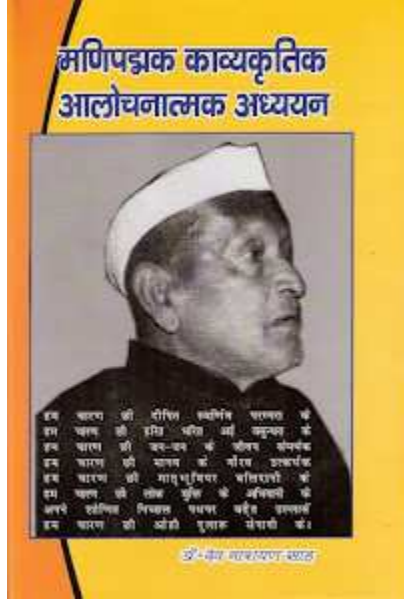


श्रवणराम श्रीराज

मणिपद्म काराप्रतिक आलोचनामक अध्यायन प्रस्तुतक लोकार्ग

- मणिपद्म मैथिली साहित्यक पहिल जामुनी उपासकाव बहति
- मणिपद्म मिथिला क्षेत्रक लोकदेवताके पहिल लेख साहित्यिक  
स्वरूप प्रदान केननि
- मैथिलीक गंभीर कविक कगमे सेहो सवा कएन जागत  
हुनि मणिपद्म





डा. ज्ञानेश्वर रमा मणिपद्म पौराणिक संस्कृतिक लोकगाथा  
अथवा कथाक रूपमे बचनक संवचनामे अगल ज्ञानेश्वरक  
अधिकारी भाग नगरेन । पञ्चमसूत्रक- लौकिक मणिपद्म,  
दीनाभदी, राजा मनलेश, दुनवा दयान, लैका रंजितावा, कृष्णा  
मानिष, मन्त्ररंजि, चूचकमन गलादि पात्र जे अलादि कानसँ लोक  
कथामे बचन-रंजन बहति, तेँ साहित्यक रूप प्रदान कर लोक  
साहित्यक मैथिली साहित्य मागवक द्वारा आम जन धरि पहुँचैत ।  
लोक गाथा हमर पौराणिक संस्कृतिक आगक चिह्नानी छी ।  
मैथिली साहित्य त्रैगाव त्रिक, आधुनिक विषयकें आधार मणि ७  
कतेको उपासक बचन लेन । दर्जनसँ उपासक लिखक कथा,  
नाटक, एककी, महाकाव्य, झुञ्झक काव्य आ निरर्थक मेहो छै ।  
गत बुधवार १२ सितम्बर २०१२ केँ सहस्रमासे मणिपद्मक  
काराण्टिक आलोचनामेक अध्याय विषयक पुस्तकक लोकार्पण



गदहूँमिह

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

साहित्य अकादमी सन्मार्गसँ प्रवक्तृत साहित्यकाव प्रो. मायाशन्द मिश्र  
द्वारा भेल । कार्यक्रमक अध्यापकता मैथिली साहित्यकाव डा. महेश्वर  
मा लेलनि । अथवा अतिथि डा. बाजबाबु प्रसाद, मिश्र अतिथि  
डा. शैलेश्वर कुमार मा, डा. नमिनेश मिश्र, डा. विमलेश्वर मिश्रका,  
डा. के. एस. ओसा, डा. ले. सिंह आदि बहनि ।

कार्यक्रमक शुभारंभ प्रस्तुतक लेखक डा. देवनाबाबु माह द्वारा  
आगत अतिथिक स्वागत भाषासँ भेल आ ओ स्वयं लिखित प्रस्तुत  
मणिपद्मक काराप्रतिक आलोचनामेक अध्यापक महेश्वर मिश्रद्वारा  
प्रकाश देलनि । साहित्य अकादमी प्रवक्तृतसँ प्रवक्तृत विद्वान प्रो.

मायाशन्द मिश्र कहलनि जे डा. मणिपद्म रंजित साहित्यकाव  
बहनि । ओ रंजितका कथा, उपाख्यान आ कारा लिखलनि जे  
लोकगाथापत्र आधारित बहए । मैथिली आ मिथिलाक संस्कृतिक  
विकासक लेल समयसँ ओ योगदान दैत बहनि । एहेन  
साहित्यकावक समग्र वचनक आलोचनामेक अध्यापक मिश्र डा.  
देवनाबाबु माह प्रोधापक एस. एस. टी. कालेज महबूबा प्रेमपुरक  
कार्य कए एकटा टिप्पणीय रेललनि । डा. महेश्वर मा कहलनि  
जे अ मात्र संयोग अछि जे साहित्य अकादमीसँ प्रवक्तृत डा.  
मणिपद्मद्वारा डा. देवनाबाबु माह द्वारा लिखित प्रस्तुतक लोकार्पण  
सेहो साहित्य अकादमीसँ प्रवक्तृत साहित्यकाव प्रो. मायाशन्द मिश्रक  
हाथसँ भेल । डा. शैलेश्वर कुमार वचनक गंभीरतापत्र प्रकाश  
दैत कहलनि जे आगत समयमे मैथिली लेखन कला कम भेल  
अछि लेकिन डा. देवनाबाबु माह शोधार्थी छात्रक लेल उपायोगी  
प्रस्तुत लिखि मैथिली साहित्य जगतकेँ भर आगम देलनि अछि ।  
डा. नमिनेश मिश्र प्रस्तुतक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दिस ध्यान  
केन्द्रित कए कहलनि जे मैथिलीमे जसूसी उपाख्यान सरप्रथम  
मणिपद्म लिखलनि ।

ए अरसव पत्र डा. बाजबाबु प्रसाद, डा. बाबूलाल सिंह, डा.  
कुमार मा, डा. दीपक गुप्ता, डा. एस. के. ओसा आ डा. ले.  
सिंह लोकार्पित प्रस्तुतकेँ समीचीन रेललनि आ अपन रिटार बख  
लेलनि ।



२



रुखी कामत

५

## कतऱ जा बहन छी हम !

कतऱ जा बहन छी हम !

कतौ तपि बहन अछि,

कतौ गलि बहन अछि,

कतौ पैसि बहन अछि,

तँ, कतौ ठुँठि बहन अछि आग धवती !

तगा बहन अछि अकवा मल्लखक रैठेत भूथ, जे दिन-प्रतिदिन  
गाढ-रूख काँटि अकवा छत्रहीन रैनरैत अछि । समाजक कबीति  
अकवा गला बहन अछि । अगल रैठौ पब देख अलाटाव अ रैरैस  
तऱ पैसि बहन अछि । देख अ सत रिडय़ैला मा' धवती फ़ादसँ  
गहाड रैनि संकल्प करैत अछि कि सभूँ जहाँक अग रिशान  
छेँछैसँ साँपि अकब सरैलानि केव दी ।

रुदा ओ रुद्ध लै करै जेन मजबूर अछि । जेना आग धवती  
रैरैस लाटाव आ कडीसँ रौनहन देखागत अछि ओहिना हमरा  
समाजमे नावीक स्थिति अछि । आग भाग जग्याद रैनन अछि आ



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

गान्धीनगर

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रौप्य पापक कण जेल अछि । प्राचीन कालसँ जग विस्तारक  
भगवानसँ पहिने जगह गिन अछि

आग ओकब नामो नग सँ घृणाक रौप्य होएत । आग हमरा  
समाजमे सभसँ अधिक नजागज सङ्ग्रह भूक आ शिखाक रीट  
अछि । हम एगो अवमान मनमे रैना अपन रैटामे अछि सँकाव  
आ उँच शिक्षाक अभिवादा जेल भूक नग जाग जी ह्मदा रएह  
भूक हमर आमेसनास केँ ठेस पहुँचलैत हमर रैटक साथ  
मोयाँ करैत अछि । भाग भेट, अतक पारन, अतक परिव्र  
अछि कि सभ रैहिन भाग भेटकेँ सङ्ग्राहित करैत ए मोटेत  
अछि कि ए हमर केरन भाग नग प्रष्टक कण अछि जे हग-  
हग तक हमर आरक आ सनासक बसा कबत । चाहे ओ  
टटेवा ममेवा ह्ममेवा भाग किएक नग ह्मए । पव रएह भाग  
जरेँ अपन रैहिनक रिश्रिस ताव-ताव करैत ओकवा सँगे  
रैनाकोकाव करैत तँ ओकवा की नाम देन जएत ।  
जग देनहव रौप्य जकवा पिता पवमेमेव कहन जागत अछि  
रएह रौप्य अपन जलमान रैटी सँग पाप करैत अछि यएह  
समाजमे ।

आथिब कत२ थडा जी हम कत२ जागले डेग रैद । बहन जी  
एक पनक जेल, मोटमेसँ अति गंद पौर सँ टलि हम अपन ब्रुड  
आ परिव्र समाजक निर्माण क२ सकैत जी ? केरन सादा कागज  
पव कनम दोड़नोरा सिथलसँ सँकाव आ मोट नग रैदलैत  
अछि । अपन जमीव आ अपन आमोक अराज स्वप्न आ कह कि  
रैटी कर्नकक प्रविद्या अछि कि हमर समाज ओकवा कर्नकित करैत  
अछि ।

२

नाटक:- निम्नित रैटी

प्रथम-दृष्ट



**दुवावी-** माय.....रौंरू..... देखियौ, हमर परीक्षाफल  
एन। जगमे हम सबसँ अधिक एक सँ उतीर्ण भेलौ।

**शुभदाय-** एषा किए टिकलैय छः। नलैय जेना कालक मिला  
फाँटि जएत। सब काज बाज जोडि कः झूठ केँ अगोबल  
बै छः कितारैये। आरै ए छिट्टा नः कः डकबल हिलै  
छः। सब तोहब रौपक सबकी छियौ जे तू एषा उमियाग  
डी। ना अणः, आग अकवा दूखामे मोकि दे छि।

**दुवावी-1-** माय, ए एक छूकवा कागज नग, हमर मान भवक  
मेहनत छि, हम नग देरौ।

**शुभदाय-** तू नग देरौली तू आग ए माक तोवा पीठ पव  
छूछ छेतौ।

(शुभदाय माक मात घुमा दुवावी पव रैवमारैत भदा-भदा गाबि  
दैत आ हुनकर हाथसँ एकपत्र नः कः खुन्डी-खन्डी कः दैत  
अछि।)

गठारफेग

## नोसब दृष्टि

**अष्टव-**दुवावी रैछी, दुवावी कतः छलक।

**दुवावी-1-**अरौ डी रौंरू जी।

**अष्टव-** आग तू तोहब परीक्षाफल अरैरौना छैनः, कि भैनः ?  
अछा जा तू अण अक-पत्र लल आरैः। हम तोवा नः एगो  
तोड़या आनलिअ, जकवा देख तू खुनि भः जेरैक। हम  
तोवा नः कनय आनलिअ, आरै जन्दी जा कः हमर उंगल  
लल आरैः।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(दुनारी दुगटाप ओते रैठ दुनु आथि म लाव रैलरैत यः,  
तथल युवदायक एरेशे । )

**युवदाय-**अलीक दुनार अकवा रिंगाडि कः बाथि देनकैए । जेना  
पठि-निथ कः हारा कया कः थिअत रैडका मस्टलेन रैलरै नः  
चनन, के कबते रिंगाह । कतो रिएरैक तँ पहिने दुला मग  
घुमकेतः रैथीकै । कापी-कनम पकड़ । ले ओकिनी करै नः  
मए जेतः, रूजमक कि ले ।

**रैठ-**रैठ, तौहव मायक तँ आदते डः रैजै कः । छोटः,  
तँ कहः की तेनः युनमे ।

(दुनारी लावागन आथिम दुगटाप माय आ रौरु दिस निहावेत  
वहै । )

**युवदाय-**गग सुन, दुखाव पव लोरैवक ठेव, ी जो उठाकः महाव  
पव पाथल आ । आ अकव रौत सुनमे तँ अहिना कहन  
जेमः । रैव एन पठे-निथे रानी । देखे छियौ, आरै तौवा  
के पठरै छौ ।

**रैठ-**अन रैतल छिअ कि । अगला जन्मल आन नछैए  
अहकै । तँग तँ तँ निगुन छी । डागल कहाँकः । तगराण  
तौवा रौमे बथितौ तँ नीक होगत ।  
पछाफेग

**तेसर दृष्ट**





(किड दिन रौद दुवावीक शिक्षकक हुनकर घरपर आगमन ।)

शिक्षक- थुँव.....यौ थुँव..... कतः छी यौ ।

थुँव-माथुँव माथेरै प्रणाम ।

शिक्षक- प्रणाम-प्रणाम ! निअ, आग हम अहाँ कऽ झूठ मीठ  
कले नऽ एलौए ।

थुँव- की थुँगीये ।

शिक्षक- किए, अहाँ कऽ ले बूझल अछि जे अहाँक रौंठी अहि  
गामक संगे अगल जिलोक नाम बौशिल लेलक । आग हमरा घर  
भऽ बहन अछि जे हम दुवावी जेकाँ लेलल डालोक शिक्षक  
छी ।

थुँव-पर दुवावी तँ हमरा किड ले कहलक । हम तँ अ बूने  
छेलौं कि दुवावी रौड परीक्षाये असफल भऽ गेल ।

दुवावी.....रौंठी दुवावी.....

दुवावी- जी रौरूजी !

थुँव-रौंठी, हमरासँ अतेक थुँगीक रौत लेना छुपा कऽ बाधि  
लेलौ ।

दुवावी-रौरूजी, उँ माय हमर अकपलकै.. (कहेत दुवावी कानऽ  
नलौए ।)

शिक्षक-दुवावी, आग तूँ गरम हमरा सतक सब डूँट कऽ  
देनऽ । थुँव ! दुवावीकै सबकाव १० हजार कपैया आ ७८व  
कालेजमे पढिना संगे दु सालक पढे-बहे आ थाए कऽ थर्चा  
सत देत । आ हम शिक्षकगण युनक तबयसँ ३ हजार  
कपैया अहाँ कै देबै जे अहाँ अगल रागमे अतेक सुन्दर हुन  
उंगेलौ, गुले समाजसँ नहि अगल रौंठीकै आगु रौंठलौ । आर  
सत अगल रौंठीकै रौंठी जेकाँ पढेत ।  
पठाएक



## चौथा दृष्ट

(अगण गणेश)

**श्वेत-**आरं कछु रैठी कमाक२ देनक कि ले ! हम एहन दीप  
जनेलौं जकब एकांशि पुने जिनाक लोक देखनक । कि अहाँक  
मन अथला अगनाव य२ ?

**शुनदाय-**हमवा माफ क२ दिअ दुनारी रौनु, हमवा सँ गनती भ२  
गेन, हम अगणठ ले । रूमलौं शिफाक की मोन होगए । जरै  
हम घब सँ निकले छेलौं तँ लोग सब ताना मारी छैन, कहे  
छैन, रैठीकेँ रैठी जकाँ युन भेजलसँ देखै, नाक कठैत ।  
आग जाग छी हम, एहन लोग केँ कहे न२ कि देखियौ, हमवा  
रैठी नाक ले कठौनक रैकि सब डूँट केनक ।

**श्वेत-**अछा चनु, दुनारी आरं दु मान गठे न२ गठना जएत,  
तकब तैयारी कक ।

**शुनदाय-** ह२ दुनारी रौनु, जकब ।

गठान्तेग

## अंतिम दृष्ट

(दु मानक रौनु । )

**श्वेत-**रैठी, आरं आगु कि कबरैहक ? ओव गठरैहक ।

**दुनाव १-**रौनु आगाँ तँ गठरै ह्रदा अहि संगे हम एगो काम  
सेहो कबरै, अगण गाममे प्राठ-शिफा अतिथान शु० कबरै ।

**श्वेत-** ए की होग छै !

**दुनाव १-**रौनु जरै२ तक जडि ले म्रुड होत तँ निक डारि केना



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पणपत । जखतक बाबी शिक्षाक मोनक एहनास ले हएत तरे  
तक कोय अण रैथीले ले गटेत । रौनु हम अण गायक  
सत रैथीले दुनारी रैलेत देखत छै छी ।  
खैब-है रैथी, अहिमे हम अहाँक संग छी ।

अछब-अछब दीप जगत

कक्का-काकी, रौनौ-दाय

सत मि कत पठत

तरे रैथी-रैथीक भेद छैत

आ सगल हक सँ दुनु आगु रैठत ।

ए बचसपव अण मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पव  
पठाउ ।



१. पुनम मन्दन- मणिपद्म जयश्रीपव दिनीमे  
मिथिलांगन द्वारा करि लोछी ९ सितम्बर २०१२ केँ सम्पन्न



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



२. नरेंद्र कुमार झा-नीतिमय मोक्ष मोक्ष  
समर्पण/ ठाक मोक्ष मे गर्मायत रिहायक बाजनीति/ ३  
अकठुरवकै बाह्यगतिक रिहाय दौवा दवतंगा, मोक्ष जेतान  
दुखजी/ जागण आ कलाडक दौवा पव जयतान मोक्ष/ मैथिल  
ब्रह्मायकै रिहाय नगोयक बाजनी कीर्ति कयनन मोक्षिया म  
तेष्ट/ रिहायमे निरनेक गछा जलोनक बैनरैछी/ मधुरैनी सहित  
तीन जगह पव रगत पीपा पुन/ पाँचयत प्रतिनिधि

१



पुष्पा मंडल

मणिपद्म जयन्तीपव दिनेमे मिथिलांगन द्वारा करि गोष्टी ९  
सितम्बर २०१२ कै सम्पन्न

-मणिपद्म जयन्तीपव दिनेमे मिथिलांगन द्वारा करि गोष्टी ९  
सितम्बर २०१२ कै सम्पन्न



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

-करि शोचनीक संचालन माणरर्षण कष्ट केनहि ।

-रुमाव शैलेन्द्रक करिता पाठक दोषाण दर्शक दीर्घासि  
अभद्रतापूर्ण ठेका-ठेकी भेन । शुक्रमे रुमाव शैलेन्द्र छिप्पाणी  
केल बहथि जे महेंद्र मर्गगिया ज्ञी करिता ले निथि छथि ।  
मटपव रुमाव शैलेन्द्रक छिप्पाणी छन जे करिता ले निथिनिहाव  
नीक बाँक ले निथि सकैए । तकव रौद महेंद्र मर्गगियाजी रीष  
करिता पठल उँठ क२ छल गेलाह । तकले रौदनामे रुमाव  
शैलेन्द्रक करिता पाठक दोषाण दर्शक दीर्घासि अभद्रतापूर्ण ठेका-  
ठेकी भेन । जातिरादी वगैरक दू त्रुणक रौट भ२ बहन ए  
घटनाक्रमक रौद संचालक शोभि रौलरौक अगीन केनहि । तकव  
रौद ठेका-ठेकी केनिहाव पाँछे रात्रि सेहो किछु कानमे छल  
गेला ।

-वरैन्द्रनाथ ठाकुर, रुमाजी, रिनीता मल्लिक, माणरर्षण कष्ट ,  
रुमाव शैलेन्द्र, वमा रुमाव सिंह आदि करिता पाठ केनहि ।

Satya Narayan Jha, Poonam  
Mandal and Indra Bhushan Kumar like this.

Sanjay Choudhary जे कियो ए विप्लव निखल छथि ओ  
सभागाव मे उपस्थित नग्न छलाह । कार्यक्रम रौत नीक  
रातारका आ नीक माहौल मे संपन्न भेल । रुमाव शैलेन्द्र ज्ञी  
महेंद्र मर्गगिया ज्ञीक नामो तक नग्न केनथिह । विप्लव निख



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बैना स अग्रबोध जे अथि दूजस क सठला नञा हेलकु , अरुकि  
रिश्तेसगीयता समाप्तु भ जेत ।

Thursday at 7:03am · Like · 1

**Rawi ndr a Das** je kyo ehan reporting kar et  
chi o chahait chi je maithil sab jati ke  
larai me ojhraol rahathi aa ehin kaj ta  
bahuto lok ka rahal chati kala me pit  
ptrakarita ke kono jagah nai chaik o  
rajnitikik ptrakarita karu aa chadm nam  
sa nahi likhu

Thursday at 10:41am · Like · 1

**Rawi ndr a Das** दूदा एक ठा काज ओ बैथुरी क बहन अछि  
आ दिन प्रतिदिन क बहन अछि . ओ काज अछि जातिरादिताक  
नाम पब सगवा केनाग साहित्यकार सभ केव खुलैथाम फसर्बुक आ  
बैलोगक माध्यम स गाबि पठनाज

Thursday at 11:43am · Like · 1



**Poonam Mandal** मञ्जय टोषवी जी, कृपाव शैलेश्वर जी  
बरीन्द्र स्वर्णके कहल बहल्लि दुनूमे मँ कोला एक गोष्ठी मँ  
पुष्टि लेल, हमर समदिया ओतए उपस्थित छल। अहाँ जातिरादी  
काँचमँ जूडल छी तँ अहाँक छुटपुटपर निश्चित, मिथिलागन केँ  
जँ अगल प्रतिष्ठा रेटोरिक छै तँ अहाँ मल लोकमँ दुवा रैनाए  
पडते। मरगिया जे मरिगद्वक रियसमे एककी मंगल (साहित्य  
अकादेमी) मे जे निखल छथिन्ह से अहाँकेँ ले रूमन  
हएत। पढ़ू आ मरगिया जीक टवित्रक रियसमे रूमू।

3 hours ago · Unlike · 1

**Poonam Mandal** बरीन्द्र दास जी। आँखि नून लेनामँ जँ  
समाधान निकलिते तँ दुनियाँमे कोला समस्त ले बहिते। काना  
आ साहित्यमे मैथिली ज्ञान आ कर्ष कागज जे तबहँ जातिरादी  
बाजगीति क२ बहन छथि/ केल छथितकव रिवोध पीत  
पत्रकाविता छै। अहाँ आगडी, हमरा छन्न रूम बहन अछि  
कावा जे अहाँ कापी-पोस्ट केल छी (साहित्यक सब केव  
खुल्लायम हम्मरुक आ रूमोगक माध्यम म गावि पढ़नाइ) आदि, से  
एकछी टोव का "बाड केँ सुथ रैनाम" केव लेखक "बोमिल कृपाव  
मा"क पोस्ट छै। ओग टोवकेँ पहिलहिये समदियामँ रैल क२



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X **VIDEHA**

मानवीय

देन छै । ओकर कप्तान नीचाँक निरूपण देन

अछि [http://esamaad.blogspot.in/2012/09/blog-post\\_502.html](http://esamaad.blogspot.in/2012/09/blog-post_502.html)

3 hours ago · Unlike · 1

**Gajendra Thakur** जातिरादी बगमाँ आ ओकर संगी साथी  
सभक निर्दोशता आथि थोलाएना अछि ।

**Poonam Mandal** जातिरादी बगमाँ जीवण साक सुन्दर  
संयोगक मीठा २०१२ मे करैए आ कहैए जे अ पहिल मीठा  
छै, जखनकि मरगियाजीक जगसँ पहिल एकव मीठा भऽ चुकल  
अछि । मज्जा टोपबीजी अहाँ आ अहाँक संगी सभक जातिरादी  
बगमाँक आ ओकर संगी साथीक बिस्मयता आ बरीन्द्र दासक  
गीत पत्रकाविता कहिया ल थमे भऽ जेन देखु

निक <http://maithili->

[esamaad.blogspot.in/2012/06/blog-post\\_29.html](http://esamaad.blogspot.in/2012/06/blog-post_29.html)

**Kumar Shailendra** samadiya me chapal report  
ekdam galat anuchit aa bhramak achi .Ehan  
galat prachar nai karbaak chahi .  
malangi yajee bimari rahat hi o aayal o nahi  
rahat hi . ham aa sanjay choudhry hunka ghar  
par dekhi aayal rahi .Hamar kavitak khoob  
swagat bhel rahay karan o hamar doo masak





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

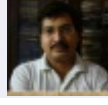
dar bhanga prawas par kendrit rahay.  
Samadi ya me chapal ripot pardhl ak baad  
hamra pahil khep e bujhba me aayel je  
vi deh sa jural lok sab katek grin t  
abhi yan chal a rahal achi .

**Poonam Mandal** जातिरादी बंगमटसँ जुड़न कमाव शैलेन्द्रक  
मूर्त घृति, श्री डबपोक जातिरादी बंगमट जे टोव बेगिन  
कमाव मा (वाडके सुथ रैनए केव लेखक)सभ कापीवांष्ट टोवक  
संगी अछि, केव असनी टेरवा अछि, जे प्राग्राम सभमे अतुलता  
कलेए, एक दोसवासँ अडेए ह्मदा बिदेहक बिरुद्ध एक भ२  
जागए ।

[http://esamad.blogspot.in/2012/09/blog-post\\_502.html](http://esamad.blogspot.in/2012/09/blog-post_502.html)

- **Gajendra Thakur** कमाव शैलेन्द्र श्री आन  
जातिरादी बंगमटकर्मीक ३ पुवान आदति छहि, भोजपुरी-मैथिली  
अकादेमीक समीपार मे कमाव शैलेन्द्र श्री किछु आव गोठैक  
मटेपव राक ह्म ह्म अँथिसँ देखल छी (प्रायः देरशिकव नरीन  
संगे), ह्मदा अगिले समीपारमे माहान मरगिया, माहान देरशिकव,  
माहान गुंजन, माहान सुभाय चन्द यादव आदिक जयघोष सेहो  
शैलेन्द्र मगेल बहथि, श्री तैपव मरगियाजी देरशिकव नरीनकेँ  
कहल बहथिन्ह- की भ२ गेलौ श्रीग कमाव शैलेन्द्रकेँ, उल्टा  
पाव रैन बहन अछि ।

[about a minute ago](#) · Like



**Gajendra Thakur** सुठगव ठकुर अछि जातिरादी बंगमा ।  
किछ रीडियो ए दूनु कार्यक्रमक रिदेह रीडियोमे भेटै जाएत,  
भर सकेए नवम-गवम दूनु घटना भेटै जाए ।

a few seconds ago · Like

**Gajendra Thakur** लोमिष कमाव सा नाम्ना जातिरादी छेबक  
संग जातिरादी बंगमा आ कमाव मेलन्दक साँठ-गाँठ मोसाँ  
अछि । तखन ककब गग ठीक मानन जाए, सुठ आधारित  
जातिरादी बंगमाक रा सल आधारित समदियाक ? ?

**Poonam Mandal** ए छेबक संगी साथी (मैकबदेर सा,  
कमाव मेलन्द, अमलन्द मैथव पाठक आदि) सबक गगव  
रिग्रास कएन जा सकैए ?

a few seconds ago · Like





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

**Poonam Mandal** अथला जगदीश प्रसाद मण्डलक बच्चा  
जातिरादी बर्गमटक सहयोगीक सह पब अ छेव लोमिष मा  
हुंगवक देन निरूपव छेलेल अछि ।

[http://esamaad.blogspot.in/2012/09/blog-post\\_502.html](http://esamaad.blogspot.in/2012/09/blog-post_502.html)

- **Sanj ay Choudhary** गर्जेद ठाकुर जी आ पुनम  
मण्डल जी अहाँ सँ लैव जातिरादी बर्गमटक न क दुनियाँ के  
सामल कियेक नञ अरैज जी

11 hours ago · Like



**Sanj ay Choudhary** अहाँ सँ नग जतेक लैव जातिरादी  
नाटक अछि हमरा पठा दिय आ मगहि जतेक लैव जातिरादी  
कनाकाव सँ छुथि तिनको कहियो जे हमरा सँ मग आरि क  
नाटक कलेथ तखल जातिराद समाप्त हैत । अगव जातिराद  
ढेक त ठकवा समाप्त कब के प्रयास हेरौक छली ताली जेन  
सँ जाति के लोक सँ के मटक पब आरि पडतय । हमरा  
सँ नग जे कनाकाव आ नाटक हुंगवक बहेत अछि ओही म काज  
छनरै पड़ये । अहाँ सँ लैव जातिरादी कनाकाव हमरा  
थोजि क दिय अगल लैव जातिरादी कनाकाव सँ के कहियो  
जे हमरा सँ मग मिन क काज कबत । दिगी मल मेहव मे  
नाटक केनाञ रैहूत जोथिम के काज ढेक आरोप नगेलोज  
रैहूत छेष्ट गप होगत ढेक अगल लोजी लोष्टी छेष्टि क नाटक  
मे नाग पडैत ढेक । ओव अहाँ सँ सँष्टी छेष्टि के



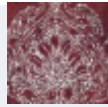
११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मष्टियासष्ट कब मे नागन बहे छी । एना हवा मारै स नीक  
हेत जे एकठा रिकम्प दियो मैथिली बंगमा के जे लोब  
जातिरादी होइक । जातिराद समुदाय त बहन छैक ह्मना अहाँ  
सब ओकरा हारा देबै मे नागन बहे छी । जखन देखु  
जातिराद शैलिक छिटोवा पिछैत बही छी । अगब समर्थ अछि  
त दियो मे एकठा लोब जातिरादी बंगमा स्थापित कर हमाँ  
ओही बंगमा स जुड़ि जैबै ।

10 hours ago · Like



**Priyanka Jha** <http://maithili-dr-ama.blogspot.in/>

**बिदेह मैथिली नाँठे उमेर**

[maithili-dr-ama.blogspot.com](http://maithili-dr-ama.blogspot.com)

47 minutes ago · Unlike · 2 · Remove Preview



**Gajendra Thakur** सज्जन जी, उगवका निकपव समाशासुव  
बंगमा ( लोब जातिरादी समाशासुव बंगमा) आ नाँठे भेटै  
जाएत, अहाँ केहेन बंगमा स जुड़न लोक छी जे अहाँकेँ अ



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

गान्धीविदेह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बुझबो लै अछि ? एना अही ठाक लै सम्पूर्ण जातिरादी  
वैगमटक समझा अछि अहाँक अ ग्राम "अहाँ सँ लेब जातिरादी  
वैगमट न क दुनियाँ के सामल कियेक नञ अरैञ छी"  
कुपमाँडुकताक आतक अछि रा जातिरादी कष्टबाक । अहाँ नग  
गएब लौक-गएब कागस कि ए लै आरि बहन अछि ओगएब मोटू,  
लोककेँ पछैलेँ तँ ओ जाएत ? पहिले तबोमा कागस कक, की  
तबोमा कागस क२ सकन छी ? दिगी सन गेहब ये नाँक  
केनाग "विदेह समाजसुब वैगमटक" मल उद्धेष्ट लै छै, काका  
विदेहसँ जुडन लोक तबि विदेहमे छुनि, आ मिथिलामे "विदेह  
समाजसुब वैगमटक" लोगत अछि, लोगत बहत । मैथिली  
वैगमटकेँ रिकम्प देन जा चुकन छै । जे जातिरादी शेरनी  
अहाँक आ अहाँ सन दोसब जातिरादी नाँककाबक नाँकमे छुनि  
तकब रौद अहाँ मोटियो केना लेनिँ जे लोक अहाँ सभक  
घुणाक वैगमटसँ जुडत ? बोझी-बोझी छोटि क२ समाजकेँ  
रैष्ट्रक काजमे नगनाग जँ अहाँक प्रियोविष्टी अछि तँ ओकरा  
(जातिरादी वैगमटकेँ) जडिँ खतम केनाग हमर प्रियोविष्टी  
अछि, आ से प्रियोविष्टी हमरा सभक गामसँ शुक भेन अछि  
जतए लष्टि सपीकब रैसँ छुनि, हस्त आधारित दिगी लै । मराठी  
नाँक शोनाग्रुब आ मुरै आ गजवाती नाँक अहमदाबाद आ  
भकट निर्धारित करैत अछि । अहाँकेँ कोना शुक भ२ गेन जे  
मैथिली नाँक दिगी निर्धारित कबत आ साम्प्रदायिक नाँककाब  
निर्धारित कबत ? हमरा सभक सामर्थ्य आस्त-आस्त अहाँ  
लोकनिकेँ देखाग पडिये बहन अछि, पडिते बहत, .. हुस्न  
पावाडागजसँ हमरा लोकनिकेँ कोना मतनरै लै ।

32 minutes ago · Unlike · 1





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

**Gajendr a Thakur** आरंभ ए बिशेषणव घुबि- जातिरादी  
बिगमि आ ओकव सगी साथी सभक निर्मलता आरंभि थोमएरना  
अडि । बिबिगिठि सेहो हिनका लोकनिक बिग रीदनरौक आ मुठ  
रिजरीक अमता देखि नज्जा जअत ।

18 minutes ago · Unlike · 1



**Poonam Mandal** सज्जय जी, पहिले तँ अमाव शैलेन्द्र,  
बरीन्द्र दाम आदि जे मुठ रीजन छथि ओग जेन ओ सभ साथी  
संगथ, अरुंके सभ गग रूमन छन अरुं अहाँ गगके सँपे-  
तोपेक प्रेमास केजौ, किअ ? सेव अमाव शैलेन्द्र , अमावेन्द्र  
मेखव पाठक, बरीन्द्र दाम आदि जे छेव रोमिष अमाव मा  
(अकव डायलोग बरीन्द्र दाम कापी केन छथि) केँ जातिरादमे  
मोकि अगदीने प्रेमाद मन्दनक बचनक छेविक रौदो पाठसँ सह  
द२ बहन छथिन्ह, तकरा जेन की सजा छै ? की एकव रौदो  
अहाँ लोकनि सहयोगक आशि बथे छी ?



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह



नरेंद्र कुमार झा- नीतीशक सोसा मोदीक  
समर्थी/ ठाक मोसम मे गर्यायत रिहावक बाजनीति/ ३  
अकठुबक बाह्यगतिक रिहाव दोरा दबतंग, सेहो जेतार  
दुखझी/ जापान आ कलाचक दोरा पब जयतार मोदी/ मैथिल  
ब्रह्माक रिहाव यलोवक बाजनीति कीति कयनि सोनिया अ  
तेह/ रिहावमे निरनेक अछा जलामक बैलकरी/ मधुबनी सहित  
तीन जगह पब रगत गीत गुन/ पछायत प्रतिनिधि

### नीतीशक सोसा मोदीक समर्थी

रिहावक उंग दूधामिनी सुनील कुमार मोदी, दूधामिनी नीतीश  
कुमार के पीएमक मेठेबिसन जना बाजनाक तीतर पीएम ओ  
लेष्टिक परमेणी रेट । पार्टीक तीतर नर वशीतिक संकेत  
देनि अछि । बाजनीति मे कतेको योग्य लता छथि । दूध  
मोदी के नीतीश कुमार मे पीएम मेठेबिसन बुझि पडैत अछि  
तऽ अ कोला संयोग भाग नहि अछि । बाजनीतिक जानकार  
एकरा पार्टीक तीतर गुजरातक दूधामिनी नरेंद्र मोदीक रेटैत  
प्रभार के धाव के बोख कबरक मोदी रिवाधी थोका  
वशीति मालैत छथि । सुनील मोदीक एहि रंगाल रौद पार्टीक  
रविग्रा लता आ रिहाव मे बाजनीति-जदयुक सबकार प्रदूध



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

वर्षातिकाव अक्षर जेठनी द्वारा लक्षण म नीतीने क्माव म भेन  
गपमग म एहि रीत के रीन भेठि बहन अछि । हुनक रीयास मे  
प्रदेने भाजपा स्वकामेक द्वा मे अछि आ कोला लता एहि  
पव थुनिक किछ रीजरी पव पवहेज क२ बहन छथि । कि एक  
त२ रीहार भाजपा मे सुशील क्माव मोदीक त्मी म सत किछ  
होगतन अछि आ रतिमान परिवर्तिता मे नीतीने क्मावक माझ  
दर्शन पव भाजपाक डेग उठैत अछि । एक तबहे प्रदेने मे  
भाजपा मोदीक आगा ठेछन बोपल अछि त२ मोदी नीतीने  
क्मावक टांगुव मे छथि । मोदी आ नीतीनेक एहि कदम तान म  
रिपक्षी दन के एकवा द्वा हाथ लागि गन अछि आ ओ नीतीने  
क्माव पव निशाना नगा बहन अछि ।

लोक सभाक चुनाव मे एखन तीन रयिक समय अछि द्वा  
जे बाजनीतिक परिवर्तन रीन बहन अछि ओहि मे चुनावक  
मंभारणा सेहो नजबि आरि बहन अछि ते एखन म प्रधानमन्त्रीक  
पद पव अगन-अगन दारेदारी मजगुत कवरौक वर्षाति मे  
बाजगक घटक दनक लता लागि गन अछि । एहि मे बाजगक  
प्रमुख घटक जदयुक रविश्र लता नीतीने क्मावक नाम पव  
नगाताव टर्मा म हुनक दारेदारी दिन पव दिन मजगुत त२  
बहन अछि । आरै त२ एक तबहे भाजपाक नीतव सेहो  
नीतीने क्मावक स्वीकार्यता धीरे-धीरे रीति बहन अछि । एहि म  
पहिल भाजपाक माह सगठन बाह्यीय स्वर्ग मेरक सघक रविश्र  
लता मोहन भागरत सेहो नीतीने क्मावक प्रसिा क२ सघ  
परिवार लनछन रीद । देल छनाह ।

सुशील क्माव मोदीक रीयासक रीद वकामेक भेन  
भाजपाक लता सत ओना त२ समर्थन आ विरोध म रीति बहन  
छथि द्वा नीतीने क्मावक काजक प्रसिा म नहि टुक्तेत छथि ।





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

पार्टी लताक माणर अछि जे मोदीक रैयाण नीतीमे फ्यावक  
राष्ट्रियक मंदर्त मे अछि आ केन्द्र सरकारक श्रुताचारक चर्चा म  
लोक सभक ध्यान हठैराक लेन एहि मामिला के रिया कोला  
काका हरा देन जा बहन अछि । हुन एहि रातक कोला उतव  
पार्टी लता नग नहि अछि जे भाजपा मे नरेंद्र मोदी,  
शिरवाज सिंह टोहार, कमल सिंह सन् फर्मेशन द्वाखामि मे पीएम  
मोदीकेयन मोदी के कि एक नहि देखाए पडि बहन अछि ।  
मोदी के गंभीर आ परिणत लता मानन जागत अछि आ हुनक  
रैयाण सेहो महत्वपूर्ण होगत अछि । ओ कोला रैयाणरीव नहि  
हुनि जे सभ मामिला पब चर्चा मे बहरीक लेन रैयाणराज  
करैत हुनि । ते प्रधानमंत्री पदक मंदर्त मे सुनीन मोदीक  
रैयाण पैघ बाणनीतिक कग् मे देखन जा बहन अछि । मोदीक  
रैयाण पब नीतीमे फ्यावक प्रतिफिया जे ए संयोगमात्र अछि  
ओहि बाणनीति के मजगुत आधार द२ बहन अछि । एदेमे मे  
सक्रिय नीतीमे रिवारी उपेन्द्र फर्मेशन प्रधानमंत्रीक दारेदारक  
कग् मे नीतीमे फ्याव के पूरा तबहे खरिज क२ बहन हुनि  
त२ बाजदक रविश्र लता अह्नरीव सिद्धीकी मालेत हुनि जे  
मोदीक रैयाण पार्टीक प्रति हुनक मिश्रक प्रदर्शन आ एक तबहे  
जदयुक आगा भाजपाक समर्थन मानन जा सकैत अछि । ओना  
लोक सभाक चुनाव मे देवी अछि आ रतमान परिस्थिति मे  
भाजपा आ कांग्रेस दुनु मध्यावधि चुनाव म रच२ चाहैत अछि  
तथापि नीतीमे आ सुनीनक कैमेस्ट्रीक मया बाजनीतिक  
मैपेमेष्ट्रि मसमावोन जा बहन अछि ।

ठेकर मोसम मे गर्मियत रिलक बाजनीति



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सितम्बर मास मे योसय ठाएनाक संगहि बिहाव मे बाजनीतिक  
पारा गर्म होयत । म' १ । कठ जदयूक संगहि रिपक्ष दिस म  
यात्राक दोव प्रारंभ होयत । एक दिस सुशोसनक गुणागण करैत  
प्रदेशेरासीक हक आ सन्धानक लेन द्वाधारी नीतीमे क्रमाव  
अधिकाव यात्रा पब निकनताह तऽ प्रदेशे मे परिवर्तनक  
नड । अक लेन बाह्यीय जनता दलक सुधीयो नानु प्रसादक  
परिवर्तन यात्राक चाकिम चर्चा प्रारंभ होयत । कोगनाक कारिन  
नागन दाग के छोडेरौक लेन कांग्रेस सेहो मैदान मे  
उतवत । केन्द्र सबकाव पब नगाताव तऽ बहन हमनाक उतव  
देरौ आ अगल पक्ष बाखन आ नीतीमे सबकावक असमनता के  
जनता धरि पछुटेरौक लेन कांग्रेस पोन खोन यात्रा प्रारंभ  
कवत तऽ नीतीमे बिरोधी आ बिहाव नर निर्माणि मट सम्पर्क यात्रा  
के माध्यम म नीतीमे सबकावक सुशोसनक हरा निकनत ।  
लोजगा अक्षर बामरिनास पासराण सेहो जनसम्पर्क यात्राक  
माध्यम म अगल उपस्थिति दर्ज कवा बहन छथि ।

बाजग सबकाव के उखाडि लैकरौक मकल्पक मंग बाजद  
परिवर्तन यात्राक चाकिम चर्चा १९ सितम्बर म प्रारंभ होयत ।  
एहि दवमियाण बाजद सुधीयो नानु प्रसाद १९ सितम्बर के  
रैगुसबाय म यात्रा प्रारंभ कवताह आ २० सितम्बर के खगडिया,  
२१ सितम्बर के भागनपुर, २२ सितम्बर के झंघेव आ २३  
सितम्बर के नखीसबायक यात्राक क्रम मे जनसभाक माध्यम म  
नीतीमे सबकाव पब हमना कऽ बिहाव मे परिवर्तनक लेन जनता  
के सजग कवताह । यात्राक दवमियाण बात्रि बितीम सेहो ओहि  
जिना मे होयत आ बिजसब दलक कार्यकर्ता म भेठे कवताह ।  
हुनक यात्रा मे रिपक्षक नेता अडुनरौबी सिद्धीकी, बाह्यीय  
महामन्त्रि बामनपान यादव, मसिद जगतार्णव, बिधान परिषद मे  
रिपक्षक नेता गुनाम गौस, बिधानसभा मे पार्टीक द्वाधारी सचेतक  
मन्नाथ टोषबी, बाह्यीय उपाध्याय आ मसिद बघुरी प्रसाद सिंह,



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवसिंह

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

पूर्व केन्द्रीय मंत्री जयप्रकाश नारायण यादव, आ पूर्व मंत्री शेखरी  
दोषरी संग बहताह ।

दोसब दिस काँग्रेस सेहो अगल हेबायन बाजनीतिक  
जमीनक खोजक जेन अतिथान चलाउत । पार्टी द्वारा पहिल के  
कोशना अरिष्टन माहिना पब रिपब्लिक द्वारा समद के ठप्प कबरौक  
कार्यवाहक उतब देरौक जेन मैदान मे उतबत । कोनछे  
काँड पब मचन रैरौनक पब रिपब्लिक के उतब देरौ आ सबकाबक  
पक्ष बखरौक जेन रिहाव मे उद्भाग आ राजिजा बाज्य मंत्री  
ज्यातिवादि मिथिया के मैदान मे उतबत । श्री मिथिया दु  
दिसक रिहाव यात्रा पब सितम्बर के प्रदेशक दौरा कयनि ।  
एकब रौद काँग्रेस केन्द्रीय योजना मन्त्र मे रिहाव मे २२  
बहन श्रुष्टाचारक रिक्छ पोल खोल बाह्रपिता महामो गधीक  
प्रतिमा पब मान्यार्थिक रौद आ अतिथान प्रारंभ होयत । ओहि  
दिस नवकष्टिगार्ज आ वामनगर मे जन सभा आयोजित कयन  
जायत । २२ सितम्बर के १० चम्पाका हवसिद्धि आ मोतीहारी  
नगर २३ सितम्बर के ऋजयनगरपुर्वक मोतीपुर आ कठनी आ  
२४ सितम्बर के रैगुमवाग जिना ऋथानय मे जनसभा  
आयोजित कयन जायत ।

ऋथानवी नीतीश कुमारक रिक्छ नगाताव अतिथान चला  
बहन रिहाव नर निर्माण मोर्चा सेहो यात्राक एहि बाजनीति मे  
कुदमक अछि । मोर्चा प्रदेश मे सम्पर्क यात्रा आयोजित  
कबरौक घोषणा कयनक अछि । आ यात्रा ९ सितम्बर सँ कैमुर  
जिना सँ प्रारंभ होयत । कैमुर जिना मे तीन दिस यात्राक  
रौद आ यात्रा तीन दिस धरि नरान्द जिना मे चलत आ २२ से  
२८ सितम्बर धरि पूरी चम्पाका यात्रा होयत ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बिहाव के विशेष बाज्यक दर्जा देरौक जेन जगता दन  
यु नगाताव आदोमनक माध्याम स केन्द्र पब दरौर रैना बहन  
अछि । एहि मागक समर्थन से दन 4 नरयैव के पठना से  
अधिकार बैनी आयोजित क२ बहन अछि । एहि बैनी से समर्थन  
जुटेरौक जेन आध्यात्मिक नीतीने अभाव अधिकार यात्रा पब निकनि  
बहन छथि । आध्यात्मिक एहि यात्राक जेन पठना स रैतिमकक  
जेन 18 सितयैव के रिदा हेताह । हुनक यात्रा उपचारिक रूप  
स 19 सितयैव स रैतिम स प्रारंभ होयत । ओ 14 अक्टूबर  
धरि प्रतिदिन दु जिनोक यात्रा क२ जग सभा के सरोचित  
कवताह । एहि दरमियान ओ यात्राक जेन सबकारी गाडी आ  
सबकारी अतिथि शोनाक उपयोग नहि कवताह । दन द्वारा  
आयोजित यात्रा से ओ दनक गाडी आ दन द्वारा राख्ना कयन  
जेन जगह पब बाशि रिशाम कवताह ।

सितयैवक मास एक दिस योसम रदमनाक सगहि  
बिहावसमी गर्मी स बाहक सस जेताह त२ दोसब दिस बिहावक  
बाजनीति से गर्मिष्ट आउत । सभ प्रमुख दन आ लता  
प्रदेशक यात्रा पब निकनि बहन छथि । ते स्वाभाविक अछि जे  
सभ जगता के अगना-अगना हिमारी स अगन पक्ष बखताह ।  
जखन बाजनीति कवरौक अछि त२ वषनीति रैनाएन आरंभक  
अछि । ओना एखन लोक सभा आ रिधान सभाक चुनाव से देवी  
अछि आदु बाजनीतिक वषनीतिक रैना दन आ लताक कोना  
महत्त्व नहि अछि । अधिकार, परिवर्तन, पोल-थोल आ सम्पर्क स  
जगता के कतेक प्रभावित कयनक अ त२ जनादेशक परीक्षाक  
रौदे पता चेत । सम्पर्कक माध्याम स पोल थोल परिवर्तनक  
रिपक्षक आनीक मध्य अधिकार देयैरौक सँ । धारी दनक  
संकल्प स जगताक मुन समष्टाक कतरौ समाधान होयत अ त२  
भरियाक गति से अछि आदु एहि मास से जगता के ठाँगा  
पाम कवरौक जेन पूरा अरसव अछि । सँ । । क रादा आ



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

विप्लवक अवादाक संग जगत के ठाक योसम मे निरवणक  
संग बाजनीतिक गर्मी महसूस होएत ।

---

### 3 अक्टूबर के बाह्यगतिक विभव दोवा दवर्तगा सेहो जताह झुझी

बाह्यगतिक प्रश्न झुझीक 3 अक्टूबर के विभवक दोवा  
कवताह । श्री झुझीक बाह्यगति रैगनाक रौद पहिन रैव भ२  
बहन विभव यात्राक दवर्तगा ओ पठनाक संगहि दवर्तगा सेहो  
जयताह । 3 अक्टूबर के बाह्यगति विशेष जहाज स दुपहर  
मे पठना पद्धतताह । पठना हराओ अष्टा पव हूणका गार्ड ऑफ  
ऑनर देन जायत । ओकर रौद ओ विभव सबकारक प्रधि रोड  
मैपक लोकार्पण शीघ्रतः सावक भरण मे कवताह । श्री  
झुझीक सन्मान मे झुझीक आराम पव भोज आयोजित कएन  
गेन अछि । एहि मे समितित भेलाक रौद ओ दवर्तगा रिदा  
भ२ जेताह । ओतए नलित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक  
दीक्षात समारोह मे भाग लेलाक रौद पठना आपस आरि  
जयताह आ बाजभरण मे बावि विशेष कवताह । हूणक सन्मान  
मे बाजभरण मे बावि भोज आयोजित कएन गेन अछि ।

---



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

## जागण आ कणाक दोवा पब जयतह मोदी

प्रदेशक रि० । मंत्रीक प्राविष्टत समितिक अध्यक्ष सह प्रदेशक  
उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदीक लहलह मे एकठा दन 13 म  
25 मितयैव धरि कणाडा आ जागणक ठेवैठे, उड़ीसा, रैलकुरव  
आ ठेकियाक दोवा क२ रहु आ मेरा कब प्रशासनिक अध्ययन  
कबत । एहि द नये 12 प्रदेशक रि० मंत्री आ 17 प्रदेशक  
रि० मंत्री आ राजिजा कब आशुअ समिति बहताह । एहि म  
पहिल श्री मोदी रजि ग्लोबल गैरसरकारी फोरम द्वारा 11-13  
मितयैव धरि टोन मे आयोजित भयिक अर्थरारस्था रिययक  
समयन मे भाग लेताह आ राखण मेहो देताह ।

---

## मैथिल ब्रह्मा के किशोर वयोवक भाजपा कीर्ति कयवनि मोनिया म ठेठे

कोयला आरंभक मणिना मे समदक मानसून मत्रक हंगामाक मया  
दवतगाक भाजपा समद कीर्ति आजादक कांथेस अध्यक्ष मोनिया  
गांधीक मंग लेन ठेठे म प्रदेशक भाजपाक कां ठाठ भ२ लेन  
अछि । श्री आजादक पिता स्व० भागरत सा आजाद कांथेसक  
समयनित लता डलाह आ प्रदेशक मुख्यमंत्री क२ मे मेहो  
हूणका कांथेस अरसव देल डल । कीर्ति आजाद एहि ठेठेक  
रौद लेन मयागा द२ बहन होथि मया एहि ठेठेक किडु लहि  
किडु बाजनीतिक छानि मानक जा बहन अछि । उमा उ



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

समाजवादी पार्टी आ हथकूट काँग्रेसक अधिष्ठान मे सेहो भेटे  
कएल जात। फूदा एहि पब ककरो ध्यान नहि जेत।  
काँग्रेस अधिष्ठान मे भेटेक बाद हथकूट पार्टी रैदोरक चर्चा पब ओ  
सहाज देनहि जे पार्टी कि किछु लता हथकूट रिकछु आ अथरात  
पमावि बहन छथि।

दबअसन प्रदेशक राजनीति मे कतियाएन मैथिल ज्ञान  
लता अथरा अतिरिक्त रैदोरक जेत संधि क२ बहन छथि।  
राजनीतिक हिसाबत कम भेलाक कारणा राजपा सेहो एहि  
समाजक उपेक्षा क२ बहन छति। पुरि मे काँग्रेस-राजद  
गठबंधनक बाद आ समाज राजपाक पक्ष मे गोनरद भेत आ  
लोक सभा आ विधान सभाक चुनाव मे राजगक सर्वांगीण मे  
आगा आसन। राजगक घटक राजपाक प्रति मैथिल ज्ञानक  
विशेष कर्ण सुकार भेत। फूदा पार्टी एहि समाजक भेठक  
समर्थन के समाजक मजदूरी रूमि एकव उपेक्षा क२ बहन छति  
त२ एहि समाजक लता सेहो आरं दूरार रैन रैन नगनाह  
छति। राजपाक प्रति त२ बहन मोहभंग पब ओकर सहयोगी  
नजबि गड़ोल छति आ एहि दिस ओकरा सहमतता सेहो  
भेत। राजपा मे उत्कट रना लता मानव जात रना संजय  
सा के द नमे समिलित कवा पार्टी के नष्टका सेहो देनक  
छति। आरं जदयूक नजबि रिहाव विधान परिषदक सभापति  
तावाकांत सा दिस छति। हानहि मे श्री सा द्वारा शिक्षक  
नियोजनक छति बहन प्रक्रिया मे मैथिली शिक्षकक नियोजनक  
मार्ग उठाउन जेत छन आ एहि दिस सक्रिय त२ सबकार मैथिली  
शिक्षकक नियोजन घोषणा क२ हथकूट विधानात्मक मे अथरा पकड  
रैदोरक संकेत देनक छति। राजपा जतय तावाकांत सा के  
सभापति बहत विधान परिषदक छकट स रचित कयनक ओतहि  
विधानसभाक उपाध्यक्षक प्ररन दारेदारे रिजय अगाव मिश्री आ  
रिहाद नावासा सा के कतिया देनक। हानाकि रिहाद नावासा



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मा के मंत्री सुबक पदक लानीर्पाग द२ हुनक नावाजगी कम  
कवरौक प्रयास कयनक अछि ।

बिहार विधानसभाक चुनावक दवर्गिण भाजपा पहिल  
छकछक रैठरावा मे मैथिल जौनमा के कात नगा देनक आ  
आर सता मे भागीदारीक रैठ सेहो लोकि बहन अछि । एहि  
स्थिति मे समाजक सक्रिय लता मे अस्मिता होयसँ स्वातंत्रिक  
अछि । कीर्ति आजादक मोर्चा गरी स भेन भेठ के  
अस्मिताक जड़ि बहन आंगिक धुआँ मानन जा सकैत अछि ।  
असन मे बाजगीति ताकतक पुढ होगत अछि । ओ चाहे  
समाजक ताकतओ अथवा अगल राज्जगत ताकत आ हैसियत ।  
सर स पैघ रिडब्लेन आ अछि जे मैथिल समाज एकजुठ भ२  
अगल बाजलैतिक हैसियत नहि देखलैत अछि । एहि समाज के  
एकठास बाथर आ रोक के तबाजू पव तौनर रौनोरवि अछि ।  
एहि स्थितिक नात भाजपा पुवा तबहे उठा बहन अछि । संगठन  
आ सता दुनु मे मैथिल जौनमाक उपेक्षा क२ आधारबिहीन  
मैथिल जौनमा लता के आगो आनि भाजपा अगल देहवा रैठा  
बहन अछि । **(विशेषमे राउ बिहार लेखकक छति । -**  
**समादक)**

---

बिहार मे निरन्तर अछि जलौनक लेन रैली





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

गदगदिह

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

देशिक प्रसिद्ध दराङ्ग कम्पनि बैलबैली जेबैलबैली रीति मे  
दराङ्ग कावखाना नैलीरक योजना रैलीनक अछि । कम्पनि अ  
निरमे जलबिक दराङ्ग रैलीरक जेन कवत । कम्पनि एहि रातु  
सबकाव म किछ मदतिक गडा जलोनक अछि । कम्पनि रैलीन  
दराङ्ग कारोबारक अधिस्त्र बाजरी गुनष्टी जलोननि अछि जे  
प्रदेश मे पडिना किछ रय मे तेजी म विकास जेन अछि ।  
देशेभरि मे तेजी म विकास क बहन रीति मे पैघ अरसव  
अछि । ओ कहनि जे कम्पनि जलबिक दराङ्गक रैली म रैली  
प्रचार-प्रसार कवत छति अछि । रीति सबकावक जलबिक  
दराङ्गक रैली रा देरीक प्रसारक नीक पकिसा मोसा आउत ।  
एहि जेन सबकाव म जमीन आ रिजनी म जमीनी सुरिराक  
मदति जेरीक आनि अछि । प्रदेश मे सुपब स्मिनिष्टि  
अस्पताल पब सबकावक जेबक रियस मे श्री गुनष्टी कहनि जे  
एथल अस्पतालक गाँव समाजक उँच रक्क धरि सीमित बँहत  
अछि । सबकाव के एथल जमीनक तुब पब स्यान्त्र मेरा के  
रैलीर पब काज कवरीक छति । प्रदेश मे पैघ आरौदी एथला  
गरीबी लेखा म नीचा अछि । एहि रक्क के स्यान्त्र मेराक रैली  
आरुक्ता अछि । ओ कहनि जे देशे भरि मे एथल गोठेक  
रीस हजार म रैली दराङ्ग कम्पनि अछि दूदा देशे मे नीक आ  
सुत दराङ्गक पैघ आजार अछि । एथला पचास प्रतिशत आरौदी  
धरि दराङ्ग नहि पछुटि बहन अछि । तेँ बाज सबकाव म के  
एहि दिस डेग उँटीरक छति । जौ रीति सबकाव एहि दिस  
डेग उँटीरक आ कम्पनीक मग काज कवरीक जेन तैयार जेन  
तँ एहि मे कोला पवेशी नहि होएत ।

---



## मधुबनी सहित तीन जगह पब नर पीपा पुन

पथ निर्माण रिभाग प्रदेमे मे तीन जगह पब नर पीपा पुन  
रैलवेक निर्णय लेनक अछि । पथ निर्माण मंत्री नंद किशोर यादव  
जगतरी देननि अछि जे नर पीपा पुन मधुबनी, पठना आ रैलवे  
जिना मे रैलवे ज्ञायत । ओ जलोननि जे मधुबनी जिनाक  
मधुबनी प्रथमक कमला नदी पब पुरी धार तीर भगवानपुन मे  
आठ सैक नर पीपा पुन स्त्रीप्रति देन ज्ञायत अछि । एहि पुनक  
निर्माण निर्माण पब 2.66 करोड ठीका खर्च होयत । एकव सीधा  
नाभ पट्टास हज्जवक आरौदी के होयत । ओ जलोननि जे  
पठना जिना मे गामपुन (रैलवेपुन) स काना दियावा घाट  
पब तीन सैक पीपा पुनक लेन 8.10 करोड ठीका स्त्रीप्रति  
देन ज्ञायत अछि । पट्टास हज्जवक आरौदीक नाभ एहि पीपा पुन  
स होयत । एकव अनारा रैलवे जिनाक जलोनपुन प्रथमक  
लैलीजोव गाम हित रैलवे घाट स उतरी दियावा धरि सार्ति  
सैक नर पीपा पुनक लेन 15.62 करोड ठीका स्त्रीप्रति कयन  
ज्ञायत अछि । एहि स लैलीजोव आ उतव प्रदेशक रैलवे आपस  
मे जुडि ज्ञायत आ एकव दूरी 75 किलोमीटर स घटि क २ पाँच  
किलोमीटर भ २ ज्ञायत । एहि स उतव प्रदेशक आ रैलवे दू  
स्त्रिक किमान के नाभ होयत ।

---



## पंचायत प्रतिनिधि

पंचायत के समेक आ ज़रूरतें रैलीक लेन पंचायतीराज संस्था  
सबक निरचित प्रतिनिधि आ ओहि मे कार्यवतकर्म सबक छवि  
दिक प्रशिक्षण कार्यक्रम सब जिला आ प्रखंड मे अर्द्धरव मास  
पहिल सप्ताह मे होएत। एहि क्रम मे राज्य स्तरीय प्रशिक्षण  
समारोह 13 सितंबर के पटना मे होएत जकर उद्घाटन  
मुख्यमंत्री नीतीश कुमार कबतार। पंचायतीराज आ ग्रामीण कार्य  
मंत्री डाक्टर भीम सिंह जगतरी देवनि अछि जे एहि समारोह  
मे प्रदेशक सब पंचायत सं चुनल गेल 2000 निरचित  
प्रतिनिधिक कार्यवत कर्म भाग लेतार।

ए बचापन अपन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब  
पठाउ।



निरुपाय सा - देव

## मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन साक योगदान

मैथिली उपन्यास साहित्यक गतिहास देखी प्रारंभ हो अछि। ए  
भाषाक पहिलक मान्य उपन्यासकार जगदीश छथि। ओना तँ



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हविमोहन मा रिमर ओ शिन्पाछादित औरकाम हकत कथाकावक  
कपेँ चर्चित छथि, किएक तँ चर्चि सन हाम्य ओ मरि सगागम  
हिनक अन्ध रिवाक प्रतिमे ले भेटैछ, पर्वत साहित्यक  
जगतमे हिनक पदार्पण पाठकगालेँ जग प्रतिमँ सप्रत केनक  
ओ थिक सन् 1933 ज.मे हिनक लिखन उपन्यास कल्यादान ओ सन  
1945 ज.मे हिनक दोसर उपन्यास- द्विवागम ।

जखन उपन्यास द्विमे हविमोहनक पदार्पण भेलनि तँ ज रिवा  
काँट छल । अखन धरि जनसीदनक निर्दयी मान्, शिकन,  
कलिहारी सन्यासी, पुररिवाह, द्विवागम बहम्य जीरछ शिक  
बायेशेव, पुरानद साक मिथिला दर्पण आ डा. काँटी नाथ मा  
किरक चन्द्रवर्ण सन किछ जनहिम आ साहित्योपयोगी  
उपन्यास सब पाठक नग पसबन गेल छल । ह्दा कोला  
उपन्यासमे ओ शक्ति रा आकर्षण ले छल जेकरा मैथिली पाठक  
पूर्णतः आत्मात कथि । किएक तँ पोथी कीनि क२ पठरक  
दृष्टिमेँ जेँ मुन्याकन कएन जअ तँ मैथिलीकेँ आन भायाक  
पाठकमेँ रैनी उदसीन मानन जअ । जग भाया साहित्यक प्रति  
पाठकमे ओ भक्ति-सगागम ले ओग भायामे हविमोहन सन  
उपन्यासकावक पदार्पण अरन्धे क्रांतिकारी मानन जअ किएक तँ  
हिनक वचना शैलीमे ओ आकर्षण तँ अरन्धे अछि जेकरा कावणे  
उदसीन पाठक रज्ज मेले पोथि कीनि क२ पठरक लेन राब्य  
त२ जगत छथि ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसुविदेह

कथा क्रिस्वरक आभावगव जेँ निर्णय लेन जख त कन्यादान  
कोला विशेष कथाक राचक ले । मिथिला समाजक एकठा रिकठ  
रूढ़ा सतसँ महत्त्वपूर्ण संस्कार विश्व ठिके केन्द्र बिन्दु रैना क  
निखन लेन ए उपासनामे कथाक रैड कमजोब अछि । ऐसी  
जन्म लेत देवी मागकेँ ओकर विश्वाहक चिन्ता भऽ जागत  
हुनै । तँए संभवतः रब भेटैत ले रूढ़ा कनियाँ मागक  
उपासनामे उपासनाक आदि लेन ।

रावह अन्वयमे रिभक्त ए उपासनाकेँ कनियाँ मागक  
उपासना, सत्तागर्दीक दूनी, ताव केना पठन लेन, जहाज  
पवक गण-सगण, सोसाँपिक गीत, मिस्टेब सी.सी. मिथो जेठन  
समस्या, गण पवार्म, कौतुक, कन्यादान, चतुर्थीक वाति आदि  
शीर्षकमे रैठन लेन अछि । अतिम शीर्षक प्रेमराचक कि एक त  
दर्शनमैत्रिक ज्ञाता हरिमोहन सा धरि एकठा प्रेम जोड़ा  
उपासनाक गति श्री कएननि ।

नामकका आ नामकाकीक कन्या रूढ़िया उपासनाक नायिका छथि  
जन्मक विश्वाह टाडीचका मिथो सन मात्र कहनाक लेन मैथिलसँ  
होगत अछि । सी.सी. मिथो अपन संस्कृतिमे रिग रहस्य  
एडभास लेन छथि । जिनका अपन अर्द्धांगिनीसँ रहत बाम आनि  
हुनै । रूढ़ियाक जेठ भाय लेरती बसा ए जलेत हुनार, रूढ़ा  
अपन रैलिक भविष्य उन्नत कवरैक लेन मिथ्याक डोसिमे  
नैकि सी.सी. मिथोसँ अपन रैलिक पाणिग्रहण त कवरै लेननि,



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रूपा दृष्टीक बातिमे नर विराहित दंगति विष आहिक रवण  
केल विनग भ२ जागत छथि ।

मी. मी. मित्रा जे अपनार्ले कथला कान्ठे तँ कथला कानिदाम  
मन रद्वत मालेत छथि मत्तु जगि जेनाक बाद रूटियाकेँ छोड़ि  
भाति जेनाह । कोरवघरमे बहि जेनीह कलेत रूटिया ओग  
पत्रक मंग जे मी. मी. मित्रा लेखती कथक नाठुँ निथि छोड़ि  
जेननि । पत्रमे अशिक्षित कथक मंग शिक्षित प्रकथक  
विश्वगतकेँ निषित कथन जेन अछि । ए तबहँ अत कवरक  
जेन हरिमोहन जीक रैड आलोचना जेननि तँए समाधान कलेत  
द्विवागम निखरक जेन उगल्यामकाव विरशि भ२ जेनथि ।

हरिमोहनजी मिथिलाक सामाजिक अवस्थापन प्रभाव कलेत रूटिया  
मन अशिक्षित नाबीमे चेतना अगरीक प्रयास तँ कलेत छथि,  
रूपा अ विमवि जेनथि जे मी. मी. मित्रा मन पात्र आ ओकर  
संवादक जे कथ ए उगल्याममे प्रस्तुत कथन जेन ओ  
“मैथिली” पत्र आधार मानन जाए । ओले पात्रकेँ नायक रैलरक  
कोला प्रयोजन ले जेकरा मैथिली संस्कृतिमे जेन मात्र मिलन  
रा एठामक रैरस्थक कोला जेन ले हूँ । लिख “त्रेजुष्ट  
प्रतोह” कथक नायाकि मेहो रिदुयी आ एडभास महिना छथि  
पत्रक हूँक संवाद सतठाम थँषी मैथिलीमे छथि । मी.मी. मित्रा  
अंग्रेजी आ हिन्दी मात्र रैजेत छथि । मैथिली उगल्याममे आन  
भाषक एतेक रैसी प्रयोगसँ एकव अगल संस्कार केना



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रौचत... ? हविमोहनक सभसँ पैघ कमी ए उगल्यासक महतपव  
अरम्य ग्रन्थ नगा देनक ।

किहु मैथिली साहित्यकावक ए प्रवृत्ति बहन छन्हि जे जे  
हिन्दूक प्रयोग कएन जाए तँ बचना आव मावगर्भित मानव  
जाएत ओ लोक योग्य नसतह । हविमोहन रियस मर्ममे  
माँगन यथार्थक हृदयमूर्शी साहित्यकाव छथि तँए हिकामँ पाठक  
ए अपेक्षा तँ कथमपि ले बखनक । हाम्य समागमसँ हकत  
कन्यादानक मर्यादा उछ कोष्टक अछि । सी. सी. मिश्रा हिन्दू  
रिश्तेन्द्रियकावक साहित्यक शोधार्थी तँ छथि ह्रदा कन्यादानमे हूणक  
मृत्पात्र एकटा पाश्चात्य संस्कारकेँ जाणय रँना जोकबसँ रँसी  
ले । रूटिया तँ रूटिये छथि । मि. मिश्र जखन जित्ताशो केनहि  
जे कया तुम नर्मिग जानती हो... ? रूटिया मस्ये मोचनीह  
नवमिह तँ गामक कोतरौनक नाम छैक, देखु तँ भना हमवा  
कोतरौन नगा क२ गाबि पढ़ैत अछि.... ।

ए अरु अरनाकेँ लेरती बसा मस्ये भास केना सी. सी. मिश्रा मस्ये  
“ पाश्चात्य-जोकब ” क हाथमे सौपि देरौक निर्णय केनक । ए  
लेन लेरती बसा जीकेँ अपन अर्द्धांगिनी रँडगामरानी मस्ये नारी  
द्वारा मि. मिश्रक संग भुन कबरैए पढ़ैत छन्हि । ए तथ्यमे  
सत्यता सनकेत अछि । हमवा सरहक समाजमे रँडका गामरानी  
मस्ये नारीकेँ कतेक रौनाक पौतवाथनि रँषए पढ़ैत छन्हि ।



एक अर्थमे अ उपासक सरेन स्थिति सेहो मानन जाए जे  
सन् 1933 अमे जखन प्रथम रश्मि अशिकाशि लोक हमरा सरेनक  
समाजमे अशिक्षित जनता ओग कानक नाबीमे शिक्षा-विकासक  
एहेन कल्पना हरिमोहन पुर मैथिलीमे निश्चित ले भेल ।

लोक कथा वा उपासक किछ हूँ एकटा रैड सकारात्मक  
तथा तेरेछ जे लोक प्रतिक महिला पात्र सदिखन गतिशील  
बैत छथि, तैमि क२ मोटेत नवीक छट रैड कम ठाम देखएमे  
आएन । कथादानमे सेहो नातकाकी सँ द२ आरंभे बाणीक  
पैबक कथनविद्या अंगुवर्क दारि देनथि, क्रियाँ माय चमकि क२  
सैन उठैतक आ नातकाकी द्रुपमि क२ मोटेती खोलय नगरीन सन  
क्रियाशील महिला समाजक दर्शन हरिमोहन साक मैथिल संस्कृतिक  
आत्म आरलोककक संग-संग नाबी चेतनाक दर्शन मानन जाए ।

सुनहुनकाकी आ नातकाकी दुनु दिशाद्विी खूब नडैत छथि ।  
बोलाभास साक गेली सुनहुनकाकी गर्भरती छथि । नडैतक  
क्रममे गर्भ नगा क२ गेपत सेहो खागत छथि, क्रिया  
बुटियाक रिश्ताहक लेन ओरिआउनेमे हुनक सहभागिता कल कनियाँ  
मायसँ कम ले । एकटा “संयुक्त परिवारक” महत्त्वपूर्ण सक्न  
पक्ष मानन जाए । नातकाकीक प्रतोह रैडकागासराती शिक्षित  
नाबी छथि सदिखन कितारें संग नष्टैतक बैरानी रैडकागाम





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रानी कनियाँ रिश्राहक जेन टंगेवा ले साँठतीह । आ ले टुहिये  
मग रैसतीह, ह्रदा जखन महीन काज अर्थि सी. सी. मिश्राले  
रिश्राहक पुरी कनियाँसँ गप्प कवरौक जेन बष्टक कवरौक  
आरम्यकता जेन तँ लेरती वमन लिक्केसँ कनियाँक अलिय  
कलेननि ।

ठकरा जे ए उष्यासक अदना पात्र अछि ओकर माथक मोष्टरीमे  
भोगाथाय साक पगली मेहो राखलन छन्हि । ए समाजक कर्तु  
मत्क केकरो पएवक पगली केकरो माथपव ए समग्रगराद  
समाजक जेन कर्क क्रि ले मानन जस्य । तखन जेँ रएन  
ठकराक पुत्र जखन अघिकावी रैनि भोगाथाय साक मताक संग  
रैदना जेत अछि तँ अग्र आमणपव रैसन लोक अहना जागत  
छथि । ओना एहेन रैदवन परिसंथिति तँ हरिमोहनक उष्यासमे  
कथगति ले भेटैत किएक तँ हरिमोहन साक प्रति ब्रह्मरादी  
समाजक वृत्ति छन्हि । एमे समाजक कात नागन रश्मि  
ह्रनियाँ माय मन पेलबवनी आ ठकरा मन थरौस मात्र अछि तँए  
लिक उष्यास सम्पूर्ण समाजक प्रतिनिधि प्रति कथमणि ले भ२  
सकन ।

उष्यासकाव दलित रा पवदलितक मर्क मर्षि तँ ले केननि  
ह्रदा ब्रह्मणेमे डूट-नीट आ उतव-दक्षिणसँ फूर्व अरम्य  
छथि । हरिमोहन जीक माहक अरम्य भवमाग्यक गाममे छन्हि  
ह्रदा पौष्टक भूमि ह्रमाव रोजितपुव रैमनी भदमेमे, तँए  
भदमेक मर्षि आफन तँ अरम्य छथि । सतागाडीक दृमेमे ह्रमी  
सा कलक थथसि क२ रैजनाह-



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

“माणि निरयं रवक घंर दक्षिणे भव डुर्गहि तं हर्ज की... ?  
मेहो रैमी दुव नहि- दनमिह मवाय मँ टोदह कोमगव घंर  
डुर्गहि । ” मुनक चर्च तेनागव रिश्ताहक अग्रुआ अर्थात सत्तागामीक  
दनात कहैत डुधि जे माणि निश्च शुवगल डुधि..., ए सत्त कर्तु  
सत्तमँ प्रमाणीत होगत अछि जे जखन ब्रह्मा-ब्रह्माक मध्य  
मौलिक रिक्कता तँ मिथिनामे सम्प्रत्यवाद केना आरँय... ?

गर्भाव चिन्तनयोग्य रिक्काले हविमोहन जी हाम्यक माध्यमसँ  
चर्च कं उपायसकें लोकप्रिय तँ अरुमे रँगा देननि ह्रदा  
गर्भाव चिन्तनले हाम्यक रौबिसँ निपुत कएनासँ एकव उद्देश्य  
अरुमे अग्रुत भंर गेल । एकवा स्वयंयोग्य उपायसकावक  
अद्वैतदर्शिता मागल जाए ।

किन्तु समालोचकक तर्क भंर सकैत डुर्गहि जे हविमोहन जीक ए  
प्रतिक उद्देश्य समाजक रिश्ताले नागष्टे कवरैसँ रैमी “हाम्य  
समागम” कवरैक लेल डुर्गहि, ह्रदा ए तर्कसँ हम सहमति ले  
बथैत छी । कोना हाम्य जे समाजिक आ पारिवारिक समता  
आ शान्ति ले रँधित कवए ओ समाजक लेल कथला मरीकावर्ग ले  
भंर सकैत अछि । कानिदासचरित्रसँ प्रभावित सी. सी. मिश्रा  
बुद्धिदायक “रिपोतमा” रँगा कं मरीकाव कवताह, ३  
परिस्थिति उपायसक कमजोर पक्ष थिक । कहरी डेक-  
“रँड । मे ले कीजिए रँगाह-प्रति ओव रैव” ए रिश्ताकारी  
उपायसमे रिक्क परिस्थिति जेँ मात्र हाम्य समागमक लेल



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अ एन तैयारै उटित ले । एक उगल्यासमे समस्या आ  
दोसबमे जा क२ ओकब निदान आ बचसाकावक कमात्मक प्रति  
कथला ले मानन जा सकैछ । मात्र हँसरीक जेन सावखाडीनाथ,  
रैछूँक आ तौतबाह पंडित नमोनाथ सा सन पात्रक उगमस्थिति तँ  
प्रासंगिक हूदा हँसीक पात्र रँगा क२ बुटियाकै कोरबमे कलैत  
छोछाँ उगल्यासक अत देखाएँ नारी जातिक अगमानसँ रँगी  
किछु ले ।

ए सत कमजोब तथ्यासँ भवन बहनाक रौदो “कन्यादान”  
मैथिली साहित्यमे महत्त्वपूर्ण स्थान बथैत अछि किएक तँ  
पाठकगण ए प्रतिरुद्धि हिंसासँ सरीकाव क२ लल लुगहि ।

कन्यादानक लोकप्रियताक यौनिक काबा थिक ग्राम्या जीविक  
आधारभूत घटनाक चित्रणमे सहज यौनिकताक अग्रगण्य ।  
हाम्य समागम तँ स्राविक किएक तँ आ बचसाकावक प्रवृत्ति ओ  
प्रवृत्ति बहन छुगहि । हाम्यक क्रममे गंभीर दर्शन तँ हँसीमे  
उमिया जेन हूदा कोला ठाम साहित्यिक मर्यादा ओ अग्रगण्यपव  
ग्रहाव ले देखै मे अएन । आ उगल्यासकावक प्रांजल आ  
प्रतीक बचसागीनताक द्वातक मानन जाए । जखन रब अर्थात् सी.  
सी. मिश्री महिना मंडलीक मध्य रिश्तासँ पुरि पवीक्षण हेतु  
अरौत छथि तँ अपन नाँ सी. सी. मिश्री कहैत छथि । अणोमे  
महिना मंडलीक एकठाँ रौनिका सदस्याक छुटकी... तखन तँ रौपक  
नाँ रौतन मिश्री हेतगहि । अतिरादी प्रवृत्तिक लोक पव  
हाम्यक माध्यमसँ अग्रगण्य प्रभाव गायक रीति-विराजक  
अतिश्रमाक प्रवासपव सहज कपसँ कएन जेन । कन्यासँ मागक



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

उविआउल अध्याय पूर्णतः सहज मैथिल नावी समूहक सनकि  
देखैत अछि । एठाम अ पूर्णतः मौलिक आ रास्तरिक  
नछैत । संपादक भाया आ मोनीसँ सग्यै तऽ जागछ जे  
हरिमोहनजी अपन संस्कृति आ रीति-रिवाजकेँ आत्मात केल  
छथि ।

क्रमे..... ।

बसोपव अपन मतब [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब  
पठाउ ।



जगदीश प्रसाद मंडल

किछ बिहसि कथा

गल्लैल



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अद्वाक पत्तिन रवथा । मासठव सहाएँ आ रँड रौरू, दुनु गोठे  
एक मोठव मागकिमँ गामँ समावण्व जागत बहथि । माते  
किमोमिठव समावण्व तँ दुनु गोठे गामँ जाग अरै छथि ।  
थाणाक रँड रौरू ले कोठक रँड रौरू देरनन्दन आ हागसकुनक  
मिम्क धेमनन्दन । ओना दुनु गोठे मेहकआमँ रैनी गयेगये  
छथि द्वादा तेयो कनक कएन कपड । पत्तिन क२ एँरै-जेरै  
करै छथि ।

पाँचोशीमे मिहेमेवक नाँ एकठा नीक घरहठियाक कपमे लोक  
जलेत । ओना नाँडूँ तँ नाआँ डी, तगमे तँ कमी ले  
भेननि अछि द्वादा पवदेशियाक कमाग आ गमदिवा आरामक  
छलेत काजमे कमी तँ भगये गेननि अछि । उमेव रैनी भेल  
मामे खुशिये लागत बहे छन्हि जे भेल काज कमी बहन  
अछि । एक तँ पवदेशे भगल नर घरहठिया ले रँनि बहन  
अछि, दोसव हमी सभ जे धवला पाँच गोठे डी सएह कते  
समावँ ।

बैरुण्व गामे धरेशे करिते बुँदबुँदी पाँचि थुक भेल ।  
रँड रौरू डुगरवी करैत आ मासठव सहाएँ पाँचमे रैसन ।  
बुँ तँ गोठगव गडेत बहे द्वादा कम-सम । रीत-डेठ रीतक  
दुवीगव बुँ तँ कपड । मोखनहि छनि जागत द्वादा जते  
आगु रँडेत छनह तते मागियो रैमिआएन जागत । रँडेत-  
रँडेत मिहेमेव घर नग अरिते अँकि जाएँ नीक बुँमननि ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सङ्केतव गाड़ ी नगा दूनु गांठे सिहेमेवक दवरैज्जागव  
गहूँचमाह । दवरैज्जा कि मानक घब । अ पा घबमे मान  
रैलैत आधामे दवरैज्जा रैलैल । दवरैज्जा कि एकठा टोकी  
मात्र । सिहेमेव अगल दवरैज्जेगव । टावसँ टूटैत रूँमके  
निहावि-निहावि देखैत जे रौदमे हाँष्टे गेन अछि आ कि  
कोआ थोदल अछि । ह्मादा नगल मल पडि गेलनि आदा आरि  
गेन, घब कहाँ डाड़जौ । तखल दूनु गांठे गहूँचमाह ।  
टोकीगव उँठि सिहेमेव दूनु गांठेकेँ राँहि पकड़ि टोकीगव  
रैसलैत अगला रैसमाह । तडतड ीआ रैवथा शुक भेल ।  
कनग कनग कपड़ ीगव खटक टूँरौठसँ कपड़ ी दुगव लागै ।  
एक तँ रौदालेकेँ अगल मलमे दुख लागत तैकतनि जे केला  
मान खेपर तगपकसँ रुमाँ भोवी रैना दिअनि ओ उँटित ले ।  
दागे नगत तँ कि तेते, कोला कि केवा-दारीमक दाग डी जे  
ले छुँटत । ह्मादा रैड रौँरुकेँ ह्माँस रैजा गेलनि-

“अहाँक नाँउ पँटकोसीमे अछि सिहेमेव भाग, ह्मादा अगला घबक  
हातत एहेन रैलैल डी ?”

रैड रौँरुक रिटावसँ सहगत लागत सिहेमेव रौँजन-

“रैड रौँरु, गामसँ जाककेँ तगल गाममे काज रैदाँ गेल अछि,  
ह्मादा काजक धूनि तेहेन पकड़ि जेनक जे ठेकाल ले बहन  
जे रैवथा मास आरि गेल । आरि गामि छुँटैए तँ ले डाड़न  
हएत तँ गहूँचला तँ दगये देखै ।”



## झसाग पंडित

गामे रिखात झसाग पंडित छथि। ओह पंडित जिनकर  
रात झसागे पंडितक नाउसँ रिखात छति।

मर्यादा जातिक झसाग पंडित, माए-माएक कोवगाछ रैछा भेल,  
दोऊ जेह जेह जेह तीन मानमे माए आ मात मानमे पिताक शोहर  
केलनि। झसा रात-रिरातक श्रुत हल भेटि गेल बहनि।  
पिताक शोहर तीन मास पहिले रिखात भेल गेलनि। जे कही  
तीन मास पछुतथि तँ सिमिया गाड़ि जेह मास ले क  
परितथि, झसा भाग्य तँ भाग्य छी, से झसाग पंडितकेँ  
सुतबनि। जेकरा माए-राग बहे छै तेकरा तँ पोथी-पतवा  
काज दगते छैक जे रिष-भाग्यो-रागरेणकेँ सुतबनि।  
झसाग पंडित पिताक शोहर तीन दिन पछाति सम्भवकेँ  
अविश्रात काल पढ़नि-

“राबू, आर तँ यह सब ल माता-पिता भेला, हमरा कि  
हएत ? भाय-भोजागक हानत अपला गामे देखिते  
हेथिन।”



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जमागत प्रश्न स्वर्णि कमलाकांत प्रश्न भन्ने गेलाह । मल-मल  
रिटाव नगलाह जे रैथी-जमागत भाव उठैत तबि होग  
छै । हेव मल घुमनि जे तपिमाण तँ अनश्रैय छै होग ।  
रूदा नगले मल रैदनि गेनेनि । घी-जमाए तपिमा, जलिमा  
घबमे सिदहामे ली बहल भुखक नहनि जेव पकड़ छै तपिमा  
आगुक जिलगी रूमागकेँ जेव मावक । दोहबरेत राजन-

“ बाबू, किछ रैजनिखि ली ? ”

कमलाकांतक मल हेव रैछनि । पनीसँ पुछि जेव जकरी  
अछि, रूदा से थोनि कऽ केना समझैबमे जमाए नग  
राजरी । रैठेकेँ तँ पुछि जेव अछि । रूदा प्रतोह रैबमे  
पुछरै ल केनो आ रैथी-जमाए रैबमे किछ पछरै । मल  
रैनि ते रैजनाह-

“ दू भाय-भोजागकेँ रैजरी । आखि माता-पिताक परोड  
भेल तँ रएह सर ल माता-पिता भेलाह । ”

रूमाग दू भाँगेकेँ पछक । एक तँ ओहना लोकक घवाड़  
घठन जाग छै तगपव जँ रैठि जाए, ए के ली चाहत । दू  
भाँगेयो आ भोजागओ रूमागकेँ मास्रव जागक आदेशे दऽ  
देमक । गाए-लकक गिनाष तँ ठेहल-पाणि दुहाष ।

कमलाकांत संगे छए कहि पछनिखि-

“ कपड़ १-मता जेव । ”





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

झमाग- “है, है, जते सबधूआ कगड़ । अछि ओ जूँ ले नर लेरै  
तँ एठाँय मुसे-दिराव खा जखत ।”

एक तँ ओहिया झमाग सहजोन, तगपव सासुवक सिन्याय पछूँटि  
गेन । सासुवँ जूँ सारि-सबहोजिमँ गनपोथरिमे हाँव जाएरै  
तँ कोन जोवाडोबिरँना भेलौ । जहिया रिसरत बेथाक सगल  
दुबीपव दुनु दिगो सगल मैसम होगत तहिया अन्हाव-गजोतक  
रीट मेहो होगत अछि ।

पाट्टेस रँथक अरसथामे झमाग सासुवसँ झमाग पडित भऽ दूष्टा  
बिया-प्रता लल गाम आरि गेलाह । जहिया हूँठलो खगठाक  
जकबति समए पारै होगत छै तहिया झमाग पडितक जकबति  
गाममे आग भेल ।

मौसमी रौसाबीक जाणकारी दिख गाममे रँहवरौसा सभ ठाँह  
जखल सँ झमाग पडित स्वजनक तखलसँ मष्टिया तेन देनला  
कता जकाँ मसमे उड़ि-रीडि नलि गेलनि ।

जहिया समए निर्धारित छल तहिया कार्यक्रम शुक भेल ।  
अभ्यागती स्वागत सबकै भेलनि । रौबहो मासक मौसमी



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रौमावी आ ओगर्मा पथ-पवहेजक नीक जानकावी देनथि।  
गाममे नर हन भेटेन। रीचमे रैमन दूमाग पंडित सुलेप  
कम मियान देल बहए। संगमोबमे जहना लोक हनेनहो  
जगहन पंगे-पंगे पण्टि जागत अछि तहना दूमाग पंडित  
सेहो पण्टि जेनाह। हजमि ल हजमि उठि क२ रीचमे ठाढ़  
भ२ जेना। ठाढ़ होएते रैमनिहावक आथि पड नगमनि।  
दूनु हाथसँ मोनति रैना बथेक ओषावा दैत रैजनाह-

“अभ्यागत लोकनिक रिटाव उतम अछि, सबकेँ अन्नकवा कलैक  
टाहियनि।”

अगन समर्थन पारि राहबी लोकनि आबो अगिला रात सुलेले  
जिहना जेना। दूदा जे पहिले रोजत ओ छेब गाम-  
घबक थनक मति छै। उँ आथि, कास तँ दूमाग पंडित दिस  
सत देननि दूदा दूह घुँघोसहि बहना। दूमाग पंडित जेन धनि  
मन। कहिया लोक हमर रात सुननक आ देखनक। सुनह ले  
सुनह, मनक उदगाव छी, रैजरेँ कवरै। दूदा मगयो आथि  
तीरफ-पितामह जकाँ गहन देखि समहनेत दूमाग पंडित  
रैजनाह-

“आम-जाम्बून गनाकाक हाड़-पाँजव छूँछै, किसानी जेनामे साँप-  
कीड़। काँछे, हाड़मे पैसन जाड़केँ सेहो तँ देख  
पडत ?”



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

गौश्वर रक्ता रूमि जेकर सभ पोगड़ी रैजोवक दूना  
पोगड़ी स्वनि दूमाग पंडित अकरकमे पछि गेनाह जे  
लोकक पोगड़ीक अराज की छव । हम हँसी आकि हँसी  
हम ।



## देख दि

मृत्युसँ छह मास पुरि झलसब काकाकेँ रैछा नग मल उरिअननि  
तँ अमगले दिनगीसँ गाम रिदा भेलाह । परिवारसँ समाज धरि  
सभकेँ अचबज नगननि जे मलमे कि चढ़ा गेलनि जे अमगले  
एते माहस केननि । अमगले रिदा होगक कावण भेलनि जे  
रैछाकेँ पाँच दिन समय ले, एक तँ ओला रैकमे कम छड़ी होग  
छे तगव अगला कारोबार ठाढ़ केले छथि । पुरोह मज्जे  
पुरोह छलनि, भवि दिन एगब-कडिनिमे रैमि देख-रिदेमिक  
थेन देखरै आ माज-त्रिगाव जोड़ा दुनियाँमे किछ देखरै ल  
करै छथि । झदा झलसब काकाक माहसक कावण गेलो भेलनि  
जे एकछा पाड़ ी दिदनीसँ सकरी पहुँचा देतनि । सकरी तँ  
ओला घरे-अगला भेलनि ।

गाम अरिते झलसब काका देखननि जे घब-अगला तँ खँडहव  
भ२ गेल, कतए बहरै । अँडी-रैगहँडी, भाँग-धुवसँ भवन  
अछि । जखन रौलाह भेल तखन माँग-डुडनविक मंग रिठनी-  
गटेहिया हेरै कवत । राँग-गुक्खाक अहक दमो देखि दुख  
भेलनि जे जखन घरे ले तखन मल्लथ केना बहत । जखन  
मल्लथे ले बहत तँ राँग-गुक्खाकेँ के छिहत । मल-मल  
रिटाव डुंगव-मिछा होगते बहनि कि एक गोबेकेँ बस्ता गेल



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जगत देखनि । ओना दस मान पहिल देखनि बहनि दूदा  
मनषयोक बुनारैष्ट तँ अजरी अछि । जहिया रीस रैथिक अरस्था  
धरि राठि क आगमन बहेत अछि तहिया माठि रैथिक पढाति  
बोदियाहक ।

दुनु सएह तँए पुढिक जकबत दुनुकेँ भेलनि । कमलेशकेँ ए  
लेन पुढिक जकबत भेलै जे आन-गामक जँ बहिति तँ  
बसते-बसते एना, छनि जगतथि । ठाढ़ भऽ निहारि किअए  
बहना अछि । जखन कि दूलेसब काकाकेँ जकबी भेलनि जे  
जखन पुनरिणी गाम एलौ, परिवार छनि गेल तँ छनि गेल,  
समाजो अछि कि ओहो मेथी गेल । मोरागन जकाँ ले भेल  
जे अग्रुआ कऽ किअए लेण कवरै । पाग चवटा होग छै कि  
ले । ओग समादाय सदृश्य अछि कि ले जे अग्रुआ कऽ जेकब  
नजबि पड़त ओ पहिले अतिरादल कबत । दूदा भेल दोसरे,  
जहिया पनटेतीमे एक रंग अलको रँजनिहार राजए नलैत रा  
मोरागनेपव दुनु दिससँ दुनु पवानी राजए नलैत, तहिया  
दूलेसबो काका आ कमलेशो एके रँव दुनु दिससँ राजन ।  
आग्रह करैत कमलेश अगना एठाँस तीस दिसक अत्र्यागतीमे नऽ  
गेलनि ।

गाम-समाजक अनेन-समादावक रंग दूलेसब काकाक मनक  
जड़ि मे अगन परिवार नछए नगननि । कोन धवानी राँव, एकठा  
साधारण पोसष्ट मासष्ट बहि तीस रीया खेत रँलैनि । दस



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

गाम रीट एकठा पौमष्टे आहिम मनिआडवक कपेया अग्रआ-  
पडुआ, संग-संग जिनकब कपेया दिअ जाथ दु-टावि आषा ओहो  
देरें कबनि। आमादनी रैठल झलसबोकेँ पठ १-निथा हाकिम  
रैलोननि। तेसब पीठ १ चलि बहन डगहि। उँडी तबाजू जकाँ  
परिवारकेँ तौन बहना अछि जे एक पीठ १ (पिता) समाजमे की  
सब केननि। रीटक की भेल आ आग उँजडा-उँगष्टि गेल।  
जहिया चढेत जूआनी जिनगी हेबा जाग छै तहिया ल  
अरैत मृत्युकेँ लोग-भागक सेहो छैए नछै छै।

कमलेशेक घर देखि झलसब काका टीन्ह गेलथि जे ए उँ  
संगीएक घर छी। पडुनथि-

“रौड, परिवारमे के सब छथि ?”

कमलेशे रैजगार-

“तीन पीठ १क सब छथि।”

झलसब काकाकेँ आगु रैकाव ले फूँटनि। जहिया तकितो  
आथिमे ज्योति ले बहे छै तहिया भेलनि।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

गान्धीनिर

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ई बचलापव अंगन मतिर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पव  
पठाड ।



रौचन ठाकुर

महान सांघाजिक बैथिली नष्टक

राग भेव निन्ती

रौचन ठाकुर

गह्वि अंक

दृश्य- एक

स्थान- नखनक घर । दनापव नखन, नखनक कक्का  
मोतीना, भाए रौचनक रैडका रौचन मल्लज आ छोटका  
रौचन सतोय उगमथित छथि । नखन छित्तित द्वादामे  
छथि । सब क्रियो टोकीपव रौचन रिटाव-रिमर्श कए  
बहन छथि । रौचन रथीय मल्लज आ दन रथीय सतोय  
दनापव माष्टि-माष्टि खेन बहन अछि ।



मोतीनाम- नखन, चिन्ता-शरीकीव छोड़ू । की कबरे ?  
भगवान् के जे मज्जी होगत अछि, ओकरा के  
रिंदनि सकैत अछि ? अहाँ कमियाँ के एतरे  
दिनका भोग छेलै । आर अहाँक की रिदाव  
भर बहन अछि ?

नखन- कक्षा, अंगन सब जे जेना रिदाव देखै ।

मोतीनाम- हम सब की रिदाव देखै ? पहिले तँ अहाँक  
अंगन गच्छा ।

नखन- दूरी छोट-छोट रौखा अछि । ओकर प्रतिगान  
केना छेत ? जँ बन-कमियाँ नीक छेठेत तँ  
दोसब कइ नगर्तौ ।

मोतीनाम- भातीज, अहाँक नीक रिदाव अछि । ए  
उमेरमे अहाँक निर्माण हमरो उचित बुझना  
जागत अछि ।





रौहक- कक्का, एगो कहरी जे डै 'सतौत  
भगराणाके ले भेलो' से ?

मोतीना- रौखा, तौहव की कहरी डह ? नखणके रिखाह  
ले कबरोंक ढाली की ?

रौहक- हँ, हमर सलह कहरी बलह । डैया कशी  
तियाग कइ दुनु डोवाके पठ 1-लिखा कइ  
रुमियाव रँगारितथि । उना डैयाके कनियाँ  
केहेन भेटैतनि केहेन ले ।

मोतीना- हमरा रिटावसँ नखणक पविस्ति रिखाह  
करैरैना अरस्म अडि ।

नखण- कक्का, नजबिमे दइ देहो । जदी सब-पता  
नगए तँ जोगाव नगाएँ ।

बि एन ए विदेह *Videha* विदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* विदेह अंश योशिनो पक्षिक अ पत्रिका विदेह



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सोतीवाल- लेम देखि ।

गठोत्कृष्ट ।



## दृष्ट- 2

(स्थापन- मदनक घब । उ अगल रिश्ताहल ऐंठीक रिश्ताहल  
टिन्तामे लीन छथि । कातमे गली-गीता दनाल  
साडी बहन छथि । मोतीनालक समिक समिक  
हविचन मोतीनालकेँ मदनक अँठास कष्टमैतीक  
सँभमे नऽ जाए बहन छथि । हविचन मदनक  
ब्रामीन छथि हिनका दूक पहुँचैत यातव गीता  
बोय तनि अन्धर टलि जागत छथि । दनालपर  
तीन-चारिणी कसी नागल अछि । मोतीनाल आ  
हविचनक प्रेममे । )

हविचन- (कब जोड़ी ) नमस्काव मदन भाय ।

मदन- नमस्काव नमस्काव ।

मोतीनाल- नमस्काव कष्टम ।



मदन- नमस्काव नमस्काव । रैनै जाग जाई ।

(दूनु जन रैननाह ।

मजय, मजय, रैथी मजय, मजय ।

मजय- (अब्दवसँ) जी पिताजी, हगए एतौ ।  
(मजयक एतरेने । )

(हविचनकैँ मदन पकड़ि क२ अदव न२ जागत  
हुथि । )

मदन- नछि कालैँ रैथी दूगो छै आ अन्था-पाती ?

हविचन- जोठैक रीयाक अन्दरे छै । अगना भयि  
कोला दिकत ले छै ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

मदन- की कवी की ले, किछु ले यूवागए।

हविचन- हमरा सभकेँ जे होगए। यदि रिटाव हूँ  
तँ हुनका नई की देखाए दिगए। ले तँ कोना  
बौत ले।

मदन- रौस अगल दगावणव टवू। हम रूँछीकेँ जेल  
आरौ डी।

(हविचन दगावणव आरौ गेनाह किछुए काल बौद मदन सेहो  
आरौ गेनाह।)

मदन- टवू, देखन जेते। क२ जेरौ। आगु  
भगवानक मज्जी। हम नई कीक राग छि।  
तँ हमरा नई का देखरौके चली। हूदा हम  
सभ दिस अहाँपव रिग्रेस करैत बहजौ। आग  
कोना ले कवरै ?

हविचन- हम अहाँक संग रिसरासघात केजौ ?



मदन- सै तँ कहियो ले । ओना दुनियाँ रिसरासेगव  
चले छै ।

(रीणाक संग मीणाक प्रेमे । मीणा सभकेँ पएव डुरि गोव  
मलैत अछि । )

हरिचन- फसीगव रैसू रूछी ।

(मीणा फसीगव रैसैत अछि । रीणा ठाढ़ अछि । )

मोतीनान बाँरू, मड़ि कीकै किछ पुढरौ कबरैनि, तँ पुडियौ ।

मोतीनान- की पुढरैनि, किछ ले ।

हरिचन- रूछी अहाँ चलि जाई ।

(मीणा सभकेँ गोव लागि अन्दव गेलीह । )



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वमिह

मदन- हबिचन भाय, गढ़ा की अगल सभकेँ पमीन  
भेनीह ?

मोतीनाल- हँ, गढ़ा की हमरा लोकनिकेँ पमीन अछि ।

मदन- तहल अगिला कार्यक्रम की हेतै ?

हबिचन- जे जेना कबीण्ड । ओना हम रिटाव दैतौ जे  
रिखाह मदिबसे क२ लेतौ । टीग एण्ड  
रैम्प ।

मदन- कहिया तक ?

हबिचन- कहिया तक, छठ मंगली गठ रिखाह । काहिये  
क२ लिख । रैठि या दिन छै । कष्टमैती नगा  
क२ ले बथराक छली ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यविधि

मदन- भाय, गुवियाण कहाँ किछो छै ?

हविचन- जे भेलै सेहो रैठि या, जे लै भेलै सेहो  
रैठि याँ । आदर्शमे आदर्श ।

मदन- रैम, काबूके बहए दिओ ।

हविचन- जाऊ, जे भऽ सकय, गुवियाण कक । हम सब  
सेहो जाग छी । जय बामजी की ।

मदन- जय बामजी की ।

(हविचन आ मोतीनामक प्रस्थान । )

होली जे हेरौक हेतै, सएह ल हेतै । आप गच्छा सरनारी,  
देर गच्छा पकयैतः ।

पठिअकेप ।



बि एर रु बिदेह *Videha* बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह अथय दोशिनो आशिक अ पत्रिका बिदेह'



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,  
संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मानुषीमिह



### दृश्य- 3

(दृश्य- नखनक रैबिआतीक तैयावी । रब-नखन, मोतीमान,  
लौहक, मलोज आ सतोय मदनक उठाया ज्ञा  
बहन छथि । मदन अणन घबक कातमे एकठा  
शिर मन्दिरक प्रांगणमे रैबिआहक पूर्ण तैयावी केल  
छथि । सात गोष्ट कर्मी आ एक गोष्ट ठेठूँन  
नगन अछि । पंजीजी गणेश महादेवक पुजा  
कए बहन छथि । मदन, मीना, पीता हविजन,  
सजय आ रीणा मन्दिरक प्रांगणमे थहाथली कए  
बहन छथि तथा रैबिआतीक प्रतीका कए बहन  
छथि । मीना कनियाँक कणमे पूर्ण सजन अछि ।  
रैबिआती पहुँचलाह । डोममे बाथन पानिसँ सब  
रैबिआती हाथ-पैर धोए कए कर्मीपव रैसलाह  
आ नखन रैवरना कर्मीपव रैसलाह । रौपेक  
कातमे एकर कर्मीपव मलोज आ सतोय  
रैसलाह । मदन प्रांगणमे आरि जनथेक  
रैरस्था केलनि । सब कियो जनथे कए बहन  
छथि । )

मलोज-

पापा, पापा, नाट कथेन शुक हेते ?



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

तथन- धुव बुवबैक, अथेन किड नग रोज। लोक  
हंसते।

मलाज- किअए हो, लो हंसते त हंसते हंसते।  
कहः न नष्टा कथेन ठते ?

तथन- दुग दुग, नष्टा ले कली। नष्टा की ठते।

मलाज- कए गो नष्टा की ठते ? कार्कसुप्री कथेन  
शुक तेते ? नष्टा की मंगे हंसते नष्टा, गेले  
आ कमान नष्टा कः उष्टा। पापा हो,  
नष्टा कीके कहते खानी नष्टाडिगे हंस कथेन।  
अगरे नष्टागुवीयेन।

तथन- दुग रूड खट्टव डै लो। कार्कसुप्री ले  
तेते। डस ले तेते।

मलाज- तथन एत की तेते हो पापा ?



नखन- हमर रिखाह हेते रिखाह ।

संतोष- पापा हो, तोहब रिखाह हेते आ हमर ले ।

नखन- हँ हँ, तोबो हेते ।

संतोष- कहिया हेते ?

नखन- बमहब हेरैलीष तहस हेतो ।

संतोष- हम बमहब ले डिअ । एछुष्टी तँ भ२  
गेजिअ । आरि रिखाह कहिया हेते ?

नखन- रीस मान रौद हेतो ।



संतोष- रीस मान रौद रूठे भ२ जेरै तँ रिखाह कए  
क२ की हेतै ? हम आगये कवरै ।

नखन- आग तौवा जे नछा की कहाँ छै ?

संतोष- आँग हो पापा, तौवा जे नछा की छै आ  
हमवा जे लै छै । केकबानँ क२ जेरै ।

नखन- केकबानँ कवरिलेन ?

संतोष- योगी सभ ठुठै न तँ उगये जे सभसँ  
मोठकी योगी हेतै, उकलसँ कवरै । दूधो खुरै  
पीरै नमहवो हेतै आ मोठेरौ कवरै । पापा  
हो, हमवा लोकनियामे तौरे बहए पड़तह ।

नखन- रौस बहरौ रौआ ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

(जगमे गानि आ गिनाम नर कर मज्जयक थारेमे । सत क्रियो  
गानि गीननि आ हाथ-झूठ बाग अगन-अगन  
जगहगव रैसनाह । गीजीजी गुजा गुर्गाहिक  
गम्यात रैव नग रैस जगमे केनाह । )

गणेशे-

अहाँ सत बिर्लै किअए कले डी ? बिआहक  
झूठ हूँ बहन अछि । हो, हो, जगदी चले  
चल । कोना टीजक ठैम होग डे किल ?

(नरु कीक संग सबगतीक थारेमे । सत क्रियो  
मदिरगव केनाह । सतरगव रिद्धिअन दबीगव  
रैसनाह । )

गणेशे-

आँ नरु का-नरु की, हमार नग रैसु ।

(नखन आ मीना गीजीजी नग रैसैत डथि । गीजीजी दूनुकेँ अगन  
बामनामरैना चदरि ओठ । दैत डथि । दूनुकेँ  
हाथमे अबरौ चाँव आआवे कने दग डथि । )

गणेशे-

नरु का-नरु की गठु-

मंगलम् भगवान् रिया, मंगलम् गकडवरजः

मंगलम् गण्डरीकाय मंगलाय तलाहरविः । ।



नखन, मीना- मंगलम्..... ।

(गंजीजी तीन रोंव अ मंगल गठ । क२ अगला  
रंगममे बाथन सेवक भुजि गामे सँ एक छुठकी  
सेवक नज्जि काक हाथमे देननि । )

गणेश- रिश्वरक मूर्ति रीति बहन छन । तँए हम  
एकठा मंगल रिश्वर कवा दै छी । अर  
मिन्दुवदान होए ।

नज्जि का, नज्जि कीक मंगलमे सेवक दिख ।

(नखन मीनाक मंगलमे सेवक देननि । )

अर अगल सब दुर्लभत दिख ।

(गंजीजी पौष सरहक हाथमे दुर्लभत देननि । )

मंगल- हुँ. अ अरि अरि ।



मिवांशोदयस्तर ।

(मंत्रिक रौद सत क्रियो नर्डा का-नर्डा कीलें  
दूर्वाकित देवथि । )

वाड, दूनु समरि दक्षिणा-पाती । समुतेये अहाँ  
सत मिहि गेलौ ।

(दूनु समरि एकारण-एकारण ठेका दक्षिणा  
देवथि । )

अएह यो, एका किलो बहूक दास ले । खागव  
जाड ।

मदन- पंडीजी नर्डा की-नर्डा कीलें अमीवराद  
दिश्व ।

(नर्डा का-नर्डा की पंडीजीलें गएव डुरिं त्राम  
कलैत छथि । पंडीजी अमीवराद दग छथि । )

मोतीनाल- पंडीजी मोनसँ अमीवराद देखै ।



बि एन ए विदेह *Videha* विदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* विदेह अथय योथिनो पौष्पिक अ पत्रिका विदेह



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीयविह

गणेशे-

हैं यो, दक्षिण गुण ल अनीबराद भेष्टत ।

(सत क्रियो जा वरन छथि । )

गठोष्कग ।



## दृश्य- चरित्र

सुखान्न वसुधावक घब । वसुधावक दूध पने  
नक्षत्री आ सत्तरी घबमे हुनका सेरा क२ बहन  
हुनि । नक्षत्री पक्षमे दूगो रैठी-एगो रैठी  
हुनि । तथा सत्तरी पक्षमे एगो रैठी-दूगो  
रैठी हुनि । हुँ ताए-रैठि एक्क पर्विक  
बुनमे पढ़ा गेल हुनि । )

वामन-

नङ्गी सत गिया-पुता नीक जकाँ घबपव पढ़ा-  
निथे अडि न ? हम तँ तिसरव जाग डी से  
वातियेमे अरौ डी । पछेक पुजा तँ रैठि से  
पुजा डे किल ? हम ले पढ़ाओ से अथेन  
पढ़ताग डी ।

नक्षत्री-

डोड ।क नक्षत्री अथेन रैठि नीक देखे डिडे,  
अग्रिम जे हुँ । हमरा सतके पढ़ाओ कहए  
ले पढ़ा अडि ।



बामन- जोरकी, अहाँ किछ ले रोजे छी ।

मतोयी- दू गोठे एक रौब राजि देरै तँ अहाँ की  
सुनरौ आ की सुनरौ ?

बामन- कोना तकनीक अछि की ?

मतोयी- जेकरा अहाँ सन घबरौना बहते, तेकरा  
तकनीक तेते आ अहूँ सँ हेशेगब रोजकी  
छथि । सुनारी, एगो गप्प गुडी ?

बामन- एक गो किअए, हजार गो पुछिते बह ।

मतोयी- अहाँ, एहेन टिकल घबरौनीकेँ बहते दोसर  
रिअ ह किअए केनिअ ?



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बामनाम- रैडकीस रैठा होगमे किछ रैनर देखिअ तँए  
दोसब केनिअ ।

मतोयी- ले यो, दोसब गगन भऽ सकै छै ।

बामनाम- हमरा तँ ले बुझल अछि, अही राजू दोसब की  
भऽ सकै छै ?

मतोयी- अहाँकेँ अहाँकेँ अहाँकेँ एगोसँ मोन ले भवन ।

बामनाम- रैस कक, रैस कक, अहाँ तँ जान बुझलवि छी ।  
अहाँ तँ अतरंगि छी । ओना मोनकेँ जतए  
दोसरे, ओतए दोसरे ।

मल ही देरता, मल ही अग्रिब,

मल से रैड । न कोग ।

मल उँजियावा जरै जरै छैले,

जग उँजियावा होय । ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

(असकून पौषिकमे पौषिक प्रवेशे । )

मोशी- पापा, पापा, असकूनक हलिस दियो ।

बागलान- माएके कहियो बूछी ।

मोशी- माए, असकूनक हलिस दलिस ।

नक्षी- कठ हलिस नगतो ?

मोशी- तौ ले बूने छीली छथ गौ बिद्यार्थीक छथ अ  
छाका ।

नक्षी- छोटकी, जाड, द२ दियो ग ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वमिह

संतोषी- रैम लेल अरै डी ।

(संतोषी अण्दव जा क२ डुअ सए ठाका आनि मोलीकै देवनि आ  
लेव पति मेरामे तीव गेलीह । )

बामनान- छोड़ जाग जाड आरै । अगना-यव  
देथियो । अहूँ सभकै कली काज होग छै ।

(दुनु पत्नी छनि गेलीह । )

पठारूप



## दृश्य- पाँच

(स्थान- बागमनक घब । बगमनक ऋषियाक संग रैनदेरै राई  
सदम्यक प्रवेश । )

रैनदेर- (दगल पबस) बागमन बागमन भाय ।

बागमन- (अनन्दबेस) हगए एगो भाय । दगलपब तारे  
रैनस । जनथे कएन भऽ गेल ।

रैनदेर- ऋषियोजी एगह, कल जनदिये ऐरै ।

बागमन- तरल तुबन्त एगो ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

(हाथ-झूठ पोछिते धरेशि । प्रणाम-पाती कर अणदबसँ दूष्टी  
कर्मि अणनसि । बयाकास्त आ रैनदेरें कर्मिगब  
रैननाह झुदा बागनाह ठाढ़ छथि । )

बागनाह- झुथियाज्जी, आग केमहब सुकज उगलै ? आग  
बागनाह तबि गेल सबकाब । कहियौ सबकाब  
हम केना मल गड़लौ । अणवा आरामरैना कोना  
गप्प छै की ?

रैनदेर- गप्प तँ गएह छै । झुदा पहिल कशेल-छेम  
तहल ल अगिला गप-सगप । कहू अणल हान-  
सगाचाब ।

बागनाह- अणल सरहक किवगामँ हमर हान-सगाचाब रैछ  
रैछ गौ अछि । भाय, अणल हान-दान कहू ।

रैनदेर- भाय, एकदम दलदलाग छै ।





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बामन- श्री श्रुतिराज दीशिका ।

बमकात्- हमरो लन-दान रैड रैड या अछि । रएह  
एलेक्शन नजदीक छै तँ पचायतमे घुमनाग  
अ रश्याक रूमजो । संगे संग अहूँक काज  
बहए ।

बामन- तहए अगल किअए एजिअ, हमरी छल अरितो ।

बमकात्- देखियो, जनता जगदीश होग छै । पहिल  
जनता तहए हम । जनता श्रुतिराज रैड  
आशिम छल छै । ओग आशिक पूर्ति केनाग  
हमर पबम कर्तव्य छै ।

बामन- अगल महल छिअ । अगलक आगु हम की  
रैजरो ?



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रैनदेर- ऋथियाजी, कल ओकरो एंठाग जागक डै ।  
हिनकव काज जन्दी क२ दियव ।

बमाकात्- तरुण द२ दियव ।

(रैनदेर रैनस रीम हजार ठाका निकालि बामनानकेँ देनथि । )

बामनान- (गाँट स१ ठाका निकालि) ऋथियाजी, ए अगल  
बाथि लिउ ।

बमाकात्- ले, ए ले भ२ सकैए । ए अगल बथियो ।  
हमरा पोँठ ले रूँते हँड डै । कहरी डै-  
ओतरेँ खाग जगसँ मोढमे ले ठैकए ।

बामनान- भगराण, एहेन ऋथिया सगतव होग डै ।

रैनदेर- बामनान भाग, जतए-ततए खुले डी अहाँक  
परिवारक सँधमे । तँ मल हर्षित भ२



जागै । एहेन स्रग्दर ठगसँ परिवार चलेनाग  
आग-कालि असँभर अछि ।

बामन- सभ भगवानक किरण भुनहि आ अगल कबतर  
तँ चारै कबी ।

बमकागत- हमरा लोकनि जाग डी । जाड, अहूँ अगल  
काम-काज देखियौ ।

(बमकागत आ रैनदेरक प्रस्थान)

बामन- धन्यवाद रैनदेर भाग, धन्यवाद ऋषियज्ञी एहिना  
सभ जनतागव विश्वास बथारै ।

पठामेप ।



दृश्य- छर

(स्थान- नखनक घब । मीना अगन रैछी बागपती आ रैछी  
ग्रन्थक संग रैछिछिन तेन बहन अछि ।

बागपती- मची, कमि क२ मावलीन ल । काँकि ले उँड  
छे ।

मीना- रैसी कमि क२ ले नछे छे । कम-मँ-कम  
रौं छकाँ रँगकाली ल ?

(मलाजक प्रवेश)

मीना- ओह, एलौ सबधूआ भाँडले ।

बागपती- आरैए दलीन ल मची । भायजी छवि ।



मीना-            भायजी छथि । कगपाव छथि । कर्कि झुष्ट  
जेतो तँ आनि क२ देतो ?

बाबाजी-        ममी, भायजी कतए सँ आनि क२ देते, तौली  
कह तँ । आकि पापा आनि देखि ।

मीना-            पापाकेँ हम जे कहलै, मे कबखुं । तौह  
कहल लै कबखुं ।

बाबाजी-        ममी, अ गग तौह लीक लै भेलो आ  
पापाकेँ लीक लै भेलनि ।

मीना-            तौ पँटोती करैले एतँ की रैडिष्टन  
थेलैले ? थेलरौक छौ तँ थेल लै तँ जौ  
एतँसँ ।

बाबाजी-        तौली सब थेल, हम जाग छी ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

(थीमिया क२ बागवतीक प्रस्थान । बागवतीरना रैष्ट्रम गलाज  
रैडिष्टिण खेनए नलीत अछि । मीना रैष्ट्रम  
उकवा मारेल डैष्टिण अछि । खेव दूनु माग-  
प्रत रैडिष्टिण खेनए नलीत अछि । )

प्रश्ना- ममी, तौवा दीदी जकाँ खेनए ले होग  
डो । कल पागारै कहरीन सीखा दगले मे  
ले ।

मीना- लौआ, पापा हमरा की सिखेनखुन, हमरी सीखा  
दग छि ।

प्रश्ना- तेकब माल तौ पागाम जेठ डीली ?

मीना- उमरमे भवहि डोष्ट हएर हृदा अकनमे  
निश्चिते जेठ ।

(संतोयक प्रवेश)



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

संतोष-

हमनूँ खेनरौँ प्रया। (रैष्ट नर कर खेनए  
नलोत अछि। सछसँ मीना संतोषक हाथसँ हाथ  
घोटावि कर रैष्ट नर लोत अछि। दुनकीरना  
आ रुड गिऊकआ कहि रैष्टसँ मारेल दौलोत  
अछि। संतोष भागि जागत अछि। गुणपव  
थीमिया कर प्रया एक रैष्ट मफौलैँ रैसा दैत  
अछि। )

प्रया-

तौँ रैड खटव डै मफौ। खेनन-तेनन  
होग डौ नहियैँ आ जमरौँ डै। अथेन  
संतोष भागजी बहते तँ खुम रैडरिष्टन खेननौ  
की लै।

मीना-

संतोषीरौ तौहव भागजी लै छिउ। जेकव  
छिउँ से रूमते। तौवा गुकरासँ कोला मतनर  
लै।

प्रया-

किअए मफौ ? उलो तँ हमले पापाक रैष्ट  
छिउँ ल ?



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मीना- झुदा तौलव मागीक रौंठी ले ल छि ।

प्रयणा- बूमरीलीन तँ किअए ले हेते ? ले बूमरीलीन  
तँ हगछ-हगछ तौलव दुमन छि ।

मीना- रँकरास ले कव । कहि जगमलें आ बूठरा  
जकाँ गप्प करै छै । सब रात तौ अखै  
ले बूमरीलीन । आरँ कहि थेलिहै छ ।

(रौंठ-काँकि न२ क२ मीना-प्रयणाक प्रस्थान । )

पठोक्कप ।





अंक दोसव

दृष्ट- एक

(स्थान- बागमनक घर । सौतोयी  
रिम्तवपव पड़न अछि । पाँट भाय-  
रहिन गमकुन गेल अछि । झुदा मोली  
घरेपव अछि मोलीक तरीयत ठीक ले  
अछि । )

सौतोयी-  
तै ?

मोली रूट्टी, कली देह दरो दिअ

मोली-

हमरा अगले साथ दुखाए । तैए गमकुनो ले  
गेलो । अख धरि रामिये झूठे छी । खेव  
अहाँ तै छोटकी साथ छी । अहाँक अन्नक पानन  
केनाए हमर पवम कर्तव्य छी ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

संतोषी रूँट्टी अहाँ रूँट्टीयाव डी ल ।

(सोनी संतोषीक देह दरोए बहन अडि । )

सारेटी- डोष्टकी माए, रँड तूख नागन-ए, कनी खागले  
दिख ।

संतोषी- हमरा ले हएत । जाड अगलसँ नर  
लिख ग२ ।

सोनी- एक दिन अही कहल डेखिँ, अगलसँ खागले  
कहियो ले नगले । मिया-पुताकेँ घटि जाग  
छे । तँए हम अगलसँ ले जेर ।

संतोषी- लिख रा ले लिख । हमरा रूँते ले हएत  
देन । अगला देहमे कलौआ नागन अडि ।

सोनी- जाग छिँ रँडकी माएकेँ कहले ।



(मोनी, नक्षत्रीकै कहल अक्षर लोनी एम्ह  
मोनी ओव गरदिआ क२ गछि बहनीह । मोनी  
आ नक्षत्रीक धरमे । )

नक्षत्री-            छोटी, छोटी, छोटी ।

मोनी-            अथल जगल छेलै । तुवनेत देखली । लो  
माए मूतन लोक ल जलैए, जागल की  
जगलै ।

नक्षत्री-            (जोबसँ) छोटी, छोटी, छोटी२ २ २ २ ।

(मोनी हूबहूवा क२ उँटै छथि । )

मोनी-            की कहनिं दीदी ?

नक्षत्री-            मोनीकै अहाँ किअए कहनिं, देहमे कलौआ  
वागल अछि ?



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

संतोषी- हम से कहाँ कहलियं । हम अगला  
दर कहलियं जे हमरा देहमे कलौआ नागन अछि की ।  
एतरेणव बुद्धि भाषि गेलीह ।

मोनी- अगल रैठीक माथगव हाथ बथि कर कहलें ?

संतोषी- हम रोजरें ले लेलियं । एतेक आगि  
किअए उठलें छी मोनी ।

मोनी- आगि तँ अहाँ उठलें छी आ नगरें छी । हमले  
माथगव हाथ बथि कर राजू तँ ।

संतोषी- हँ यै साँट रात किअक ले राजरें । आँ, नग  
आँ ।

नक्षत्री- बुझि गेलौं अहाँ कत साँट रोजे छी । अगकव  
रैठी-रैठी उंगलेमे अरें छै आ अगल रैठ



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

कसैरै क२ छै । निर्मज्जि रहितन । मूठ  
रैजैत कोला गतवसे बाजो ले होग छन्हि ।

संतोषी- निर्मज्जि तँ अहाँ छी जे रैथीक पक्ष न२  
क२ खेपिया क२ छै छी ।

नक्षी- निर्मज्जि निर्मज्जि कवरै तँ अखैस मोछी  
पकड़ि क२ मोछी निकालि देरै ।

संतोषी- कशी देखियो तँ मोछी पकड़ि क२ ।

(बागमनक प्रवेश)

बागमन- अहाँ सभ कतीले हल्ला-हम्लाद करै छी ? छुपे  
जाई । छेछकी, की रात छै ?

संतोषी- दुनु माग-धीन हमरा कहै, मोछी पकड़ि क२  
मोछी निकालि देरै ।



बासना- रैडकी, अहाँ से किअ कहनि ?

नस्ती- हँ हँ, हमरा सौग रैडकी गेलै तँ दूखलै ।  
उकलै प्रछिँ तँ ।

बासना- की रात छै छेँकी ?

मनो- उकलै मनेँ प्रछियो ।

बासना- की भेलै रूँटी ?

मोनी- हमरा माथा दूखाग छेलै । असकुलै ले  
गेलौ । रामिये झूँटै बली । छेँकी माएकै  
कहनिनि थागलै दिअ । तँ उ कहनि, अगलै  
मने निअ । देहमे कलौआ मगल अछि । अ



रात रैडकी गाएकेँ कहनिगि तँ ओ गाएसँ  
नङ्गेले तैयाव छथि ।

बामन-

हमरा तौवागव रिश्राम अछि बुद्धि । तौ बुद्धि  
ले राजि सके छै । हम रात बुद्धि गेलौ ।  
भेष्टकी, मोनहनी अहाँक गनती अछि । रैडकीसँ  
अहाँ गनती गाव । ले तँ एहेन यावराती हमरा  
ले छली । अगल जोगाव देखु । जेहल हमर  
परिवारक सुखसुखक चर्चा सौमे गाम होत  
जेहल तेहल परिवारक प्रतिष्ठाकेँ गाँठमे  
मिनरै छलित अछि । तुवन्त मोटि कऽ रैडकी  
की छलित छी ?

मतोयी-

(किछ मोटि कऽ, रैडकीक गएव पकड़ि )  
हमरेसँ गनती भेलौ । आर गनती कहियो ले  
हेतै ।

बामन-

रैडकी, आग माफ कऽ दियव । आग दिसँ  
गनती ले कबतै । सदिखन मीनि कऽ बहे जात  
जात ।

“जहाँ स्वर्गति रहाँ सम्पत्ति नाहा ।

बि एन ए विदेह *Videha* विदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* विदेह अथय योथिनो पौष्पिक अ पत्रिका विदेह



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जहाँ कर्मति रहाँ रिगति निधाना ।”

पटोष्कग ।





## दृश्य- दु

(स्थान- नखनक घर । नखन दाननपर रौमन  
डुधि आ पारिवारिक स्थितिक संरक्षणे मोटि बहन  
डुधि । )

नखन- की कवी ले कवी, किडु ले हूवागत अडि ।  
रौमनी बागवारी मेहो ताडु जकाँ रौमनी बहन  
अडि । आमदनी कम छै आ परिवारमे खर्चा रौमनी  
छै ।

(मलाज आ संतोषक प्रवेश । )

मलाज- गागा, रौमनी छै । सब गमकून जाग छै  
पठले । हमरौ सब जाग्रै । हमरो सबकै  
नाम लिखा दिख ले सबकारी गमकूनमे ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

तथन-

नाम लिखलैये पाग नगटे, कितारै-कोपीये  
पाग नगटे, धीमेन पठैये पाग नगटे ।  
हमरा उतेक सकवता ले अछि । हमरा रूते ले  
हेतौ । पहिल प्लेक टिप्ता कव ।

संतोषी-

पागा, बागपारी आ घुम्मा जे परमिक अमकुन  
जाग छै मे ? उकरा सबलै पाग ले नली  
छै ?

तथन-

मे मफाई प्रभुली गर । पाग कोला हम दग  
छि ।

संतोषी-

मफाई रैजा क२ एत२ आन । कनी अगलस  
करैनि ।

तथन-

जो रैजा आन ।

(संतोषी शीघ्र मीनालै रैजा क२ अलेत अछि ।)



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मीना- की कहे छी ?

नखन- की कहै । मलोज-मनोय कहै हमर पढ़ै,  
से की कवै ।

मीना- कपगाव कवै, अंधेवा कवै, धधकनहा  
कवै ।

नखन- एना कथै रैजे छी ? रौनीमे कनियो नमि ले  
अछि । हवदम निशोमे दूब बहे छी ।

मीना- रैड हठव-हठव रैजे छी । झूठ रैन कक ले  
तँ रूमि निख । जाड अहाँ एतएसँ । एकवा  
सभकेँ हम जराँ दग छि ।

(नखनक प्रस्थान)

की कहै मलोज ?



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मलाज-

मामी, हमरा सभकेँ गमकुनमे नाम लिखा  
दिअ रहते छौड़ । सभ गमकुन जाग छै ।

मीना-

रैड़ पढ़ आ भऽ गेलै तो सभ ? गाँड़ि मे  
गुँह ले माथ ले रहगुरै । रिला ठेए ले  
पढ़ १ग छै की खेलाग होग छै ? पेट भरे  
छौ उँह खुवाग छौ । एतऽ सँ अवयन भाग ।  
ले तँ रैड़नी देखे छीनि । कमा कऽ नाऽ तँ  
थो रा पढ़ । ले तँ घर ले छपि सकै छै तौ  
सभ ।

मलाज-

मामी, हमरा सभकेँ कमाणे छेतै । जन मे  
ले बथतै ?

मीना-

ले कमाणे छेतौ तँ तीखे मँगिलै आ ठाहरे  
रहिलै ।

सतोय-

अगला रैछी-रैछीकेँ पढ़ लि ले होगए आ  
हमरा रैबमे की होगए ?



मीना- भगलै सबधु सभ की ?

(रैठनी नर कर मालेल दोगन । सत्राय भागि  
गेन । मलोज गकड़ । गेन । “ गठ् आलै  
साव अछि भगलै एतए सै” कहि कहि मलोजलै  
मीना रैठनीसँ सँठनक । अन्तमे हाथसँ डूष्टि कर  
कलैत-कलैत भागि गेन । )

गठ् ए । हलकठैमे गठ् । गेन होग छै ।

(हकमैत-हकमैत) डुंगलमे अकुआ हकड़  
छै ।

पठोपेग

ए बलगाव अगल मत्र [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) गव  
पठाऊ ।



कृपाव भास्कर

## वधुकथा

### नडुमिनीया

अगल सान्ने सगले नडुमिनीयाँ । बुढिया-थुलियाँ सगले सरैछा  
डिडा भाषा नरकनिअ स२ छै । माँस अजिया सरैँस सरैँ रैड  
काया-कष्टस२ धनरीत अवजल छै, आ ओछि स२ रैसी जे ओ  
सरैँ ओकरा रैछा संयोगि क२ बथल छै । दै-दियादमाके सरैँ  
थेत-पथाव रिका ठोल छै आ एकव बुढिया सरैँ लौदियो  
अकानमे, मोदीयो निराहमे एकौ ठाँ जमीन रैछल ले छै ।  
तेसबसे अगल सरैँछा थुँ बुरि एकवा पढ । क२ पाम कवा देल  
छै । तैँ जहो आग एतेक कोजनी टोतरी । एँ रातके थुँ  
अ अगल दूनु थुँतेहके थुँतेहके कगमे दिअ छै छै, से  
पठनाही-लिखनाही सरैँ अगल ठाँ छै क२, एकवा रात पव  
काल-ध्यान ले दै छै ।

जेहल बहै नडुमिनीयाँ माँस, रात-रात पव हकवा सुनरैँ रानी,  
तेहल ठाँ डिडा एकवो छै । ओहिना रात-रात पव झूँह स२  
हकवा-हदका निकनि जाग छै ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X, VIDEHA

मानवीय

उना नडुमिनीयाँके घबरैना पबहसब, रौंठा कयैआ तैयो  
नडुमिनीयाँके रैड दुथ । दुथ थाय पियरके, पहिबः उठःके  
नग, दुथ काज-बाजके । जलकपुवमे बह तः गामके आ  
गाममे बह त जलकपुवके चिन्ता । गते दुथ बहे छै । आग  
गामके सर आग होते तोडि जेल, सर बरी-बाग होते चवा-  
जेल, आ कहि जे साँटे किछ तोडि जेल, चवा जेल बह त  
जते सः देखे ततैसः शुभ भः जः होमियारःके- “कहे  
हुनिये मरदरा के हम आगये गाम जाग छी तः लोक देनक,  
नग हमरा मिष्टिमे जः पडते कनि धोती-फवता धो दिअ ।  
मूठोके मिष्टि-माष्टिमे जागत बहे । एको कपैया त दे  
ले हग आ ओहि मिष्टिना दु-दु दिन अगते सँ अगला निथा-  
पत्री करैत, हगन-हगन करैत, रौंठान बहेय आ हमरा धोती-  
फवता त ग थोजी दे त हुं निकालि क ध दे करैत-करैत  
पौडल बहेय । हम कहि आएन बहिति त अते बाग-छिग  
होगत, जेहे थैति मेहो त कया-मयरा झुडैति मे नग ।  
एगो हुवो जे हग ओकवा कहत बहे छिये मे ले रौंठा जो  
कनी गाडी-रिबडी, बरी-बाग सर देखनीहे आ तुवहु अगन चलि  
अगते मे ओकवा गाम अरैत तेना राय गिबैत बहे हग कि  
कथी मे ले जागन ।

नडुमिनीयाँके घबरैना पबहसब हग तहुके ओकवा रैड दुथ ।  
ओकवा हिमारे जते काने मिष्टि करैत ओते कानमे त थेत  
जोता जेते किछ राग क देते जलिसः किछ उरजो-रावी  
होते, ओकले रैटिकः तौउ कपैया होते ।

अहिना सरदिन जकाँ कहि होगत भनभनागत जलकपुव  
आएन । घब नग गहुते घबक आगु-पाडमे बहन गाड, नती  
सतके ठेकालेत, रिचालेत आएत आ कहुँ कोग किछ तोडल  
त नग ह । आ कहि जे कोलो किछ घटेन बहन तः घबके  
दुहागले सँ रौंजः के शुभ कवः नागन “देखी कहि क गेन



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हुनिये एकवा सरके अगल अगोवा पछोड़ । तले बहिये ।  
तेयो अतेक लोक घबसे हग आ एगो नक्किया ले हग त  
सर 'जब-जबो सर चवा जेनके' ! सरहे तोडि जेनके' ।  
सरैष्टी हमर कएन-धएन नाशे तऽ गेल ।

अते सुनिते रैष्टी-प्रतद्ध सर हाँग हाँग कऽ दोगल आर की  
भेले ? जेठकी प्रतद्ध कहे- हम तकिते छी । कहाँ, केड  
ले किडमे भिडले ।

—“ले कोगजे भिबले त ओग बहरीमे एगो कम केना हग ।”  
नक्किया राजन “गाम जए रैबसे हम देख कऽ गेल हुनी  
तऽ तिगष्टी छले आ अथनि दुगष्टी हग ?

बुठिया आलो ले थिसिया जए ते डले छोटकी प्रतद्ध राजन—  
“ए ड त हम ओकवा सवियारऽ जेनि छ तऽ एगो डाठि छुँटि  
गेली ।

तर जऽ कऽ नडमिसियाँ किड छुँटएन । तऽ भेले जे तो  
अगल सवियारऽ गेल हुनी, हे बहियाँ !

नाँ प्रणे नडमिसियाँ अतेक रैहान रैष्टी-प्रतद्ध ना बहए । किड  
नारए त रिडन-रिडन घबरैना, रैष्टी-प्रतद्ध नागि बाथए ।  
अगला कनहे-कोतरे, रैनीआन, रिगबनहे थाँ लिए ।

रैष्टीके लोकबी दोसब सहबसे भेले त चारि पाँच दिन अगतेस  
सब-सगलके मोष्टी, रौवा ओसियारऽ नागल । नून-हवदी, दानि-  
चाँव, रैतन-रौसन, ओछान-रिडान माल कते कद्ध घब परिवाबसे  
जे जतेक टिड-ज-रित मली छै तेकवा सरके ओसियायोन  
बुठिया हकवा पब हकवा पठेत कएल गेल ।





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“एन नएनी रैन नएनी, डू घेना तेन नएनी..... । नून तेन  
सँ न२ क२ कण्ड १ नता तक ओरिआ-ओरिआ धव२ नागन जे  
कहि किछ रैठा-प्रतद्ध के डूँठै नए जए । रैठा-प्रतद्ध कहए कि  
जे टिज-रित डूँठै जएते से ओते किन जेरी । नडुमिनीया  
अनमएजे “जे त धव तौरा ओते सँ टिज तेठेतो त”  
कहनक ।

नडुमिनीयाके सैतन किछ कहि डूँठै, मात्रे एगो घब दूहावि पौड  
नागि प्रवाण-धूवाण कण्ड । कत२ स नाँ । रैठा मोचनक आर  
घलेस२ कोण अएते त ओकले स माडा जेर जे मागके कहि दे  
डिये । प्रतद्ध कहे नग माग कहि पिता जएते । रैठा कहए  
एह नग पिताते । रैठा नडुमिनीयाके हणन कएनक “माग काला  
प्रवाण-धूवाण कण्ड । घब दूहावि पौड ना चाहि केडूँ अएते त  
पठा दिहे” । नडुमिनीया रोजके नूक कएनक “ऊँ तहिया  
कहनिचो ठकाणी-ठेकाणी क२ समान सर बाख२ त नग आथिब  
डूँठै गेलो । जेतो फाँटन-प्रवाण नूआ डूँठै जे हम  
जायनगवमे किनल बहिये सेलोक त२ दोकानरना ठकिए जेल  
बहए से रैठा नूआके त कालिए ओग रैठनरानीसँ रैदलि जेनि ।  
तेहण दूँठै बहै ओहो रैठनरानीसे ओतेकठोके नँ मागमे किनल  
बहि तेकवा एगो कठेवा मात्रे देनक ओहो कते नगडि तर  
जा२ क२ देनक । तो पहिल कहिते । अछा थमा: अग  
डूँठै गेलो हग जे ऊँ लै पेलै हग जेकवा कहै रैठ प्रवाण  
त२ जेतो से हम पठा देरो । आर बाख हणनके रिन रैन  
डूँठेतो ।

एकर नडुमिनीया ।” के रैठा जे आधा घंटा सँ प्रवाण कण्ड । ना  
हणन कएल डून से कहनक “अछा होतै”, ओकरो आर कोला  
दोसब रियनगव किछ प्रुडके मल लै तेन आ हणन बाथि  
देनक । आ अणन कमिया जे तखनस२ नडुमिनीया माग कि



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

कहने के मे रूस २ जेन डेस्क डन। तकवा दिसी घुमि क  
अपन जेरी मेले कमान डकवा द २ क कहनेक "होर्ड तारे  
अहि न २ क काग टनाई"।

ई बचपन अपन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब  
पठाई।



१. उम अकशि-भोथ हथियाव/रिहनि कथा-



बीम ठोका २. गेवुधन असाद मार- मैथिली महिना आ



खिदी ३. केनास दास-महिलाक लेवक कथा संग्रह  
"खिदी"

१



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



उम प्रकाश

१

### लेख हथियाव

श्री सुबेन्द्र बाथक कहल मैथिली गजलक संग्रह अछि "गजल हमर हथियाव थिक"। ए पोथी मे हुनकर अडमर्छि ठी गजल प्रकाशित भेल अछि। ए संग्रह २००+ मे आबल अछि जकर आरम्भ श्री अजीत आजाद जी निखल छथि। ए पोथी केँ आदि सँ अन्त धरि गठबन्धन रौद्र हमर यैह अतिम अछि जे गजलक बाकबन्धन दृष्टि सँ ए संग्रह मे अलको कमी अछि, जहि सँ रचना जा सकैत छल।

पृष्ठा संख्या १३, ७१ आ १० पवक गजल मे चारिये ठी मेव छै, जखन की कोला गजल मे कम सँ कम पाँच ठी मेव हेरौक छली। संग्रहक कोला गजल रैहब मे ले अछि। हमर ए सम्पन्न मनतर अछि जे गजलकाव केँ एकर गजल मे रैहबक उल्लेख कबौक छली आ जे आजाद गजल कहल छथि तँ गहो सम्पन्न कर्षे निखरौक छली।





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X, VIDEHA

मानवीय

सीमासँ रौहव आरि शैद-र्यागाव कबरौक छली" । ह्रदा गज्जनक  
अपन राकवण छै, जकव पानन केल रिना बचना गज्जन ले भ२  
क२ पद्य मात्र बहि जागत छै । गज्जन आ करिताक रीटक  
अतब जे अतब छै, से ए तबहक तर्कसँ समाप्त ले भ२ जाग  
छै । काहिया, बदीह आ गज्जनक राकवणक अग्रगण्य ले हेरौक  
कावणै श्री सुरेन्द्र नाथक ए संग्रह गज्जन संग्रह ले भ२ क२  
एकठा पद्यक संग्रह भ२ क२ बहि गेल अछि ।

सुरेन्द्रनाथक भुव पव किछु बचना नीक अछि आ जेँ गज्जनकाव  
गज्जनक राकवण पव पेशाण देल बहतथिन्ह, तँ नीक गज्जन  
निधि सकैत छलाह । गज्जनकावक ए पहिलक मैथिली गज्जन  
संग्रह रहूत आस तँ ले जगलैत अछि, ह्रदा हृषकव सुरेन्द्रनाथक  
प्रतिभा देखैत हम ए आस जकव करै छी जे ओ गज्जनक  
राकवणक पानन करैत आगु नीक गज्जन कहताह आ "गज्जन  
हमब हथियाव थिक" कै चरितार्थ कबताह । गज्जन तँ हथियाव  
होगते अछि, ह्रदा हृष काहिया, बदीह आ रहबक नियमक  
पानन केल बचना गज्जन ले होगत अछि आ भोथ हथियाव भ२  
जागत अछि । पद्यक हथियाव पव काहिया आ रहबक साध  
छठन हृषकव नरै गज्जन-हथियावक प्रतीक्षा बहत ।

२

बिहनि कथा

रौस ठोका

हम भोले भोले उठि क२ अपन रंगीटा मे हुनक गाढ सरँ कै  
पछरौ छनहुँ । कवीरँ सात-सरा सात रोजैत हेते । तारत



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सडक दिस सँ हो-हम्मा स्वागत । हमर गिराम झूठा सडक  
काते मे अछि, तेँ सडक पब होय रँना सरँ घटना आ दुर्घटना  
देखागत आ स्वागत बहे । हम हम्मा सुनि सडक दिस  
ताकनहुँ । देखे छी जे हमर फाँटकक ठीक मागल मे एकटा  
मिनी ट्रेक लागल अछि आ ओकरा आगाँ एकटा सिगाली  
मेथेबसाइकिल नगा कऽ ठाठ अछि । ओ सिगाली ट्रेकक ड्राइवर  
केँ गवियोल जागत छल आ ट्रेक जखन कवरक धमकी सेहो  
दऽ बहन छल । सिगाली कहलक- "ला गेट्रीक ठीक भऽ गेल  
छे आ तौ सरँ ट्रेक गेहब मे टुका देनली । आरँ छन थाना,  
जखन तेहो ट्रेकक । तौवा सरँकेँ बुझल ले छौ जे सात  
रँजेक बाद ला गेट्री भऽ जाग छे । " ट्रेक पब पाछाँ मे  
एकटा महीन छल आ ओग महीनक संग एक गोठे ठाठ छल जे  
कल कडगब भऽ राजन- "यो सिगाली जी, एखन सात राजि  
कऽ पाँचे मिथे भेल छे आ हम सरँ गेहब मे जखन टुकल  
छिये तखन पोल साते राजे छले । आरँ ग ला गेट्री  
कोन भऽ गेल । गेहब मे टुकरा कान ओतका सिगाली जी केँ  
नजवाला सेहो देल छिये, अहाँ योराइल सँ हेलन कऽ कऽ  
बुझि गिये । " आरँ तँ सिगाली जे रँकन से ले पुछ । सोल  
ड्राइवर नग गेल आ राजन- "पाछाँ मे ओकीन छेल छी  
की ? माव हमरा कानुन माडे । ओकरा तँ जे हम कवर से  
केनाक बाद बुझते ओ ..... तू चाही ना, ट्रेक जखन  
तेहो । सात राजि कऽ दस मिथे भऽ गेल छे आ ला गेट्री  
मे ट्रेक टुका कऽ कानुन डाँटे जाग । " ड्राइवर अँ नागलक  
प्रवाण खेला छल । ओ हाथ जोडैत कहलक- "सबकाव, कथी  
नए तमाग छी । ओ मूर्ख छे । अहाँ हमरा सँ गप कक ल ।  
हे ग निसऽ दस ठीका छल पाणक थर्चा आ हमरा जाग दिसऽ  
रँड दूब जेरक छे । " सिगाली कल नवम होगत ओकर हाथक  
ठीका दिस अर्द्धता सँ ताकेत कहलक- "हे लो तू होशियार  
बुझागत छे, झूठा दस ठीका सँ काज ले छनते । रँड महगी  
छे, रीस ठीका निकल । " ड्राइवर राजन- "पछिला टोक पब



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पाँच जेनथिन्ह सिंगाली जी आ अगिलो टोक पब जेने कबथिन्ह ।  
एकठो महीसक पाछाँ कतेक जगह कठेरै अहाँ सरै । सबकाव  
पएव पकटे छी, अहाँ एहि सँ काज चला नियः । " सिंगाली  
गवसागत कहलक- "छन थाना । ठाँगम खवाग ले कब । लौहनी  
लैव मे भोले भोव सरैछी नशि ले कब । तोहव दिगाग  
ठेकाना पब ले छौ । " आरै ओ डाँगरव रूमि गेल बहे जे आ  
सिंगाली माले रैना ले छै । ओ तबत रीस ठाँका निकाललक आ  
सिंगाली दिस रैलक । सिंगाली टाक कात देखेत झुप्टी मे रीस  
ठाँका दूरलक आ टेतारनि दएत कहलक- "जो भाग जन्दी,  
तोहव नमीरै ठीक छौ । रैडा रौबुक नजबि मे जँ आरि गेलनी  
रौड तँ ओ रीस एक सय केँ ले छोडथूँ । हूँकब योर्गिग  
राकक सय भऽ गेल छै । आरि ते हेथूँ केसरो सँ । " आ  
कहत ओ सिंगाली अण्ण मोठबसाङ्गकिन गम्हाई कलक आ रिदा  
भेल आ ट्रेक सेहो दस गिठक घेयाँडज आ रीस ठाँकाक  
दक्षिणाक रौद गभुरा दिस चलि देलक ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



श्री. अनन्द कुमार

### मैथिली महिला आ जिन्दी

मैथिली भाषामे प्रसिद्ध प्रकाशक अर्थात् बहन समाजमे हरा  
पत्रकार स्वर्गीत कृपाव मा मैथिली साहित्यिक क्षेत्रमे एकठा नर  
आयामक कगमे स्थापित भऽ बहन छथि ।

पत्रकारिता सभ रातु पेशा सँ जुड़न अरम्भमे सेहो साहित्यिक  
क्षेत्रमे सेहो डेग बाखर अगल आपमे कम भारी रौत नहि  
बहन अछि ।

उतरे नहि तीन तीन महिनामे प्रसिद्ध प्रकाशक कबराक उद्घाटन  
कवर आ सफलता सेहो प्राप्त कवर आजीवजी रौत नहि अछि  
।

पहिल कथा संग्रह 'टिड' क माध्यम सँ मैथिली साहित्यमे प्रवेश  
कएल स्वर्गीतक दोसव प्रति 'विपोर्ट' डायरी आ एकव किछु  
दिसमे प्रकाशित भेल कथा संग्रह 'जिन्दी' सेहो उतरे  
लोकप्रिय बहन अछि ।

जिन्दीक पहिल कथा "हून फुलाए कऽ बहन" कथामे मैथिली  
भाषा संग भऽ बहन बरहावक प्रश्न कगमे देखाउन गेल अछि  
।

एहि कथामे महिना संग हुनक प्रति स्मृतिक बाँधक कऽ विराह  
कलित छथि हृदा पतिक रातुरिक अरम्भ आ हसिगत देखनाक  
रौद कथाक नायिका अस्तव्यस्तमे पलित अछि हृदा अस्तमे  
गम्भीर भऽ मौनक रौद महर्षि निर्णय नऽ हुनक पतिद्वारा





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मासपत्रिका

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

देखन गेन सर्पाकै प्रवा कवय ओ सफल भेल छथि । ओ  
कथा पठनाक बाद हमरा कानी दस सक्ता आरि जागत छथि ।  
हमको जीवनेकेँ महत्पूर्ण रीतिरएमे हमक पनीक महत्पूर्ण भूमिका  
बहन छति । मिथिलाभूमिक कतेको राष्ट्रिकेँ कानी दस  
रितीरएमे एखला हमक कनिया सहायक भऽ बहन छति ।  
तहिना 'नर रागाव' कथामे योगी पात्र जितेन्द्र प्रसाद आ  
आधुनिकताक ऐश्वर्यमे दुर्लभ कनिया रीतिक अस्वाकैँ स्पष्ट छिप  
छति । एहि कथाक माध्यम सँ परिवारिक कलह आ कथित  
आधुनिकता परिवारकेँ तहसलहस कऽ सकैत छति तँ परिवारमे  
मेममिनापक रीतिरए होरि पब जोड देल गेल छति ।  
तेसर कथा 'खाली घर' परिवारिक जीवनेमे होरि यरना उताव  
छतारि आ उतन प्रथमकेँ देखावल गेल छति ।  
खाली घर कथामे परिवारिक जीवनेक महत्त्व नीक जेकाँ कथाकार  
देखारि सफल भेल छथि । जेहिमे होम नहि थमरि दाली  
एहि कथाक संदेश छति ।  
'मान कितार' कथामे समाजक प्रवास मोट आ त्रुटि  
प्रतिकेँ रिश्तासकेँ सेहो देखोल छथि । हृदा स्वर्गीयक  
कहनाक अन्दाज गजब छति ।  
जिन्दा कथामे एकठा महिलाक महत्त्वकाँ आ ओहि सँ उल्लेख  
होरि यरना परिस्थितिक देखोल छति । तँ ओहिना हमक माए  
अपन ओठकेँ प्रवा कवय लेन रीतिरए आगा रीतिरए छथि ।  
अभिभारकेँ मियाप्रतापव नियन्त्रण आरम्भ छति ओ संदेश  
कविर कविर एहि कथापब लागू होगत छति । हृदा कथाकार  
ओ स्थिति महिलेपब कि ए दुनयि से नहि रूमिसकनहुँ । ओ  
महिलाकेँ रीतिरए सेहो एहि घटनामे सहभागि कऽ सकैत छथि  
।  
'मिथिला की देखारि' कथा समाजमे आधुनिकताक नाममे पसरल  
रिश्ताकेँ नीक जेकाँ प्रस्तुत कवय सफल भेल छथि ।  
एहि ठाम महिलाक अपन पतिक मूँ सँ रीतिरए पतिक मूँक बाद  
कोना स्वर्गीय आ नीक जेकाँ बहरी ताली रीतिक छिन्ना बहैत



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हुँहि ।

तहिना 'केहन सजाय' कथा सेहो रँहूत नीक अछि । एहि  
कथासे समाजसे बहन अपराधी सभ उपव होरँए रँना सजाय आ  
देशिक कानूनी व्यवस्थाले देखारय खोजल अछि । तहिना  
'मेलका' आ अन्ध कथासभ सेहो एक पव एक बहन अछि ।  
कोनो कथा आलोचना कय जेहन नहि अछि ।  
स्वजातिक कथा संग्रहसे बहन भाषा शैली, कथाक रँनारँष्ट रँहूत  
नीक अछि आ आग मैथिली प्रेमी सभक जेन रँहूत रँसी  
लोकप्रिय कथा संग्रह रँनए से आगि करैत छी । ओना हमरा  
रिश्वास तऽ अछि । मैथिली भाषाक कितारक अतारै बहन  
समयसे आरि बहन स्वजातिक कथा संग्रह सभ अहिना लोकप्रिय  
रँलैत बहत से कामना अछि । एहि सँ मैथिली साहित्यप्रति हरा  
सभ प्रेरित तऽ हेरै कवत संगहि मैथिली पाठकक सँख्यासे  
सेहो रँढोतबी हएत । स्वजातिक टाकि प्रतिक प्रतिष्ठासे  
हमरा तऽ बहरै कवत ।  
लेखक खोज प्रकाशिता केन्द्र काठमाडू सँ आरह छु छि ।

३



केनास दास  
पत्रकार, जनकपुरवासी



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

## महिलाक लेबक कथा संग्रह 'जिन्दी'

समाजके परिवर्तन, रिपुति आ रिमर्गति बहिन राताकाक निर्माणमे  
साहित्यके महत्वपूर्ण योगदान होगत अछि । हमरा एतेक  
भूमिका निश्चयके पाछ मैथिली भाषाक हरा साहित्यकार एर  
पत्रकार स्वर्गीत रूपार मा तेसर प्रति कथा संग्रह 'जिन्दी'  
पठनाक रौद नागन । हुनकाद्वारा निश्चित कथा संग्रह 'जिन्दी' मे  
१२ ठी कथा बाखन गेल अछि । ओना कथा निश्चयक काज गहन  
अध्यापन टिप्पण आ नयाँ समयक साधना रीना समुद्र नहि होगत  
अछि । रूदा कथा निश्चितकान लेखकके लेखन समय समर्पित,  
सामाजिक रातारका आदी अवसिभके ध्यान देरैए पडैत अछि  
। तहिमे हरा पत्रकार तथा कथाकार स्वर्गीतरूपार मा  
नगलतग सफल देखन गेल छथि । ओ एकठा कथाकार मात्र नहि  
छथि, विभिन्न सहायकाध्यामे काज क२ क२ अवसर प्रोत्साहन कवराक  
गङ्गा एहि कथा संग्रहमे देखन गेल अछि ।  
कथा संग्रह 'जिन्दी' महाराष्ट्रकान्तर्गत सँ सलक थोजी करैत  
अछि । एहक कथाके एहिना रँठाउन गेल अछि जे पाठक  
पठैत-पठैत आगा कि हएत कहैत आश्चर्यमे पडि जागत  
अछि आ कथाक अन्त होगत अछि । डा. राजेन्द्र रिमलक  
शेर्माके स्वर्गीतरूपार कथाक घटना परिवर्तन जागितिग छि जेकाँ  
एक दोसरकेँ कटैत, ओसरकेँत सोसरकेँत आगा रँठैत बहैत  
अछि । कथाक तीव्र समसगागत जागत अछि आ अर्जुनक नम्र  
भेद जेकाँ स्वर्गीत आँखिमे मात्र भेदल करैत अछि ।  
'हुन हुनागए क२ बहन' कथा उँच रुचनीय, सुशिक्षिता नायिका  
पीकी अन्तर्वद्वन्द्वमे फसल बहैत अछि ।  
पीकी एगए पास कएल अछि । रैठी कतरौ पठन निश्चय कि  
नहि होगक दोसरकेँ घबमे जाए पडैत छैक एह रूमि रैठी  
रैसी पठारैकेँ आरम्भकता ओ समाज नहि रूनेत अछि ।



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रूपा पीकीक मायराबू रैठी रैठी सगल लोगत अछि कहि एहि  
थिथालै तौडराक थियाम क२ अगल रैठी पीकीकै एमए धरि  
पठरौत अछि । जखन पीकीक मायराबू बिराहक जेन सगतवा  
रैबक थोजी करैत छथि त२ नडका पक्षक अतिभारकसत  
पीकीक पछागक सहबू नहि रूमि दहेज मँलौत अछि ।  
पीकीक मायराबू मँग अघुमार दहेज नहि द२ सकलापव पीकीक  
बिराहक उमेव रिठैत जागत अछि । एक दिन पीकीक राबू  
जेन यात्रा कएल बहथि । ओहि क्रममे सृजति हरा मँ भेटैघाट  
लोगत अछि आ ओ नडका अगल सहायक सृशेन मासुव बहन  
परिचय दैत अछि । पीकीक माय राबू पीकीक ससुराक टर्मा ओ  
नडका मँग करैत अछि आ सहायक सृशेन मासुव बहन नडका  
ओ कथा सुनाव करैत अछि ।

अरुब पीकी सैलो सहायक सृशेन मासुव सुनिक२ अगल  
भाग्यानी डी सममि हरित बहेत अछि आ बिराह सैलो लोगत  
अछि । किछ महिनामे पीकीकै सत यथार्थ जानकारी भ२  
जागत अछि । जे नडका हुनका मँ सहायक सृशेन मासुव  
कहि क२ बिराह कएल बहेत अछि अगल ससुरा समर्पण कएल  
बहेत अछि ओ नडका सृशेन मासुव नहि एकठा साधारण पेटैमैन  
बहेत अछि । सुननाक बाद पीकी किछ समयक जेन फतरिफत  
भ२ पागल जेकाँ कवय नलौत अछि । ओकरा आँथि मँ मिय  
गाएँ भ२ जागत अछि आ बात भवि मोटिते बहि जागत  
अछि । पीकी अगल मोनमे ठामि लेत अछि जे थोथेरौज  
नडका मँग नहि बहर ? ब्राह्मन भ२ जागत अछि ।  
बातभवि ओ नहि सुतैत अछि ।

होब भोव लोगते मोटिते अछि आरु हम कि कक ? ससुरा  
रिद्ध कएनाक बाद कतए जाऊ ? सबक लोकसत कि कहत  
? एहिमे मायराबूक कि दोष ? धीरे धीरे हिनात जुष्टी  
मकम्प लेत अछि केहना भेनाक बादो अगल श्रीमानकै सृशेन  
मासुव रैनाए क२ छोडरै । हुनक श्रीमान् एमएनसी धरि यात्र  
पठन बहेत अछि ।



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हूणका काष्मसमे नाम एडमिनि कवा अगला एकठा रौडिअ  
सुनमे लोकवी कवय नलोत छथि । सात रयमे ओ त्रीमानकेँ  
एगए पास कवरौत अछि तकवरौद हूणका सृशेण मासुवमे निशुअ  
होगत अछि । सात रयमे हूणकामतकेँ एकठा रौठी सेहो  
होगत अछि । अ कथा पठनाक रौद काली दामक घष्टेना सवण  
अरौत अछि । काली दामक सेहो धेवाक सात कमिअ छन  
। एहि कथामे सेहो कवीर-कवीर एहल सँदेने बहन अछि ।  
'नयाँ रागाव' कथामे लोगअनु नायक जितेन्द्र प्रसाद आ  
महलकाँका हूणक त्रीमती रौदक अरसुकेँ छिण कएन गेन अछि  
। अतिमहलकाँका कवण लोक कतए छनि जागत अछि से  
एहि कथामे देखाओन गेन अछि । तहिना तेसब कथा 'थानी  
घब' मे परिवारिक जीरणमे होरैएरौना उथन-पुथनकेँ रौठिया सँ  
छिण कएन गेन अछि । संगहि एकब निश्चय परिवार सँसुकेँ  
रौठाओन गेन अछि । एहन कथा 'आदर्श' मे सेहो अछि ।  
रिराह सँसुकेँ तौडना पब अस्तुतः गढताए पडैत अछि । दुनू  
कथाक निश्चय बहन अछि । 'नान कितार' कथाक माध्याम सँ  
तुतथेतक रौतकेँ देखाओन गेन अछि । रिजेल कतए सँ  
कतए गहुँट गेनाक रौदो तुतथेतक कथामत आरि बहन अछि  
। 'जिंदी' कथा एकठा महिनाक महलकाँका आ ओतए सँ उपेख  
परिस्थितिकेँ देखाओन गेन अछि । अगल नहि क२ सकन काज  
रौठीक माध्याम सँ कएन जा बहन अछि । एहि काव्य माय  
रौठीकेँ हलक गढा पुवा करैत अछि । अ हलक गढा रौठी  
रातिटाकिनी आ दूर-गसनी भ२ जागत अछि ।  
'मिथ्या की देखार' कथा आधुनिकताक नाममे देखन गेन रिजुति  
दिन सँकेत कएल अछि । एक गोठे महिनाकेँ पति सँ रौनी  
पतिक मूक रौद अगल केषा स्वस्मित बहर तकर छिन्ना बहैत  
अछि । रतिमान समयमे समाज कतए छनि गेन आ ओकर नहि  
नीक अरसुकेँ छिण कएन गेन अछि । 'केहन सजाय' कथा  
संग्रहक सभ सँ रौठिया आ कमजोर दुनू अछि । जे कथा  
एहिमे उठाओन गेन अछि ओ गजरौकेँ अछि । रुदा एकब



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अन्तिम निश्चयके कथाकाव स्वजीत स्वकाष्ठ रैलरौक ग्राममे  
आगिके ठंढा क२ देल छथि ।

‘मेनका’ आ ‘जादू’ कथा सेहो रैलिया अछि । समग्रमे  
कहल जाए त२ स्वजीत कथाव साक कथाक रियस टयन, रैलरौक  
तथा भाया गेली रैलिया अछि । हुनक पहिन कथा संग्रह टिड्ड  
सँ शुरू भेल यात्रा उडाव भडि बहन सकेत द२ बहन अछि ।  
रूढा साहित्य साधनाक रियस अछि । जतेक साधना कएल जाए  
फल ओतक रैलिया प्राप्त होएत अछि । तँ साधनाकेँ  
निबन्धनता देबै पडतहि ।

ई बच्चापन अणन मतर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब  
पठाउ ।

हम प्रेक्षित छी



शशांक साँ

चन्दन कथाव साक पणिस

चन्दन कथाव साँ अणलक जूड र साहित्यक संग कोणा भेल ?



**शुभाथ मा :** साहित्य जूड़ र त२ डाव-जीरल सँ डन ।  
हमर पिताजी पं.गुणनाथ मा सेहो साहित्यकार डन । हुनकर  
तीनटा प्रति प्रकाशित सेहो भेल डनहि । हुनकर निखन  
"भक्त गोरिन्ददास" आ "वक्त गोरिन्दक पत्र" ग्रन्थानय सँ  
प्रकाशित भेल डनहि । ई दुनु पोथी गोरिन्ददासक जीरणी  
डलेक । एकव अगरे "सहोदर वृहत गल्प" सेहो प्रकाशित  
भेल डनहि । हुनकर निखन "दाहन्डा" आ "सैरा हरिश्चन्द्र"  
एथला अप्रकाशित अछि ह्मदा पाण्डुनीणि एथला उपनट्ट भ२  
सकैत डेक । ई पोथी सब आर हमरो नग उपनट्ट नहि  
अछि । भ२ सकैत डेक जे दरभंगाक पुस्तकनयमे कतह  
होगा रा पं.हृदनाथ मिश्र "अमर"जी नग सेहो भ२ सकैत डहि  
। ई पोथीसभ जखन प्रकाशित भेलैक तखन हम न्नातकमे  
पठ-त बली आ हमरी एकव ग्रुप देखल बली । ओहि समयमे  
साहित्य पठरौक कटि त२ बहए ह्मदा साहित्य-लेखन हम कोनकाता  
एनाक बाद प्रारंभ कएनहूँ ।

**हृदय कथा मा :** अहाँ कोनकाता कहिया एनहूँ आ एतय मैथिली  
साहित्य आरंभक सँ कोना जूड़नहूँ ?

**शुभाथ मा :** हम दिसम्बर १९७३ अग्रीमे कनकता आयन डनहूँ  
। तारीख हेटैक २३ रा २४ दिसम्बर । ओहि समयमे हम  
एम.ए. द्वितीय रैंकक डाव बली आ एतय एरौक ह्मदा-प्रयोजन



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हुन आगाँक पठ १७ कवरै । जीरणमे पहिन रैव कोला  
महाणगव देखनियेक । कनकता प्रथम दृष्टि रैड नीक नागन  
। एठाँम हमर प्रथम ठेकाण रा रौमा हुन भराणीपुव । जतए  
स्र. जयदेर नाभक ठेक बहहि । हम हुनके नग बनी ।  
उतए हम मात्र तीण-चारि दिन बहनहुँ आ एहि क्रममे स्र.श्रीकांत  
मंडन भैँठ भेन बहहि आ हएव ओ हमर पकमहि भैँ गेलाह  
। हएव किहु मास हुनके स्रग रीतन आ कानक्रममे कतेको  
रौमा रैदमन तकव आरै ठेकाणा नहि अछि । ओही समयमे  
श्रीकांतजी सँ जे गप्प-सग भेन बहए तकव निघेव जै कही  
तऽ यह हुन जे मैथिलीमे आधुनिक नाटकक पकम अंतर  
हुनके जखन कि रैँठनामे सँ प्रकावक नाटक निखन गेन आ  
मटित होगत हुनके । श्री प्रवीर दूधजीक नाटकन "बाजा-  
साजा" सँ श्रीकांत जी जुड़न हुनाह । प्रवीरबाँर स्रग नाटककाव,  
अभिलता आ निर्देशक हुनाह । ओ मैथिली नाटक सभक  
निर्देशन सेहो करैत हुनाह । हमर "पाथेय"के सेहो ओ  
निर्देशन कएल हुनाह आ एकव उल्लख यादरखुव रिप्रेजिन्टानस सँ  
प्रकाशित नाटक-संकलनमे सेहो अछि । प्रवीरदाके नाटकक नीक  
पवथ बहहि । एहि तबहै हुनका सभक गोष्ठीमे श्रीकांतजीक  
संगे अरैवजात भैँ गेन आ कनकता अगनाक रौद शीघ्र हम  
मैथिली नाटक गोष्ठी " मिथिला कला केन्द्र" सँ जुड़ि गेनहुँ ।  
रौदमे एकव मंत्री सेहो भेनहुँ । रूदा एहिक्रममे पकमशिक्षण  
प्रबोधबाँरुक अथक प्रयासक रौदो हमर अर्पुण पठन-पाठन  
टिबदिलक जेन अर्पुण बहि गेल आ एनआर्गमीमे कार्यवत भैँ  
गेनहुँ ।

चन्दन क्वाब मा अहाँ नाटक-लेखन दिने कोला आकर्षित भेनहुँ  
?





**प्रस्तावना सा :** कनकता अलाक राद एहिठामक मैथिलजनक स्थिति देखे मोषमे जेना उड़ि-रौंछी नागि गेन बहए । दबतंगा धरि हमरा अ त्राण नहि बहए जे हमर समाजक लोक एतेक निराश्रय, एतेक अकिञ्चल आ पबदेशीमे एतेक अरहेलित सन जिनगी जिरैत छथि । एहिठामक मैथिल-मैथिलीक अ दृष्ट हमर निम्न जेना तौड़ि देनक । मोषमे रैब-रैब हूँ जे स्रज्जनक एहि दुर्दशाक प्रतिकार हेतु किछु करी । एहन संयोग तेलेक जे एकदिन वासनिहारी मोड़ पब हएव रएह रौत उठल जे कहियो त्रीकांत जरी कहल डगल । स्र.स्र.खदेर ठाँव कट कए देनखिह जे मैथिली भाषामे आधुनिक नाटकक लेखन नहि तऽ सकैछ । ओहिदिन अ रौत जेना हमरा मोषमे गड़ि गेन । मोषहि मोष अंग जेनहूँ जे हम लिखै मैथिलीक आधुनिक रियस पब नाटक । रियस हमरा नग बहलै करए । आ मे एकरहि मासक अरमिमे हम मधुगालिनी आ पापेय लिखनहूँ । ओना एहिँ पुरि हम कथिग-प्रतवा लिखल बली दूदा ओकरा हम अगलहूँ आधुनिक नाटकक श्रेणीमे नहि गलैत छी । हमर आधुनिक नाटक-लेखन यात्रा मधुगालिनीँ प्रारंभ भेल । हएव हम कथिग-प्रतवा, शेष शरीर, आजूक लोक, नान रूमरूम, सातम चरित्र आ जय मैथिली लिखनहूँ । महाकवि रिद्धिपति नामक एकछी एकांकी नेहो लिखल छी दूदा आर सौटैत छी जे एकवा पूर्णिक नाटक रैना दियेक । एहि नाटक सतक कतेको रैव गलैत भेल । एकव अगले हानहिमे रौंछना एकांकी नाटक-संग्रह जाहिमे रौंछनाक २४ छी नाटककारक २४ छी एकांकीक संकलन अछि, तकर रौंछनाँ मैथिली अखबार कएनहूँ । अ पोथी साहित्य अकादमी दिगीँँ प्रकाशित अछि । दूदा अगल लिखन नाटक सतमे मात्र “पापेय” प्रकाशित अछि नेहो आर रैज्जामे पोथी उपलब्ध नहि छैक । हमरो नग मात्र एकरहि प्रति



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

बाँचन अछि । मधुसूदिनी आ सातम चबित्र लोकगीत नामक नाँठ-  
पत्रिकामे प्रकाशित भेल बहए ।

**उद्देश फ्याव मा:** नाँठकक अगार अगल कोला आन रिधा मे  
किछ लिखनियेक ?

**गुलाथ मा :** हाँ नाँठकक अगार हम किछ करिता आ आनेथ  
सेहो लिखनहूँ । अ सब रिभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे छपन जेना  
पठना सँ प्रकाशित "मिथिला मिहिर"मे आ देरघरसँ प्रकाशित  
"बुद्धेश्वरी" मे ।

**उद्देश फ्याव मा:** अहाँ मिथिलाती नामक नाँठ संस्था सेहो शुक  
कएल बही तकर मादै किछ जानकारी देन जाऊँ ।

**गुलाथ मा :** जखन हम कमकता आएन बही तहियो आगए  
जकाँ मिथिला-मैथिली सँ संबंधित अलक संस्थामे छलैक । ओहि  
समयमे दयानंद ठाकुर एकठा नर नावा देल बहथिह जकर छटा  
एथन कतहु नहि होगत देखेत छी । ओ कहनथिह जे  
सभसंस्थाके एकीकषा कएन जखन हूँ ओहि समयमे हम एहिरीतक  
रिबोध कएल बहियेक । हमर मानस बहय जे सभ संस्था सँ



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वमिह

यदि अलग-अलग थोड़रौ-थोड़रौ काज कबतैक त२ मैथिलीक  
जेन फन मिलाके रेशी काज हेतैक आ एहि सँ मैथिलीक रेशी  
प्रचार-प्रसार हेतैक । एहि क्रमसँ आपसी गतावक चरते  
मिथिना कना केन्द्र रैद भ२ गेल । हम स्र. फूलेश्वर सा, स्र.  
रिशभ ठाकुर, निरमल नाथ, दयाशंख सा, सुर्यकांत सा, आ  
बाजेंद्र मल्लिक सँगे मिथियात्रिक स्थापना केनहूँ । दोसरदिने  
सीताराम टोषरी सेहो मैथिली बंगमाँक स्थापना केनाह ।  
मिथियात्री रेशी दिन नहि चलैत हूदा एकब नाँठ प्रश्रुति मानये  
दू रैब होगत छलैक आ आन-आन संस्था सभ प्रायः माना  
आयोजन करैत छल से कना समयमे एकब नाँठमाँक संस्था  
एतेक भ२ गेलैक जे आ मैथिली बंगमाँक गतिहासक एकठा  
अभिन्न अंग रैनि गेल बहक । हूदा अपन मर्यादाक अस्तित्व  
हम आकस्मिक रूपेँ रीमाव भ२ गेलहूँ आ अपेक्षित सहयोगक  
अभाव मे रूँम् त२ दिरालिया भ२ गेलहूँ । फलतः ल अतिश्रु  
दिनामे कोना काज भ२ सकल आ ल आल किछ । लेकिन  
सभसँ रेशी जे रातक कछेँ अछि से जे आन-आन संस्था सभ  
त२ चलिबै बहलैक लेकिन हेब हमब कोना प्रयासक कतह  
छेँ तक कि एक नहि भेलैक ? एहिना हेब किछ हरासत  
सक्रिय भेलह अछि आ आशा करैत छी जे पुरक “मिथियात्री”  
आ “संकाव” आपसमे मिलि “मिथियात्रीक संकाव”केँ तद्वाधानमे  
अगिला दिसरिब तक गोठैक गठकक मंज कबत ।

**चन्दन फ्याव सा** थपनाथ सा मैथिली बंगमाँक सँ कतिआएल  
गेलह तकब कोन काव अहाँक नजबि मे अरैत अछि ?



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

**प्रश्नाथ मा :** उना त२ हमर जग्रा दरबारीक परिवर्तनेमे भेल  
हुन ह्रदा रैचाल सँ हमरा कहियो दरबारीपन नहि मोहएन ।  
शोणद तर्ग हम एकात क२ देन गेलहुँ । सतर्दिन हमर  
मुनमंत्रि बहन अछि - "एकना टलो" जेकिन अगल काज करैत बह  
। रीचमे कतेको सन्ध्या रा बगमट हमरा समानित कबरीक  
आकि कहियो जे अगला पृष्ठमे समानित कबरीक प्रयास कएनहि  
ह्रदा हम अगलाभरि एहिसत सँ रैचरीक प्रयास कएनहुँ । हम  
बुनैत छी जे एखन तक हम कोना एहन काज कबलै नहि  
कएनहुँ जाहि हेतु हमरा समानित कएन जख । हमर मोहन  
रैहूत बस काज एखला अगुर्ण अछि । अ सत काज जहिया  
पूर्ण होयत तहिँ हम मैथिलीके किछु सेरा कए सकनहुँ से  
बुनैत । उना कोना सन्ध्या हमरा समानित केनक कि नहि  
एहिरातक हर्य-रिवाद हमरा मोनमे कहियो नहि बहन । हमरा  
जेन अमरी समान हमर नष्टकक दर्शकक थोपड़ ी अछि ।  
एकरैव "पाथेय" केव सँरिध मे बागजोचनजी कतहुँ निखल  
बहिस्र जे पाथेय त२ एहन नष्टक छैक जकरा यदि मट पव  
सँ केयो एकगोठे पठि मात्र देतैक तगयो दर्शक नहि  
हिनत । हमरा जेन एहन तबहक समीक्षा सतसँ पैघ समान  
थिक । उना हन गिनाक२ कहै जे फेमाः लोकक धावा  
रैदनि बहन छैक । आस्था कतहुँ ल कतहुँ छैक ह्रदा कथ  
होगत अछि जखन काजके आगाँ रैठैत नहि देखैत छी ।  
सन्ध्या सतसँ सहित आ समाजकेँ कयाँ होगत नहि देखैत छी  
।

**चन्दन कुमार मा :** अगल कहन जे एखनहुँ किछ काज अगुर्ण अछि  
। कोन काज छैक अ सत ?

**प्रश्नाथ मा :** सतसँ पहिल त२ जे किछ निखल छी से समाजक



गान्धी

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जेन निखल छी । तँ सगाजक टीज सगाजक हाथमे पहुँचि  
जाग सै प्रयासमे लागल छी । एकवा अनाले मैथिली बंगमाटक  
उथोन लाग तहि खातिर सेहो काज करब ।  
अहाँ मैथिली नष्टकक भविष्य केहन देखैत छी ?  
नाष्टक एकछी गेय आ निनछ, बिदा छैक । एकवा जेन बंगमाटक  
छाली संगहि दर्शक सेहो छाली । रूढ़ि, रतिमान मे नष्टकक  
सुब आ कमाकावक गुरुजीमे दर्शक कहि गेलैए । एहनामे  
कथला कान तँ रूमागत अछि जे मैथिलीमे नष्टक कही  
खतमे ल भँज जाग । हेब जखन कथला नरनुबियाक  
सक्रियता देखैत छिअक तँ एकछी आम सेहो जलैत अछि ।

**उद्देश्य कथाव सा:** हेब मैथिली नष्टकक विकास कोना हेतग  
?

**प्रश्नाथ सा :** नष्टकक विकासले जेन आरथक छैक जे सग-  
सामाजिक विषय पब केन्द्रित भँज नाष्ट-लेखन कएल जाए ।  
नाष्टक बिना गुरुक रा मंडलीक संभर नहि रूढ़ि बंगमाटक गुरुके  
बचनमेक हेरौक छाली । नष्टकमे संवादक भाषा पब सेहो  
प्रेषण देब आरथक लागत छैक । भाषा ओल लाग जकवा  
पात्र स्वगतागुरुक उठावा कए सकय आ दर्शकके सेहो तकोन  
भार सपुष्ट लाग । एहिमे ओरव-एकितंग सेहो नहि हेतैक ।  
लेकिन भाषाक स्वगता माल एकदमसँ रौनछानक भाषा सेहो  
नहि हेरौक छाली । साहित्यक परिमार्के सेहो प्रेषणमे बाखन  
जेरौक छाली । एहिनाम हमरा एकछी रात मोन पड़ैत अछि  
जे रूढ़ि दिस पहिलके रात छैक । एकछी नाष्टककाव,  
जिनकब स्थान रतिमान मैथिली बंगमाटक पब संरक्षेष्ट कहल जागत



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मासपत्रिका

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हुनि, के पहिन नाटकक मूँल होग रैना बहेक । मयोंग सँ  
हमर एकठा परिचित कनाकाब ओहि बिहसन मे बहथि ।  
बिहसनके अगामे निर्देशक ओहि नाटककाबके मुटित कएनथिन्ह  
जे अहाँक एहि नाटकमे रँडु गाबि ठेक मे कल कन क  
दियेक । तकर प्रवृत्त दैत ओ नाटककाब कहनथिन्ह जे  
हमरा अगना जेतक गाबि अरैत अछि ओकर दसाँसो नहि एहि  
नाटकमे ठेक । हमरा हुनकर ओ रात सुनि डगुन्ता नागि गेल  
। आरँ कहु जे एहि सँ नाटकक तुव केहन रँडुतेक ?  
नाटककाबके हवदम ओ प्रयास करौक छली जे मैथिली नाटक  
सर्वभावतीय मूँल पब प्रतिष्ठित होग । मैथिलीक नाटकक  
शौथीके भावतक आन-आन भायामे अग्रवाद कएन जाए आ  
मूँल कएन जाए । तथल मैथिली नाटकक विकास हेतक ।

**चन्द्रन कयाब मा:** तकनीकी दृष्टिकोण सँ मैथिली नाटक कतेक  
पढुआएन ठेक ?

**शुभाथ मा :** रँहुत..रँहुत पढुआएन ठेक । एतय आगंधवि  
कोला एहन संस्था नहि ठेक जतय नाटकक समूहटित पठ १७ आ  
ट्रेनिंग देन जाए । रँगाली बंगमाँट सँ कतेको गोठे मिलामे  
गेल लेकिन मैथिली बंगमाँटमे कतहु एहन राख्ता नहि ठेक ।  
संगीत आ मूँल पबहुक प्रकाश राख्ता सेहो नाटक मूँलक हेतु  
अरैत महत्त्वपूर्ण होगत ठेक आ मे एहि ক্ষेत्र सभक विकास  
हेतु सेहो प्रयासक जकरबति ठेक । बंगमाँट सँ जुड़न संस्था  
सभकेँ नाटकगृह रँलरौ पब सेहो प्रयास देरौक छली ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

गन्तव्य

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

**चन्द्रन फ्याब मा :** रतमाष ये कोष बाँककाव अहाँकेँ सभसँ रेशी  
प्रभावित करैत छथि ?

**गुलाथ मा :** आधुनिक मॉड पब हम जतेक बाँककावके पठल-  
देखल छी तहिसे कियो हमरा प्रभावित नहि करैत छथि ।  
पुर्बासमे गुलाथ माक “उगला” आ “प्रेमीक नछु” एरी गोरिन्द  
माक “रैनात” हमरा रैस प्रभारी नछीत अछि ।

**चन्द्रन फ्याब मा :** कहन जागत छैक जे मैथिली बंगाल पब  
गुठराजी के सगे जातिरादिता सेहो छैक । अहाँक केहन  
अवतार अछि ?

**गुलाथ मा :** हाँ...हम एहि सँ सहमत छी । ओना हमरा  
राष्ट्रियत कसे कहियो एहिँ (जातिरादिता) पाना नहि पड़न  
अछि ह्रदा छैक ..निश्चित छैक से हम अवतार कएन ।  
लेकिन अ सभठा बाँकक विकासक राँठमे बाँधक छैक ।  
एहिसभसँ हमरा सभकेँ थामक२ नरनुरियाकेँ रँचरौक छली ।  
बंगकर्म के जाति-पाति से कोणा जेना-देना नहि हेरौक छली  
। ओकरा जेन त२ बंगमाछे मदिब हेरौक छली । ओना एहन  
तबहक राँत रेरैहाव किछ पागक जोतमे सेहो किछ जोक  
करैत छथि । ह्रदा अ सरथा निंदनीय अछि ।

**चन्द्रन फ्याब मा :** अहाँक अगिला योजना की सभ अछि ?



**शुभाथ मा :** अगिला योजना कहरो केनहू जे सरप्रथम अपन  
अप्रकाशित प्रतिसभकेँ प्रकाशित करैरौक छेत्ता कबरौ रौदरौकि  
आर अपन तऽ किछ रचन नहि अछि । कोनो न कोनो विधि  
सभ्ठा एहिसभमे उमेस्वा भऽ गेल । से आरौ ज़रल्ला मात्र  
समाज आ साहित्यक रौलौ रातीत कबरौक अछि ।

**चन्दन फ़्याव मा :** नरतुबिया के किछ कहए चाहैनि ?

**शुभाथ मा :** नरतुबिया केँ एतरो कहैनि जे ओ अपन काज  
कबधि । ग़ुठरौज्जी आ जातिरादक हेल्ले नहि पड़धि । जौ  
ग़ुठरौज्जी बढ्नामेक उद्धेष्ट के जेल हो तऽ ग़ुठरौज्जियो नीक ।  
ज़ीरनमे कखल्ला घरैरौक नहि छली । समाजक जेल सदति  
फ़ियाशीन बली । हमर ज़ीरन एकठा पाठ अछि आ हम एहिस  
जतरौ सिखनहूँ ताहि आधाव पब कहरो जे रौधा-रिद्ध  
जिज़ीरियाकेँ मात्र तीव्र आ जाग्रत करैत छैक ।

**ए बढ्नापब अपन मतिर [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब  
पठाउ ।**

३. पद्य





३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिव' - की लोटेव  
औ की लोवा लाव (आमे गीत) - (आगौ)



३.२. गिरिव सा-लो बाणद्वर बाण  
बिवास साहू छीक पृथी कबिता



३.३. जगदीश जमान गल्ल-१० लोटे गीत



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मधुसूदन



३४.५

बाजुदेव गाँउत २

उमेशकान्ति सा



३५

सुनी कायत



३६

नन्द विवास बाघ झीक फुला करिता



३७

जगदानन्द सा मल्ल



इ. ए. किशोर कारीगर



जगदीश चन्द्र ठाकुर

अनिव

की जेठव आ की जेठव जेठ (आमे गीत) - (आगा)

हमबहि खातिर उमरहउबिमे  
हुन रौकक बाहिरियकका भेन,  
भेन तग्या फनीभूत



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली

आ मागन जे नर जन्म भेल

सभ बातिक होखै भोव अगन  
अन्तिम पाठ आ गढ़ । गेन,  
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे  
की भैरन आ की हेवा गेन ।

एक दिस टाकबीक सुथ-दुथ डन  
दोसब दिस साहित्यक धारा  
तेसब दिस डुष्टन गाम-घर  
डन उडन-उडन मन रौंटावा  
सपनामे डन हरियर धवती  
आ फुल कते नर फुला गेन,  
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे  
की भैरन आ की हेवा गेन ।  
ओ मूल, गोल आ गाम हमर  
बौराक धन ओ नाम हमर  
ओ मांगक शीतल डारवि केव  
आठो गन, आठो नाम हमर

कर्तव्यक पारण धारामे  
अमरि: सभ किछ डन रीना गेन,  
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे  
की भैरन आ की हेवा गेन ।

पठनहूँ रचन आ दिसकवर्के  
नज़कन, रिमन आ शिकवर्के  
आशापूर्णा, तमलीसा आ  
श्रुतदेव वरीन्द्रक आखवर्के



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नागार्जुन आओव निवाना केव  
खुष्टी डन मनमे गड १ गेन,  
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे  
की तेरेन आ की हेवा गेन ।

मिथिनाके देखन मिथिनामे  
देखन मिथिना सीराणामे  
पारनि-तिहाव आ भोज-भात  
तेरेन समता पविधानामे

डन एतहु दमनन केव नका  
बहते-बहते से बुझा गेन,  
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे  
की तेरेन आ की हेवा गेन ।

हिमगिरी समान किड प्रकय डना  
किड तेरेना गंगाजन समान  
दुरिधामे जखन-जखन पडनहु  
हुनकहि चरित्रके कथन ध्यान

हुनकहि मिलन केव डारविमे  
मोशनक सब दुरिधा मेष्टी गेन,  
हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे  
की तेरेन आ की हेवा गेन ।

बि एन ए विदेह *Videha* विदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* विदेह अथवा योथिनो पौष्पिक अ पत्रिका विदेह



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

गान्धीमिह

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

ई वाचसांगव अंगण यतिर [ggaj\\_endra@videha.com](http://ggaj_endra@videha.com) गेव  
पठाऊ ।



५. गिरिव सा-ले



वाषाटन्व, वाष विवास माहु खीक  
दूरी कवित्त

५



गिरिब सा

### हो बागटंदव

हो बागटंदव की दिन डेक  
जो सबकाव ओ दीन डेक

जमाणा देखली ठंग कले य  
जो दूखी मोन के टंग कले य

दवाण किया खाली पडन डे  
टाहक जात जे ले रँचन डे

ठाठ सोमनाँ अछि गिरिब के छ्छी  
सबकाव ओकव छले डे ज्झी



रौटेन मोन कोना बद्ध गाम  
सबकाव अंगल के दियो त्रा

सरै छोडरै त लोक की कहत  
मोन साधरै त राह राह कबत

२



बाबू विनास साहू लोक दृष्टी कविता-

मिन्नाब केव फुल

नाल-नाल मिन्नाब-फूल

देखि स्वप्ना ननटाग





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

शून्य वंग भोगाव भेन

स्वगा गेन ब्रताग

अपन उद्देश्य रिसवि

सिन्हावलेँ मोगरी जेनक रैनाग

मोगरी मेलेँत-मेलेँत स्वगाकेँ

टिका गेन हेवाग

शून्यम् शून्यम् रैलेँत धरि

स्वगा बहन उगास

शून्य एहेन नजिहगव

जोन माबिते उर्झि ज्ञाए

स्वगाक उगास लेँ दूँछेन

पावणमे की खाएत

अनि नगौलेँ स्वगा

सिन्हावगव भेन निवास

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका विदेह



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

लोभमे हँसि स्वर्गा

अगल कर्मिब पछताए

शोगधन स्वर्गा रौजन

कग बँग देखि ले लोभाउं

कगक माया जान हँसि

तुखले तेजुरे प्राण ।



## उर्वणिक

रैछासँ रूठ भेलौ  
रैड़-रैड़ खेन देखेत बहलौ  
पैसैठ रैबख आजादियोक भेल  
रूदा पूर्ण आजादी  
कहियो ल देखलौ  
आग धरि सबकारक कठखेनमे  
उर्वणिक खेन शुक भेल  
जगतक रिकेठ गिब गेल  
देसक कपेया खेन-खेनमे  
मुर्दा-मुर्दा सब सति गेल  
सब शेरबमे म्छेडियम रैनि गेल



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

गाममे रौबोजगारी रौठि गेल

आजाद देशेमे के आजाद भेल

आजादीक सँडा फलबोले

की ओरलिक तगमासँ

गवारी-रौबोजगारी छि गेल

जखन आजाद देशेक जनता

अखला रौठीमे तीख गँठिऐ

तखन सबकार ओरलिकमे

अबरो कपेया किअए नगरैऐ

एतेक कपेया खेती-उद्यान

आ रोजगारमे किअए ल नगरैऐ

जखन देशेमे एतेक गवारी छै

आरलिककेँ की जकरी छै

जखन देशेक आत्मा

गाम-घरमे रौनै छै



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वी

तँ गाम-रानी किञ्च

एतेक उपेक्षित छै

जे गामक लोक

नबकमे जौलै-गलै छै

गामरानीक नहूँ छै

सबकाव उपेक्षित छै

उगमँ गवैरकै की भेटलै

जखन थोदि छै पलाइ तँ

मूस भागि जाग छै ।

ई बचनपत्र अपन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब  
पठाउ ।



जगदीश प्रसाद मंडल

## १० लाई गीत

### जगदीश प्रसाद मंडलक 10 लाई गीत-

छाई अन्तर.....

छाई अन्तर पथ भवि-भवि

अगरमिया कहलैत अरै छै ।

तल्ला ल गजोरो रँछा -रँछा

मास पूर कहलैत छै छै ।

छाई अन्तर..... ।

काष्टि गजोरो कपटि-सगटि



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वमिह

गुण प्रकामे पारित कहे छै ।

थेन जिनगीक थेनाछी

छर्छि-छर्छि बैगसि कहै छै ।

छर्छि-छर्छि ..... ।

जम-जमोदा भेद रिषि बुझल

नीला धड़धड़ौत कलै छै ।

तीत-गीठ फल फलाफल

सिब छर्छि सिबताज कहै छै ।

सिब छर्छि ..... ।



## दुनियाँक जेहल.....

दुनियाँक जेहल माँट माँटलै,  
तेहल ल बग्याछे रलै छै ।  
पाछे रनि जेहेन पाछे खनलै  
देखिनिहारो तेहल देखे छै ।  
दुनियाँक जेहल..... ।

छहि सब छै छैन छीत  
दुख-तुख दुनियाँ सेहो कहै छै ।  
सुख सुखाएन सुतन-गड़न  
सिब मज्जीरणी भेटै कहौ छै ।  
सिब मज्जीरणी..... ।





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वमिह

दूनियाँक जेहल..... ।

हबि अर्णत हबि कथा अर्णत

हँसि गीत भागरत गरै छै ।

हेबि शेक्ति शेक्ति हबीक

बाँघ छढ़ि भगरती कहै छै ।

बाँघ छढ़ि ..... ।

दूनियाँक जेहल..... ।



## बहन ले तकमिहाव.....

बहन ले तकमिहाव । मीत यौ

बहन ले तकमिहाव ।

तकतियाव अगल मिव देखै

बहन ले देखिमिहाव । मीत यौ

सभ दिन बहन तोक तकै

बहन ले बुँमि-बुँमिआव ।

हेव हेमि हकल हलैण

बहन दिन दूब-कान, मीत यौ

हवाएन-ठवाएन रण रीट

संगीक बहन अकान ।

पहाड़ रीट सफ़ाद तहिला

बि एन ए बिदेह *Videha* बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह अथय योथिनो पौष्पिक अ पत्रिका बिदेह'



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानुषीमिह

आनए ज्योति सकान, मीत यो

आनए ज्योति सकान ।



## लैक तग.....

लैक तग जल्ला तपे छै

तपे छै तल्ला मलक तग ।

लेद-पुका गलित गलि

एक रवदास एक अलिगोप ।

ताग यो..... ।

तपेक तग तपस्या जल्ला

सभकेँ तपेक अछि दवकाव ।

रिग तापे तग केना तछै

पेते केना छित-छपकाव ।

ताग यो..... ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

बिबि-बिबि भगवत मली छै

बीट ब्याम भगवत देखे छै ।

भक्ति पावै भोलीनी छलिना

मिह मराव मैथ बुले छै ।

भाय यो..... ।



जेहल झूह.....

जेहल झूह तेहल हँसी

सत नि हँसैत एलैए ।

झूहक जेहल गढ़नि-गढ़नि

तेहल तान भलैत एलैए ।

तेहल..... ।

झाधवि डोव ले रँनि-रँनि

घास सारै कहलैत एलैए ।

रँनिते डोवी समेष्टि-रँठैवि

गृह-रास कहलैत एलैए ।

गिवह-रास कहलैत एलैए ।

गिवह-रास..... ।



जीह-दाँत सभ संग गुले छै

आँखि-कान सभ संग एलै।

नरति रीट नरति-नरति

हाम-हँसी हँसेत एलै।

हाम-हँसी.....।



धाव संग नार.....

धाव संग नार तखल छलै छै

जन जनदाव रँगन बहै छै ।

जन-जनदाव..... ।

देख मानसुन नपकि-सपकि

धवा-धवा रँगलैत बहै छै ।

उद आदा पारि परिते

मजि मजवि मोजब धड़ छै ।

मजि मजवि..... ।

जेना-जेना मानसुन पलै छै

तेना-तेना नार धाव छलै छै ।





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

पुंवरी-गडरी मोक पारि-पारि

मम-तेज गतिश्रगत छै छै ।

मम-तेज..... ।

गति धाव जलधाव जलिया

मतिथो तलिया ममसुष छै छै ।

गति-मति कथला संग-साथ

तँ कथला सहरोत बहै छै ।

तँ कथला..... ।



मम मशीन.....

मम मशीन मंत्रिणा कबै छै

श्रुग-पविरति त हेरै कबते ।

सभ दिस हो गते ऐलै

सभ दिस हेरै कबते ।

मम मशीन..... ।

मथि-मथि मम मशीन रनि

गति तेज हेरै कबते

साधन श्रुत पविराव जहना

धवा-धवा रैहै कबते ।

धवा-धवा..... ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

एक अर्जग मशीन जिनगीक

दासव नीति कहलौं कबते

नीति-अनीति कनीति रैमते

एक-सँ-एक लड़लौं कबते ।

एक-सँ-एक..... ।



खै-खै.....

खै-खै रैनि-रैनि छैलौ

अधाम अधाम केना पेलौ यौ

खै-खै खबकैछै-खबकैछै

टिकन केना रैलौ यौ ।

टिकन केना..... ।

तेतनि बापि तेनेन नगेलौ

गुड़-अधाम अंग पेलौ यौ

बग रैदलि अधामो रैदलि

अबिम अजति कहेलौ यौ

अबिम..... ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

जेरुस यन पोलो तेतविक

तेरुस गढ़ा हरा रैललो यो

चर्क-रुयष्ट मित्रित क२ क२

रोग-मवाएन रैललो यो

रोग-मवाएन..... ।



सौक्ये.....

सौक्ये सौका गेलौ, मीत यौ  
झोड़ि जिमगी उँड़िया गेलौ।  
सौक्ये..... ।

पाव ले पारि गुन-गुना  
धन-धन किहुँ ल पेलौ।  
मान-दास घष्ट घष्ट-घष्ट  
अगमोचमे नहा गेलौ  
सौक्ये..... ।

ले जानि दुनियाँ-दिराणा  
भवत दिराणा दुनियाँ पेलौ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वी

प्रेम-प्रेम गकड-ि - गकड-ि

अगल तँ किडु ल पेलौ ।

गीत यौ, सोम्ये..... ।

रिष प्रेम खाली ले दुनियाँ

बापि-अबापि किडु ल पेलौ

मुँडे-मुँडे मति-रिमति रीट

अमति-रुमति मगतमि पेलौ ।

गीत यौ, सोम्ये..... ।



## परिचिते लोप.....

परिचिते लोप शिवात्मिक

घोड-छालि छालि धड-ए गली छै ।

छाल-गगना रीछ घोड- एल

घोड-छाल छालि छले छै ।

घोड-छाल..... ।

उठिते दोसब लोप-गग

मिर-मिरामन मजुर-ए गली छै ।

कदैनक-कदैनक हानि-हाना

हान-हाना डुमर-ए गली छै ।

हान-हाना..... ।





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यविदेह

छठ्ठी - छठ्ठी ऊक डकडका

गद-गदैया पकड्ग नली छै

ता-थग, ता-थग नाट-नाटि

गाय गदह करब नली छै ।

गाय गदह..... ।

ॐ बसोपार अगम मंत्र [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर  
पठाउ ।



१. बाजुदेव मण्डल २. गुमथकानि सा

१



बाजुदेव गौडन

## दृष्टी करिता-

## मरुहा आ अवस्था

कावी आ उक्ताव रसत्र अछि पसवत  
नापेत-जोथेत जा बहन छी समवत  
पेघ भेल जा बहन अछि दूवी  
पेल कड्ी आ गौतल कड्ी  
डूट-गरीब आ समतल  
नर-नर दृष्टि रँषए पन-पन



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्करण **ISSN 2229-547X VIDEHA**

काठ-कठौब रँगन हवगन

गान्धी

भग मात्र होगत अछि टटन

छपैत देस-कोस

रँगैत दुसगल-दोस

दुखमे होशि

सुखमे रौहोशि

कान झीत बहन अछि

ऊमेव रीत बहन अछि

तेयो जोड़ैत घड़ी-रङ्गती

आगु शेष डुमब-पवती

कतरौ नापर लै होएत

नागन धवती

महफा शुक केनक

अन्त कबत अवधी ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धीनिर

## काठैत रीखा

ढुठैत निसाँस जेना निकनए जाण

ढुंगव तकए खाली आसमाँस

नीटा डहि बहन पोसन रीखा

देखि-देखि फाँटे छै लीया

हँसुआसँ काँष्ट बहन फसन केव सीना

देह बीजन अछि घास-पसीना

कबए पड़त आगुक आस

अपनहि काठैत नगाउन टास

थवथवागत हाथ जालैत अछि

रीखा बहि-बहि केना कालैत अछि

हँसुआ कहै आ सुलै कास

हुनकी हुना गेल रहि गेल निमोस

आरँ कि बोपरँह हे किमाँस



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जेतरे रौन रीखा ततरे धान ।

२



उपकाश सा

गजन

भीख ले हमरा अपन अधिकार छली

हमर कर्म जे रले उपाव छली

काण थोलीक२ बाथल बह२ गडत हवदम

सुनि सके जे सभक से सबकार छली



प्रेम छै सभक उषध एहिठौं यौ

दूधक मावज मोनकेँ उगटारि चली

सभ मिहन्ता एखला पुवन कहाँ छै

हमर मोनक रौंटेकेँ मग्नहार चली

"ओम" कबटे हुनकरे दरबौर सदिखन

लह-फुनसँ सजन ओ दरबौर चली

रौहले-बगन

दीर्घ-द्वन्द्व-दीर्घ-दीर्घ (हागनातन) - प्रहसक पाँतिमे तीन रौब

ए बच्चापन अपन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब  
पठाऊ ।



रुक्मिणी कामत

### भ्रष्टाचारक संवाद

एगो खेत खेतोत देखलौं  
खुनमे  
हवा गेल छल थिचरी  
सब झटमे ।  
देख क२ भेल अचम्भा  
प्रभुलौं सब अ कोन अछि  
जादू-ठैला  
सब कहलथि  
कि कहै हम केल अछि  
भ्रष्टाचारक मारि  
अरौए तँ य२ भवन झट  
रुदा मिलेत अछि यएह जादूक खेत ।  
एक रुष्टी रैबका रौनु  
एक रुष्टी छैलका रौनु  
दू रुष्टी अफसस मातेर  
आ सगठैत अछि  
तीन रुष्टी कनक रौनु  
देखते-देखते गाममे रुकागत अछि  
रुष्टी-रुष्टी अहिना रैठैत अछि ।  
जकवा देखु ठक नगेल अछि  
कहत छथि हमरा दिअ



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अ त सत्त्ववाणी भगवानक प्रसाद अछि ।

### तरेँ हँसत बुकमी

हम एक प्रकयक रैछी छी

एक प्रकयक रैहिन

एक प्रकयक पनौ

तँ एक प्रकयक माँ

हब गग-गग गब

हब समर्थक रीट

हब सुख-दुखमे

हब कगमे हम प्रकयक संगे ठाव छी

हमरो झूठमे रहल जुरास अछि

हमरो दृष्टि रहल देखेत अछि

हमरो दिमाग रहल मोटेत अछि

हमरो जिगब मे रहल माहस आ होमना अछि

आग प्रकयक संगे चलैमे हम समर्थ छी

तँ हब किए आगयो

१००मे मँ १३ महिना

घलेनु हँसाक शिकार अछि

अ हमरा जेन ले

हे रँछिजरी अहँ जेन शेरक रात अछि ।

आरौ जगु हे माधुस

रिक्तमित अणव रिटाव कक

बाबीकेँ परिवर्तित कवणगाग डोडू

बर हागक निर्माण कक ।

जतः ले रहत बाबीक गच्छत

उग समाजक केना विकास रहत





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

केना बहत हैसैत तुमसी  
केना अंगन झुलैत  
माँक पुजा पहिले करि  
बतमास्तुक भ२ मग सुकाए  
देख्यौ ह्येब काहि अंगन  
कतेक सुन्दर अछि हैसैत थोनागत ।

### शिंपकाव

आग हम देखे छी जग दिस  
रएह दिस ठार एगो शिंपकाव अछि  
दोड बहन ग२ सतक सत  
अग बेसमे न२ क२ अंगन ओझाव  
कहि बहन अछि देर हम सभावले  
नर कग वंग आकाव ।  
झुदा ककरो ले  
छेछेलैत देखे छी खुदले

ले निखारैत अंगन  
प्रतिभा आ गाले ।  
अ सभाव तँ परिपूर्ण अछि  
सत जोत मोह आ भय सँ दुब अछि  
ह्येब अकरो हम कि देर अकाव  
कग वंग आ अकाव ।  
रैगारै क२ ग२ तँ रैगारै  
अंगन प्रतिमा अंगन ओझाव सँ  
निखाक मानरता खुदमे  
अंगन उँच रिटावसँ ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

### याद गायक

गायक रैव मल पडे य२  
पिपवक पाडु  
पुवरी रैमात  
पिपव सबसो मल पडे य२ ।  
नष्टकल आस  
मजबन जम  
गमकैत महूआ मल पडे य२ ।  
धावक थेन  
कदरी थेत  
रोटी-छैनी मल पडे य२ ।  
रौधक मिनी  
रुटिया धल  
पुआवक रिङ्गेल मल पडे य२ ।  
घुवक आगि  
पकैत अन्न  
उ गपगिप मल पडे य२ ।  
गायक रैव मल पडे य२ ।

### आसक किवा

अथाव रितन  
सौल रितन  
रितन जाग य२  
तादरैक रैनाव  
सुगथ गेल सत  
गनाव-पोथेव  
ले रैवसन अरैकि एको अभाव ।  
रैजव तेन



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

माँ धवती

कावी सत

गाढ-पात

कोन पाप भेन

हमबा सरी सँ

आरौ तँ रैतारै तौ सबकाव ।

ले खाग नर अन्न

ले रूमरौ नर तवास

अहिना तक रितेरैय

ओव कतेक मास

आरै मष्टै

अगल भातै

दए हमबा सतकै

जिअ कए आमाव

हे भगवान तू

रैवसारै पानिक रौडाव ।

नारीक पहचान

देख कए टिटे-टूना

मल होगत बन कि

हमहूँ उडी अन्नबमे ।

जा कए देखी

घबक अनारा

की अडि

अग सभावमे ।

भगवा संगे हमहूँ



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

जागतो युग  
उदमन बहिनो कितारमे ।  
रूदा जरे निहारो  
अग्न दिस  
डन रागहन जंजीव  
पएवमे ।  
माय कहनक  
हमर माण आ रौरूक पगरी  
डे दू तोले हाथमे ।  
लेश टी  
हमर उडलौत मण  
मरि गेल रिडय़नक अग सभावमे ।  
सपना देखेनै पहिले  
जगा देननि

सुनि मायक रचन  
रैहूत कछे भेन मणमे ।  
हम रैली डी  
आकि अरना  
जे दू बहक मए गलाम गिलेत अछि  
प्रकय सन्ततमक अग सभावमे ।

### आजाद गजब

१  
मणमे आस सहर नयाँ अणहार रैहूत  
पननि बहन अछि मणमे सुरिटाव रैहूत

ले डव अछि गिटे क२ हमरा एको बती  
रैठेत ल बहए चाहे आ अवाचाव रैहूत



सब ठाँ क२ चलेत बहरै हम सदिखन  
दिनमे अछि घुबसि बहन धुवसार रैहूत

रौदाग बहत छुबरी सीताक रूमन अछि से  
देहमे अछि अथला प्राँ आँ गलकाव रैहूत

टिडैत बहरै अगहावक कनेजा छी ठगल  
झुझीकै गिनत अगसँ आगु प्रकाव रैहूत

२

झुझुत रौद महफिजसँ झूठ काय निकनन

रौकाव डन निकनन जेना काय निकनन

हवा गेल तीडमे आरि क२ तकी निझहावि  
गतीजा जे डले निकनरौक सने-आय निकनन

छिन गेल सबताज हमर खानी माथ हँसोथी  
रौरस रैनि नाटाव शर्मसार अराम निकनन

होव सतामे अरौक उन्नीद ले एका बती  
घुबरी ले होव आग उ देल पोगाय निकनन

सट तँ अछि बाजनीतिमे दाग नागन  
झुझी अगला कवसँ कउजेआय निकनन

बि एन रु बिदेह *Videha बिदेह* [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अंथय योथिनो पार्श्विक अ पत्रिका बिदेह*



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

ई बाछागव अंगन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) गव  
पठाड ।



लक्ष्मण द्वािवास बय छीक दूष्टी  
करिअ-

कन्यादान

हम छी रैडः पतेशोष यो रौरू

हम छी रैडः पतेशोष ।

हमवा माथगव नादत अछि

तीन-तीन कन्यादान ।



थेत-थरिहँस रैटि

जेकवा पठ्ठेजौ

पठ्ठे १-१ नखा क२

मन्त्रकथ रैलना

हुँहो भ२ गेन बिरास ।

बाति-दिन एतरे

मोटेत बहे डी

केना रैटत हमर मास

हमरा माथगव नादन अछि

तीन-तीन कन्यादान ।

आगत हगमे रैषी रिश्वर

बहि ले गेन आमान ।

उकवा जेन तँ पहाड़ रैलन अछि



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वमिह

जे छथि कोनो किमाण

मामे घुबिआगत बहेत अछि

केना हएत ए समस्या केब निदान ।

डब बहेत हृदिमामे

गज्जत ल हृथए निनाम

जेकबा-जेकबा अंगुण रूनेत डरौ

सत भ२ गेन आष ।

अ । थिक मामल नटेत बहेत अछि

रौंठी तीनु जराष

हमबा माथगव नादन अछि

तीन-तीन कन्यादान ।

दहेज खातिब

मानर भ२ गेन दाषर

के पौछत हमर लाव





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हम केकवा मग काशरै

सरैरुक छद्दए भ२ गेन कठौव

बिद्वाना मभ भ२ गेन रैमान

हमवा माथगव नादन अछि

तीन-तीन कन्यादान ।

जहियाँ रैवतुहाव गेन आगम

हमव कनियाँ ध२ जेनीह उडान ।

रव थोडैत-थोडैत

टप्पन हमव घँसि गेन

पडैरौँ हम रैवाम ।

हमवा माथगव नादन अछि

तीन-तीन कन्यादान ।

एहेन मन्त्रकथ आग धवि लै भैठैन



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यपद्य

जे कवत हमरागव उपकाव

रिना दहेजक रौंठा रिखाहि क२

हमरा माथसँ उतावत भाव ।

एहेन मन्त्रक जौ हमरा भेटताह

जे कवताह एहेन श्रुत काम ।

टादवि-झुड़ौठा मथानक मानसँ

हुनकव कवरँ सन्धान ।



## रैगाव

एक दिन कनियाँ

हमरा राजनि-

“यौ, गठ्ठा-लो-निखलौ

झुदा ले भेल कोला लोकवी

तँ अलि बहरै रैगाव

किएक ले शुक करैत डी

कोला छोटे-डिन रैगाव

हे ! कहरैत डै

जे ल कबए कगाव

मे कबए रैगाव । ”

हम कहनि-



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धीनिर

“गुज्जी केव केना हएत जोगाव ? ”

उ रँजलि-

“हम लेहवसँ आनि देरँ

पटस-पटस हजाव

तहीसँ शुक कए जेरँ

कोला छेँ-मोछे रोजगाव ।

जौ पस्मितिँसँ

अखन जाएँ हारि

तँ अरैरना मिया-पुता

देत अगना सभकेँ गारि । ”

हम कहलै-

“अहाँक रँडः नीक अछि रिटाव

जन्दीसँ लेहव जाँ



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

आ ओतएँ तौआ माणि नाँ । ”

भवि दईबा सलस नः

ओ लेहवा गेलीह

भोले लेहग आगम एलीह ।

हम प्रभुनिगि-

“की ये, भः गेल तौआक जोगाव ? ”

हमर कनियाँ रँजनीह-

“हम रौनु-मायमँ कहनिगि

हमरा किछ ठेकाक अछि दबकाव

सोटेत डी शुक कलेल कोला रँगार ।

ओ सब रँजनाह,

हम अगल डी नाचाव

कतएँ देरँ तोबा



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्विह

ठाका गणिस-गणिस हज्जाव । ”

हम कहलिअ-

“उ मत्त डुयिष अमीव

हम मत्त डी गवीरै

अमीवलेँ कहिया

गवीरैमँ बहवनि मबोकाव । ”

ई बचनोपव अणम मत्तव [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) गव  
पठाउ ।



जगदीश्वर सा मव

ग्राम पोस्ट- हविश्वर डीसईन, मधुबनी

गीत- १



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यपद्य

लेखन एते ले कोला सदेने  
गिया घब रसनहुँ दूब गबदेने

तेया रिसवनहुँ राँरु नहि एनहुँ  
दुनियाँके बीतमे कि एक भगनहुँ

सखी रहिनिगा सतछाँ छुठन  
लखनकेँ जोडन सतछाँ सगला छुठन

बाणी कहि कहि मए अहाँ गोसनहुँ  
रैथिस आग झूलो नहि देखनहुँ

छुठन छैन आ रौछ सत छुठन  
अपन गामक कोउ ले तेछन

ले आरै रैसी हम सहि सकलै  
आउ तेया मय ले तँ हम ले जीरै ।

--

गीत-२

बोलेरौंरी ले  
खोनरैअ केखन अपन द्वाव ) -२

हम दुधिया जबा कए दुधन



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यपद्य

एनहू तोहले द्वाव

तोहलेरौरा हो - - - - - अगल द्वाव

तल दूथिया अछि मल अछि दूथिया

दूथिए जगल हमार

सुनि मलिमां तोहले एनहू तोहले द्वाव

कवरैअ केथल हमार उछाव

तोहलेरौरा हो - - - - - अगल द्वाव

दूधनह तु अगल नयना

दूधनह हमार कपाव

एनहू तैत, तैत तोहले द्वाव

दूधनह किएक अगल केराव

तोहलेरौरा हो - - - - - अगल द्वाव ) -२

### गीत-३

नगरियेन-नगरियेन हिनकब रौनी अ दुला आजूकेँ

हिनकब रैष्ठ मोन ठेन, अ तँ दुला आजूकेँ

हिनकब रौरू रिकेनथिन नाथे, रौरा कए हजावी

नगरियेन मिन जूगल कऽ रौनी अ दुला आजूकेँ

हिनकब ग्रा ठेन रैवभावी, अ बथे छथि दूषा रैखावी

दवरैछा पव जोडऽ । रैडद, रैग जकब ठेन कावी

तेब दिन अ पाँउज पाल करैत छथि, जेना कले गावी

तोहले उँटि अ जोठा कऽ कऽ पीरए जगल छथि तावी





साम्-गहव टोक पब जेत, चाहीयनि हिनका सरौरी  
अ छथि माएक रँड -दुनकआ,हिनका दियौह एकठा गाड़ ी  
हिनकब ग्रा छैन रँवतावी अ गिरँअ छथि खाली तारी  
हिनका पहिब आरै छैन नहि धोती, दियौन जेव तेव सारी

नगरियौन-नगरियौन हिनकब रौली अ दुनका आजूकै  
हिनकब रँव मोन छैन, अ तँ दुनका आजूकै

### गीत-४

(आबु कोरी गिबटाअ ये,  
की जेरै ये दाय ये / दाय ये )-२

कोसमथकै आबु बाँटिकै गिबटाअ ये  
रौरी कवता रँड, रँड ीअ ये / रँड ीअ ये  
आबु कोरी - - - - - दाय ये

नहि जेरै तँ कनी देखियो नियो  
देखिकै नहि कोला पाअ ये / पाअ ये  
आबु कोरी - - - - - दाय ये

दबतगाम अन्तोह रिजेतिया अ कोरी  
थाए क तऽ कनियाँ रिसवती जिजेरी



कोयनथकेँ आवुँ ग़ां टावुँ रैलते  
मिया-प्रताकेँ रैलुँ ग़ां सुहेते  
बाँटीसँ अलौह गिबटाग़ां ये  
की जेरै ये दाय ये / दाय ये

( आवुँ कोरी गिबटाग़ां ये,  
की जेरै ये दाय ये / दाय ये )-२

### गीत-३

ये सुंदर-सुंदर कमियाँ, अहाँकेँ राजे रैलुँ नीक पैजनियाँ ।  
ग़ां सुमकी, नानी, रिंदियाँ, टा-टा टाके अहाँकेँ ओपनियाँ ।।

कमिको तँ सहावुँ अपन, ओ झुझी टोरेली रानी ।  
ले तँ ऊ जेत हमर जान , ये कमियाँ -मिष्टकी रानी ।।

ग़ां कम्पतक मन रिखवज , मलामारी कटन-रेशे ।  
रियधवसँ रेशी मादक , ग़ां सुंदर अहाँक केशे ।।

बहिनो जँ हम करी , बटितहूँ सुन्नब करिता ।  
रैस मोल-मोल देथे डी, हम अहाँक डरिता ।।



ई बाचागब अणम मतिर [gaj\\_endri\\_a@videha.com](mailto:gaj_endri_a@videha.com) पब  
पठाड ।



किशेन काबीगब

हृमियाँहिक सगड ।

(हान्य करिता)

जतेँ देखु ततेँ देखै सगड ।

रौमतनरौ के होएँ बगवम-बगड ।

जातिराद त कियो झेवराद के नाम पब

लोक करै हृमियाँहिक सगड ।।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

छात्री पिपली रोज़ेते यातव

की गाय घब, श्री की मेहन-रंजित

एहि मैं किछ लोना ल ज़ोना

झुदा लोक करे ह्मियाँहिक संगड ।।

हमिछा ज़ेरे, हम ग त तूँ उ

हम एहि ठामरक तूँ उग ठामरक

एक देशेरासी बहिरह हाग ले मन्वथ

लोक करे ह्मियाँहिक संगड ।।

अगल देशे मे एक प्रतिक लोक

दोसब प्रतिक लोक के घुसपेठी कहि

धूम राजनीतिक राहुराली नुठैए

दंगा-हमनाद, श्री कि-की ल करैए ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सता सरेक कवनामा देखु

उ करैथ रौठ रौक पानिसी के नथवा

हुनके उकमेना पव तेन धमगिज्जव

आ लोक केनक हूमियाँहिक सगड ॥

लोक तेन अछि अगिया रौतान

सता बाछ अगल तान

कडमडि धेनक छुग किएक रैसरै

आहुँ-आहुँ रैसहाँड कोला सगड ॥

जातिराद के नाम पव रौठ रैठेक

दंगा-हमादक योका जूनि डोड़ू

अगना सार्थ दुखारे तेन डी हवाण

फेवरादक आगि पव अहाँ अप्पन रोटी मेकु ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धर्वी

की रीति रीति की रीति काँड

रौतनरौ के भेन नवमनाव

कतेक मरि गेन, कतेको खरिबि नहि

झुदा एखला रौतनरौ अछि मियासी संगड़ ।।

देशी समाज जाए भाँड मे

लता जी के कोन छनि रौतनरौ

जनता के रौतनरौ रौतनरौ

हो हला और कबाँड कोला संगड़ ।।

ए बचाना और मरिब [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब  
पठाऊ ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यविदेह

विदेह श्रुतन अंक मिथिला कला संगीत



१. बाजनाथ मिश्र (द्विमास मिथिला) २. डमरु  
मन्दन (मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक ज्ञान-ज्ञान/ मिथिलाक  
जिज्ञासा)

१.



बाजनाथ मिश्र

द्विमास मिथिला ग्लाउ मो

द्विमास मिथिला

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

२.

बि ए र बिदेह *Videha बिदेह* [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई  
पत्रिका *Videha bt Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अंथय मेथिली पत्रिका अ पत्रिका बिदेह*



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गङ्गाविहि



उमेश मंडल

मिथिलाक रत्नपति स्नागड शो

मिथिलाक ज़र-जुब्बु स्नागड शो

मिथिलाक ज़िन्गी स्नागड शो

मिथिलाक रत्नपति/ मिथिलाक ज़र जुब्बु/ मिथिलाक ज़िन्गी  
(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/> )

ए बच्चापव अपन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पव  
पठाउ ।

बिदेह बुतन अंक गद्य-पद्य भावती





मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१. मोहनदास (दीर्घकथा) लेखक: उदय शर्मा (मुन हिन्दी)  
मैथिलीमे अखबार रिणीत उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदास (मैथिली-हिथिनास्त्र)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतसक हिन्दी उपन्यासक अशीता मा द्वावा  
मैथिली अखबार

छिन्नमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (मुन लपारमै मैथिली अखबार त्रीमती कप  
श्रीक आ श्री श्रीरक्षद प्रेमर्षि)

तपता रोक देशे-भ्रम

ए बलापव अण मतिरा [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पव  
पठाउ ।

बानावा प्रते



१. जगदीश प्रसाद मंडल-बौद्ध विहारी कथा- बूढ़ा या



दादी २. अमी कागत- दूरी बौद्ध कविता

१



जगदीश प्रसाद मंडल

## बूढ़ा या दादी

ले जानि दादीकेँ एहेन तामस किअए भ२ गेलनि । एक ठू  
ठूला रेशीम-जेठक सुथामन जावनि चबचबागत बहै, थठक  
झोड़-त-ढाव पछपछागत बहै, तग हिसारें दादीयोक  
थठथठैएँ अक्कुले भन । दादी माल तीन पीढ़ी डुंगव ले कि  
गामक रेलीआ दादी । नरो-लोताड़ा रेलीआ दादी होगत  
छवि, उटितो छैक । गड़-चाँडव जे जते खेल हेतौह ।



आठ-दस रैथक पोता अगल कताके अगठिगामँ नडः । देनक  
जगमँ कोणटवक सज्जमिक गाढ छुँछि गेननि, तेकले तामस  
दादीकेँ पोतागव बहनि । जखन छुँछनि तखन रौधमे बहनि  
तँए ले देखनथिनि । तखन ततरे, कतक सगडः । भनि ।

रौधमे रैजे रौधमँ अरिते, जहिना हज्जालो छेवक रीट थैनी-  
थैमिकागव जा अछिँकेत, तहिना दादीक नज्जवि सज्जमिक गाढगव  
गहूँटि गेननि । नहुँआएन-गहुँआएन पडःन देखनथिनि । नबसिह  
तेज्ज भेननि, ह्नुदा परिवारक सब गरौदी मारि देनक । तँए  
अधडलेडःगेव तामस अछिँकि गेननि । जँ अकामक पानिकेँ  
धवती ले लोकए तँ पतान जागमे देवी नगटे ?

दोसमि सौम जखन रौधमँ घुमि कः दादी एनीह तँ नीक जकाँ  
भाँज ननि गेननि जे पोताक किवदन्तीमँ गाढ लोकमान भेन ।  
तामस नहडःए नगननि । छौडःाकेँ मोव पाडःनथिनि-

“अगतिआ छै लो, लो अगतिआ ? ”



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यपद्य

बाँठु रैदमन रूमि गोबिन्दोकेँ अरमव भैठले । अन्हाले गले  
टोकी-दोगमे अन्हाले गले टोकी दोगमे ब्रका बहन । अगल  
हूड्ण दादी भैठ-भैठ नगनी-

“भवि दिस जौड । एम्हव-सँ-ओम्हव ठहनागत बहए आ कता-  
रिनाग तकल हूड्ण ।” हूदा नगले मन ठमकि गेलनि ।  
भविमक अगनामे ले अछि, थाग-रैव भेल जाग छै, कतए  
छिछिआग जे गेल अखन धरि अगनामे ले अछि । गृतोहूकेँ  
पुढनथनि-

“कनियाँ, रौआ कहाँ अछि ।”

रौआकेँ अगल जान स्वकित रूमि गृतोहू रैजनी-

“रैड्णी कानसँ ले देखलै ।”

गोताकेँ तकेल रैड्णी या दादी रिदा भेली ।

सुते रैव जखन गोबिन्दा अलिमाएन आरि दादीकेँ कहनक-

“दादी रिडान रीडा दे ।”

गोबिन्दक रात सुनि दादी पिघलि गेली । ओछागल ओछा क  
सुता देनथिनि । सैन्धवगल पकड्ण टोव जकाँ, एनाह हेल



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

कड् ् श्री गोननि । ऋदा निगियाँ देरीक करोवाये देखि एाध  
गोष्ठि नगनी । अखन छोट्ा दग छिअ, बोवहवरौये पेशीरै  
करैले उठैरै ल कवरै । रूमते केहेन होग छै मज्जनिक  
गाछ तोड्ाग । जारै मभ कवम लै कवअरै तारै चलि लै  
छुठैते ।

भावहवरौये अखन गोरिन्द दादीकै उठैरैत रौजन-

“दादी-दादी । ”

दादी गर्रदी मारिक रिटाव केननि । ऋदा तीन रैवक रौद त  
गरिअरै कवत, तगमँ नीक जे तेसब हाकमे अगल रौजि  
देरैग । की हेते, एकठा मज्जनियेक गाछ ल छुठन । खेव  
रोपि जेरै ।

२



ऋणी कायत



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गान्धीनिर

१

### रौंआ देखक छदकै

रौंआ देखक छदकै ।

टदा मागा दुब छै

देखक कतेक गज्रूत छै

मि त कछै-छछै छै

तगयो छमैत छै

कतेक अछन मिर्झ छै ।

रौंआ तुहो अहिना रैनिक

दुखसँ ले कहियो घरबैरक

गिवरैरक तरौँ तँ

छमनाग मिथरैरक

नगत२ छछै तँ

सम्वननाग मिथरैरक

देख२ अग छदकै

जे घछैत-घछैत छि जाग छै

पव एक रौव ले घरइ ाग छै

धीले-धीले हएव आगा रैछि

पवपूर्ण भ२ क२ पुनः

आमगल मे थिनथिनग छै ।



### बिदेह सप्तम

उठै लो रूँडिआ

उठै गग रूँटिया

देखियौ मज्जावा भिषमवक

भागल अमहबिया

भेन गजोत

कक म्नागत दादा मुवजक ।

जतेक भिषम

उठैरुहक रूँडिआ

उतेक म्महब हेत २ दिन

फुल्ल-आहुमल कैव

नए आशीय अगल म्महबक ।

भिषमले गहेल मँ

मम तयो-ताजा हएत

मिरोग रँगन बहरँ अहाँ

लै दबकाव हएत कोलो डाकैवक ।

थुर पठि-लिख

रूँडिआ-रूँटि

आगु-आगु दोडै त चनु

अडि अही कथा गव

भाव अगल देसक ।



ई बचनार्थ अर्पण यंत्र [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पर  
पठाओ ।

### रैछा लोकनि द्वारा स्वकीय श्लोक

१. प्रार्थना: कान अलङ्कार (सूर्योदयक एक श्रृंगार पहिल) सर्वप्रथम  
अर्पण हुनु हाथ देखरौक छली, आ ओ श्लोक रैजरीक छली ।

कवाश्रे रसते नक्षत्राः कवमाला सबस्रती ।

कवमुले हितो अलङ्कार प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्षत्रा रसते छथि, कवक मालामे सबस्रती, कवक  
मुलमे अलङ्कार हित छथि । भोवमे ताहि द्वारा कवक दर्शन  
कवरौक थीक ।

२. संध्या कान दीप जेसरौक कान-

दीपमुले हितो अलङ्कार दीपमाला जलार्दनः ।

दीपाश्रे शिखरः प्रोक्तः संध्याज्योतिर्मोक्षदुते ॥

दीपक मुल भागमे अलङ्कार, दीपक मालाभागमे जलार्दन (शिखर) आ  
दीपक अग्र भागमे शिखर हित छथि । हे संध्याज्योति ! अहाँकेँ  
नमस्कार ।

३. स्वतरीक कान-





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यविदेह

वार्ता कर्म हनुमान् रौतेश्वरं वृकोदरम् ।

शेखर यः शरत्पतिं दुःस्वप्नं नृपति ॥

जे सत दिन स्वतंत्राई पहिल वार्ता कर्महनुमान्, गकड  
आर तीमक सारण करैत छथि, हनुकर दुःस्वप्न नृपति भऽ जागत  
छहि ।

४. नहरौक समय-

गर्भ च यद्गता तैर गोदारिण सवन्ति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेसिङ्ग सन्निधि कर ॥

हे गर्गा, यद्गता, गोदारिणी, सवन्ति, नर्मदा, सिङ्गु आर  
कारेवी धार । एहि जनमे अपन सन्निधि दिख ।

३. उतवै नर्मदाद्वय हिमाद्रेश्वर दक्षिणम् ।

रथै तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

नर्मदाक उतवमे आर हिमाद्रेश्वर दक्षिणमे भावत अछि आर  
उतका सन्तति भावती कहलैत छथि ।

३. अहना दीपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।

पञ्चक ना शरत्पति महापातकनामिकम् ॥

जे सत दिन अहना, दीपदी, सीता, तारा आर मन्दोदरी, एहि  
पाँच सान्नी-स्त्रीक सारण करैत छथि, हनुकर सत पाप नृपति भऽ  
जागत छहि ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१. अग्निथोमा रैनिर्गामो हनुमान् रितीयाः ।

प्रपः पवश्वामश्ट सन्तुते टिवङ्गीरिणः ॥

अग्निथोमा, रैनि, राम, हनुमान्, रितीया, प्रपाद्यर्च्य आः पवश्वाम-  
अ मात ठा टिवङ्गीरी कहरोत डधि ।

+माते भरतु स्रथीता देरी शिख रासिणी

उत्प्रेष तपसा लप्ता यया पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्ष्य सतामन्त्र प्रसादास्तु धूर्जटेः

जानरीहर्षणजेथेर ययुषि शेषिणः कला ॥

६. रौद्रोऽहं जगदलम्ब न मे रौद्रा सबन्धती ।

अगुर्णे पचमे रये र्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूर्ध्वाक्षित मन्त्रेणुक्त यजुर्देद अध्यास २२, मन्त्र २२)

आ अँरुह्यन्तु प्रजापतिवन्द्यः । निभोक्तता देरताः ।

स्ववाङ्मूर्तिस्तुन्दः । यङ्जः स्वः ॥

आ अँरुह्यन्तु प्रजापतिवन्द्यः । निभोक्तता देरताः ।

वाङ्मूर्तिः प्रवेऽग्यराऽतिर्याऽधी मन्त्रावन्तो जायताः

दोष्ठी प्रवेऽग्यराऽतिर्याऽधी मन्त्रावन्तो जायताः

वाङ्मूर्तिः प्रवेऽग्यराऽतिर्याऽधी मन्त्रावन्तो जायताः

निकाऽमे-निंकाये नः पृज्या रयितुं फलंरत्न नृऽवधयः

पदभुक्ति योषेष्कर्मो नः कम्पताम् ॥ २२ ॥



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मन्त्रावथाः । शत्रुणां  
बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयान्तुर ।

ॐ दीर्घायिर्भूत । ॐ सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अग्न देवमे स्वयंयोगा आ सूर्य देवार्थी उपेक्ष  
होथि, आ शत्रुके नमि कश्चित् सैनिक उपेक्ष होथि । अग्न  
देवमे गाय श्रुं दुध दय रानी, रवद भाव रहन कवये सक्कम  
होथि आ घोड । ह्वित कपे दोगय रना होथि । मन्त्रिणां  
नगवक लभ्य कवरौमे सक्कम होथि आ हरक सभाये उज्जपूर्ण  
भाषण देरयरेना आ लभ्य देरौमे सक्कम होथि । अग्न  
देवमे ज्ञान आरथक होय रर्षा होथि आ उयधिक-रुष्टी सूर्यदा  
परिपक्व होगत वरुह । एरु ह्ये सभ तवहे हमवा सभक  
कन्या होथि । शत्रुक बुद्धिक नमि होथि आ मित्रक उदय  
होथि ॥

मन्त्रार्थे कोन रत्नक गडा कवरौक चाही तकव रर्षि एहि मन्त्रे  
कएन गेन अर्द्धि ।

एहिमे राचकवृत्तापमानङ्काव अर्द्धि ।

अग्नय-

अर्द्ध - रिया आदि ग्राम परिपूर्ण अर्द्ध

वायु - देवमे

अर्द्धरत्नी-अर्द्ध रियाक तेजस हकत

आ ज्ञानार्थ - उपेक्ष होथि



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बांजुः-बाजा

गुले-रिणा डब रीना

अथवा- रीणा चलेरामे निगुण

२तिरा-श्री-शेकुले तावण दय रीना

मंहाव-पौष बथ रीना रीव

दोश्री-कामना(दुध पूर्ण कवए रीनी)

पेश्वरीठां-छराणां-पेश्व-गौ रा राणी रीठां-छरा-

पौष रीवद नां-पेश्व-पेश्व-रुवित

सहिः-गोड ।

गुवं-रिणी-गुवं-रिणी-रारहावले धावण कवए रीनी

रीणी-मनी

जि-शेकुले जीतए रीना

वंपेश्व-बथ पव हिव

मंभयो-उतम सभामे

हराश-हरा जेतन

मजंमाण-बाजाक बाजामे



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यपद्य

रीति-मैत्रेय पत्रिका कवयित्री

निकाय-निकाय-निश्चयकत कार्यमे

नः-हम सभक

पञ्चमी-मेघ

रथत-रथी होए

हमर-उत्तम हम रीति

उद्योगः-उद्योगः

पञ्चमी- पाक

योगेश्वर-अनन्त नन्त करेक हेतु कएन गेन योगक बन्ध

नः-हम सभक हेतु

कम्पतम्-समर्थ होए

त्रिपिथक अन्तराद- हे अन्तरा, हमर बाज्यामे अन्तरा नीक धार्मिक  
रिप्या रीति, बाज्या-रीति, तीर्थदाज, दुध दए रीति गाय, दौगय रीति  
जन्तु, उद्योगी नारी होथि । पञ्चमी आरम्भकता पडना पब रथी  
देथि, हम देय रीति गाढ पाक, हम सभ संपत्ति  
अर्जित/संवर्धित करी ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

## 8.1.1 DEHA FOR NON RESIDENTS

### 8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1. The Comet –GAJENDRA THAKUR

translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2. The Science of Words – GAJENDRA THAKUR

translated by the author himself

8.1.3. On the dice-board of the millennium –

GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha  
chaudhary

8.1.4. NAAGPHANS (IN ENGLISH) – SHEFALI KA

VERMA translated by Dr. Rajiv Kumar Verma  
and Dr. Jaya Verma

Send your comments to [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com)

बिदेह बुतन अंक भाषागौक बचना-लेखन

Input : (कोशकमे देरणागरी, मिथिलाक्षर किंरा फोनेटिक-  
रोमणमे षेगण कक । Input in Devanagari,  
Mithilakshara or Phonetic-Roman.)



Output : (परिणाम देरनागरी, मिथिलाक्षर  
आ हासलष्टिक-रोमन/ रोमनमे। Result in  
Devanagari, Mithilakshara and Phonetic -  
Roman/ Roman.)

English to Maithili

Maithili to English

अंग्रेजी-मैथिली-कोष / मैथिली-अंग्रेजी-कोष प्रोजेक्टके आगु  
रैद १६, अगस्त सन्सार आ योगदान अ-मेन द्वारा  
[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर पठाउं ।

विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अष्ट-बल्लभ  
परिण रैव सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एन. सर्वर आधारित -  
Based on ms-sql server Maithili-English  
and English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ लपानक मैथिली भाषा-लेखनिक लेखन द्वारा  
रैनाउम मानक गेनी आ २.मैथिलीमे भाषा संपादन पाठ्यक्रम

१.लपान आ भावतक मैथिली भाषा-लेखनिक लेखन द्वारा  
रैनाउम मानक गेनी

१.१. लपानक मैथिली भाषा लेखनिक लेखन द्वारा रैनाउम  
मानक उच्चारण आ लेखन गेनी



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

गद्यविधि

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(भाषाशिक्षिका डा. बागारताव यादवक पाठ्याङ्कै पूर्ण कर्णसँ मञ्ज नः  
निर्धारित)

## मैथिलीमे उठावा तथा लेखन

१. पञ्चमाङ्कव आ अङ्गुलीक: पञ्चमाङ्कवानुसार ७, ए१, १, न ए१ म  
अरौत अछि । संस्कृत भाषाक अङ्गुलीक शब्दक अङ्गुलीमे जाहि रङ्गक  
अङ्कव बहैत अछि ओही रङ्गक पञ्चमाङ्कव अरौत अछि । जेना-  
अङ्क (क रङ्गक बहरीक कावणै अङ्गुलीमे ७ आएन अछि । )  
पञ्च (ट रङ्गक बहरीक कावणै अङ्गुलीमे ए१ आएन अछि । )  
खण्ड (ठ रङ्गक बहरीक कावणै अङ्गुलीमे १ आएन अछि । )  
मङ्गि (त रङ्गक बहरीक कावणै अङ्गुलीमे न आएन अछि । )  
खण्ड (ग रङ्गक बहरीक कावणै अङ्गुलीमे म आएन अछि । )  
उपर्युक्त रौत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाङ्कवक  
रौतनामे अधिकनि जगहगव अङ्गुलीक प्रयोग देखन जागछ ।  
जेना- अङ्क, पञ्च, खण्ड, मङ्गि, खण्ड आदि । राकवारिद पङ्क्ति  
गोरिन्द नामक कहै छनि जे करञ्ज, टरञ्ज आ ठरञ्जसँ पूर्ण  
अङ्गुलीक निखन ज्ञेय तथा तरञ्ज आ परञ्जसँ पूर्ण पञ्चमाङ्कले  
निखन ज्ञेय । जेना- अङ्क, टङ्क, अङ्क, अङ्गु तथा कङ्क ।  
झुन्दा हिन्दीक निकट बहल आधुनिक लेखक एहि रौतकै नहि  
मालैत छनि । ओ लोकनि अङ्गुली आ कङ्कक जगहगव सेहो अरौत  
आ कङ्क निखैत देखन जागत छनि ।  
नरीन पङ्क्ति किछु स्वरिधायक अरौत छैक । किञ्च तँ एहिमे  
समय आ स्थानक रौत होगत छैक । झुन्दा कतोक रौत  
हस्तलेखन वा झुन्दा अङ्गुलीक छोट सन रिन्दु स्पष्ट नहि  
लेखन अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि ।  
अङ्गुलीक प्रयोगमे उठावा-दोषक सम्भारना सेहो ततरै देखन  
जागत अछि । एतदर्थ कसँ नः कः परञ्ज धरि पञ्चमाङ्कलेक  
प्रयोग कवरै छैत अछि । यसँ नः कः उर धरिक अङ्कवक  
सञ्च अङ्गुलीक प्रयोग कवरौमे कतहु कोना रिन्दु नहि देखन  
जागछ ।





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गद्यविदेह

२.ठ आ ठ : ठक उँचावण “व ह”जकाँ लोगत अछि । अतः  
जतः “व ह”क उँचावण हो ओतः मात्र ठ लिखन जाय । आन  
ठाग खाली ठ लिखन जायँक छली । जेना-  
ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेँआ, ठङ्ग, ठेनी, ठाकनि, ठाँ  
आदि ।  
ठ = गढाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरँ, साँठ, गाँठ, बीठ, चाँठ,  
मीठ, पीठ आदि ।  
उपर्युक्त शब्द, सबकेँ देखलासँ ए स्पष्ट होगत अछि जे  
साधारणतया शब्दक श्रुतिमे ठ आ मरा तथा अक्षरमे ठ अरौत  
अछि । एह गिनम ड आ डक सम्बन्ध सेहो लागू होगत  
अछि ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उँचावण रँ कएन जागत अछि,  
झुदा ओकवा रँ कएने नहि लिखन जायँक छली । जेना-  
उँचावण : रँगनाथ, रँद्या, रँर, देरँता, रँष्ट्र, रँगे, रँदना  
आदि । एहि सबक स्वरूप कएनिः रँगनाथ, रँद्या, रँर, देरँता,  
रँष्ट्र, रँगे, रँदना लिखँक छली । सामान्यतया र उँचावणक लेन  
ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओझह आदि ।

४.य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उँचावण “ज”जकाँ करैत  
देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि लिखँक छली ।  
उँचावणमे यरु, जदि, जझना, जुग, जारँत, जोगी, जदु, जम  
आदि कहन जायँक छली, सबकेँ कएनिः यरु, यदि, यझना, यग,  
यारत, योगी, यदु, यम लिखँक छली ।

५.ए आ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दुनू लिखन जागत  
अछि ।  
प्राचीन रतिनी- कएन, जाए, लेखत, माए, भाए, गाए आदि ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बरीष रतीनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।  
सायान्तया शैर्दक शुक्रमे ए मात अरैत अछि । जेना एहि, एना,  
एकव, एहन आदि । एहि शैर्द, सतक स्थानपव यहि, यना, यकव,  
यहन आदिक प्रयोग यहि कवरौक छली । यद्यपि मैथिलीभाषी  
थाक सहित किछु जातिमे शैर्दक आवस्थामे “ए”लै य कहि  
उँटाव कएन जागत अछि ।  
ए आ “य”क प्रयोगक सम्दर्भमे प्राचीन पछतिक अग्रसका कवरौ  
उपग्रन्थ मानि एहि पुस्तकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि ।  
किएक तँ दुनूक लेखनमे कोना सहजता आ दुकहतताक रीत यहि  
अछि । आ मैथिलीक सरसभाषाक उँटाव-मैथिली यक अपेक्षा एस  
रैसी निकट छैक । खास कर कएन, हएर आदि कतिपय शैर्दकै  
कैल, हएर आदि कएमे कतहू-कतहू निखन जाएर सेहो “ए”क  
प्रयोगकै रैसी समीप प्रमाँत करैत अछि ।

३. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पत्रसकामे  
कोना रीतपव रैन दैत कान शैर्दक पाछाँ हि, हू नगाउन  
जागत छैक । जेना- हुनकहि, अगनहू, ओकवहू, तकौनहि,  
छेष्टहि, आनहू आदि । क्रुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव  
एकाव एरै हूक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत  
अछि । जेना- हुनके, अगला, तकाल, छेष्ट, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशितः यक उँटाव थ  
होगत अछि । जेना- यडल (थडल), योडनी (थोडनी),  
यष्टकोण (थष्टकोण), यृमेश (यृथेश), सन्ताय (सन्ताथ) आदि ।

+ धनि-लाग : निम्नलिखित अवस्थामे शैर्दक धनि-लाग भऽ जागत  
अछि:

(क) क्रियाव्ययी प्रत्य अग्रमे य रा ए वृथु भऽ जागत अछि ।  
ओहिमे सँ पहिल एक उँटाव दीर्घ भऽ जागत अछि । ओकव



गदुपिह

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आगाँ लोप-सूचक छि रा रिकारी ( / २) नगाउन जागछ ।

जेना-

पूर्ण कप : गठए (गठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उठए (उठय)  
पडतोक ।

अपूर्ण कप : गठ गेनाह, क जेन, उठ पडतोक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उठ२ पडतोक ।

(थ) पुरिकानिक प्रत आय (आए) प्रत्यमे य (ए) बृथु भ२

जागछ, ह्रदा लोप-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) जेन, पठाए (ए) देरै, नहाए (य)

अएनाह ।

अपूर्ण कप : था जेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्येक एक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनुमे  
बृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसवि मारिनि छि जेनि ।

अपूर्ण कप : दोसव मारिनि छि जेन ।

(घ) वर्तमान प्रदन्तक अन्तिम त बृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : गठैत अछि, रँजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : गठै अछि, रँजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) क्रियापदक अरमाण एक, उँक, एँक तथा लीकमे बृथु भ२

जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : छियोक, छियोक, छलीक, छोक, छैक, अरितैक,  
होगक ।

अपूर्ण कप : छियौ, छिये, छली, छौ, छै, अरितै, होग ।

(ट) क्रियापदीय प्रत्येक ह, ह् तथा हकावक लोप भ२ जागछ ।

जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहवहि, कहवहूँ, गेनह, नहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहवनि, कहजौँ, गेन२, नग, नप्रि, ले ।

६. ध्रुवि स्वातंत्र्य : कोला-कोला स्व-ध्रुवि अगला जगहसँ हटि

क२ दोसव ठाम छि जागत अछि । थाम क२ द्वाय ग आ उँक



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

संस्कृतमे अ रीत नागु होगत अछि । मैथिलीकवण भन् गेल  
शेदक मया रा अन्तमे जे द्यु ग रा उ आरि त उकव धुनि  
श्रुतावृत्तित भन् एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना-  
नेमि (नेम), पानि (पाँन), दानि (दाँन), माँष्ट (माँष्ट),  
काँड (काँड), माँस (माँस) आदि । हुदा तसेम शेद, सभमे अ  
निश्चय नागु नहि होगत अछि । जेना- बमिके बगम आ  
स्वर्णिके स्वर्णम नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हननु ( )क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हननु ( )क  
आवृत्तकता नहि होगत अछि । कावण जे शेदक अन्तमे अ  
उटाका नहि होगत अछि । हुदा संस्कृत भाषामे जहनाक तहिना  
मैथिलीमे अएन (तसेम) शेद, सभमे हननु प्रयोग कएन जागत  
अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया संस्कृत शेदकेँ मैथिली भाषा  
संस्कृत निश्चय अक्षराव हननुविहीन बाखन गेल अछि । हुदा  
बाकवण संस्कृत प्रयोजक जेन अवस्थक श्रुतपव कतहु-कतहु  
हननु देन गेल अछि । प्रकृत पौथीमे मैथिली लेखक प्राचीन  
आ नवीन दुनु शैलीक सवन आ समीप पक्ष सभकेँ समेष्टि क  
रूप-रिवाज कएन गेल अछि । श्रुत आ समयमे रचितक संस्कृत  
हननु-लेखन तथा तर्कनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरैरैना हिमालय  
रूप-रिवाज गिनाएन गेल अछि । रतिमान समयमे मैथिली  
मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक मध्यम मैथिलीक ज्ञान जे  
पडि बहन परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव  
ध्यान देन गेल अछि । तथैव मैथिली भाषाक मूल विशेषता सत  
कथित नहि होगत, ताहु दिस लेखक-मंडन सचेत अछि ।  
प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक कहन छनि जे  
सवनताक अनुसंधानमे एहन अवस्था किम्वदु ल आरि देवौक चाली  
जे भाषाक विशेषता छैतमे पडि जाए ।  
-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सज  
न न निर्धारित)



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

## १.२. मैथिली अकादमी, गैरा द्वावी नियमित मैथिली लेखन-गेवा

१. जे मेरु, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कामसँ आग धरि जाहि  
रुतनीमे प्राचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रुतनीमे निखन  
जाय- उदाहरणार्थ-

### ग्राह

एखन  
ठाग  
जकब, तकब  
तनिकब  
अछि

### अग्रह

अखन, अखनि, एखन, अखनी  
ठिगा, ठिना, ठमा  
जेकब, तेकब  
तिनकब। (रैकपिक कपेँ ग्राह)  
अँड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कग रैकपिकतया अगनाउन जायः  
भ२ गेन, भय गेन रा भ३ गेन। जा बहन अछि, जाय बहन  
अछि, जाए बहन अछि। कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबए  
गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' निखन जाय सकैत  
अछि यथा कहननि रा कहनहि।

४. 'अ' तथा 'उ' ततय निखन जाय जत स्पष्टतः 'अग' तथा



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

‘अ’ सट्टे उटावऱा अछि हो । यथा- देथेत, छुलैक, लौआ,  
लौक गलादि ।

३. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द, एहि कए प्रयुक्त होयत: जेह,  
सह, अह, ओह, लौह तथा देह ।

७. सट्टे अकारांत शब्दमे ‘अ’ के वृत्त कवरि सामान्यतः अग्रार्थ  
थिक । यथा- ग्राह देथि आरह, मालिनि गेलि (मह्यया मात्रमे) ।

१. स्वतंत्र रूप ‘अ’ रा ‘य’ प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे त  
यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कए  
‘अ’ रा ‘य’ लिखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा  
अएनाह, जाय रा जय गलादि ।

४. उटावणमे दु स्ववक रीट जे ‘य’ धनि स्वतः आरि जागत  
अछि तकरा जेथमे स्थान रैकपिक कए देन जाय । यथा-  
धीआ, अट्टेआ, रिआह, रा धीआ, अट्टेआ, रिआह ।

६. सावर्णमिक स्वतंत्र स्ववक स्थान यथार्थतः ‘अ’ लिखन जाय रा  
सावर्णमिक स्वव । यथा:- मैएग, कनिएग, किवतनिएग रा मैआँ,  
कनिआँ, किवतनिआँ ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कए ग्राह:- हाथकै, हाथसँ,  
हाथे, हाथक, हाथमे । ‘मे’ मे अन्वय सरिथा लज्जा थिक ।  
‘क’ क रैकपिक कए ‘केव’ बाखन जा सकैत अछि ।

११. पुराकालिक क्रियापदक बाद ‘कय’ रा ‘कए’ अरथ रैकपिक  
कए नगाउन जा सकैत अछि । यथा:- देथि कय रा देथि  
कए ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X, VIDEHA

मानवीय

१२. माँ, भाँ आदिक स्थानमे माँ, भाँ जलदि निखन जाय ।

१३. अई न' ओ अई म' क रँदना अगुसाव नहि निखन जाय,  
किंतु भाँक सुविधार्थ अई 'ँ' , 'ए', तथा 'ण' क रँदना  
अगुसावो निखन जा सकैत अछि । यथा:- अई, रा अँक, अखन  
रा अँन, कँठ रा कँठ ।

१४. ठनत छि निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक रंग  
अकावात प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सभ एकन कावक छि शेट्टमे सँ क निखन जाय, छँ  
क नहि, सँ अ रिभञ्जिक हेतु हवाक निखन जाय, यथा घब  
पबक ।

१६. अगुसामिकलै छन्दरिन्दु द्वारा राउ कएन जाय । पर्वत  
रुद्राक सुविधार्थ हि सगल जँठन मात्रागव अगुसावक प्रयोग  
छन्दरिन्दुक रँदना कएन जा सकैत अछि । यथा- हि केव  
रँदना हि ।

१७. पूर्ण विवाह पामोसँ ( । ) सृष्टि कएन जाय ।

१८. समस्त पद सँ क निखन जाय, रा हाँगहँसँ जोडि क  
, छँ क नहि ।

१९. निख तथा दिख शेट्टमे रँकावी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अँक देरनागवी कएमे बाखन जाय ।

२१. किछु धुनिक जेन नरीन छि रँनराउन जाय । जाँ अ नहि  
रँनन अछि तँरैत एहि दुनु धुनिक रँदना पुरँरत् अय/ आय/ अय/



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

आए/ आउ/ अउ लिखन जाय। आकि ऐ रा ओ मँ राउ कएन  
जाय।

ह./- जोरिन्द मा ११/०५/१७ श्रीकांत ठाकुर ११/०५/१७ अलेन्द मा  
"स्वप्न" ११/०५/१७

## २. मैथिलीमे भाषा संपादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देशः (बोल्ड कएन कएन ग्राम):-

दन्त ण क उच्चारणमे दाँतमे जोर सँ ठै- जेना रौजू नाम,  
रुद्रा ण क उच्चारणमे जोर मुँसमे सँ ठै (ले सँ ठै- तँ उच्चारण  
दोष अछि)- जेना रौजू गणेश। तानरा मेमे जोर तावसँ,  
समे मुँससँ आ दन्त सँ दाँतसँ सँ ठै। निर्माँ, सत आ मोषण  
रौजि कर देख। मैथिलीमे स केँ ऐदिक संस्कृत जकाँ अ  
सैनो उच्चरित कएन जागत अछि, जेना रयाँ, दोष। य  
अल्लो अल्लव ज जकाँ उच्चरित लोगत अछि आ ण ड जकाँ  
(यथा संयोग आ गणेश संयोग आ

गङ्गमे उच्चरित लोगत अछि)। मैथिलीमे र क उच्चारण रँ, मे  
क उच्चारण म आ य क उच्चारण ज सैनो लोगत अछि।  
ओहिना द्रव्य ग ऐनीकाम मैथिलीमे पहिल रौजम जागत अछि  
काका देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे द्रव्य ग अक्षरक पहिल  
लिखल जागत आ रौजलो जयराँक चाली। काका जे हिन्दीमे  
एकव दोषपूर्ण उच्चारण लोगत अछि (लिखन तँ पहिल जागत  
अछि रुद्रा रौजम रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पद्धतिक  
दोषक काका हम सत ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ठगसँ कर बहन  
छी।

अछि- अ ग ड एँ (उच्चारण)

डथि- ड ग थ - डैथ (उच्चारण)

गङ्ग- ग ङ्ग ग ट (उच्चारण)





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

आरंभ अ आ ग ज ए ई ओ उ अ अः म ए सत जन गात्रा  
सेहो अदि, द्वाद एमे ज ए ओ उ अ अः म के सशङ्क  
कगमे गत कगमे शङ्क आ उचित कथन जागत अदि।  
जेना म के वी कगमे उचित कवर। आ देखियो- ए जन  
देखिओ क प्रयोग अशुचित। द्वाद देखिओ जन देखियो  
अशुचित। क स ह धवि अ समितित जेना क स ह रेलेत  
अदि, द्वाद उचाव कान हननु शङ्क गेहक अशुक्त उचावक  
श्रुति रेलेत अदि, द्वाद ह्य जथन मलाजमे ज् अशुमे रेलेत  
डी, तथला प्रवका लोकके रेलेत न्नरैहि- मलाज, राशुरमे  
ओ अ शङ्क ज् = ज् रेलेत डहि।

ह्यव ड अदि ज् आ ए क सशङ्क द्वाद गत उचाव होगत  
अदि- गा। ओहिना अ अदि क् आ य क सशङ्क द्वाद उचाव  
होगत अदि ड। ह्यव ग् आ व क सशङ्क अदि ऐ (जेना  
ऐहिक) आ म् आ व क सशङ्क अदि म् (जेना मिस)। ए जेन  
त+व।

उचावक आडियो हागत विदेह आर्कित

<http://www.videha.co.in/> पर उगव अदि। ह्यव के  
/ स / पर पूर्ण अक्षर सटी कर् लिखु द्वाद ट / कर् ली  
कर्। एमे स ये गलि सटी कर् लिखु आ रादरना ली कर्।  
अकक राद टी लिखु सटी कर् द्वाद अशु टी लिखु ली कर्-  
जेना

डली द्वाद सत टी। ह्यव उअ म सातम लिखु- डरुम सातम  
ली। घवरनामे रव द्वाद घवरनामे राव शङ्क कक।

बहए-

बहे द्वाद सकेए (उचाव सके-ए)।

द्वाद कथला कान बह आ बहे ये अर्थ तिमता सेहो, जेना  
मे कया जगहमे पार्किंग कवरक अशुम बहे ओकवा। पृष्ठनापव  
गता नागन जे दुन दुन नामा ज् डागरव कनष्ट सभक पार्किंगमे  
काज कलेत बह।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

हुनै, हुनै ये सेहो अ तबहक भेन । हुनै क उँचावण हुन-ए  
सेहो ।

संयोगले- (उँचावण संयोगले)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे ले कक, गद्यमे क२ सकै छी । )

क (जेना बायक)

- बायक आ सगे (उँचावण बाय के / बाय क२ सेहो)

सँ- स२ (उँचावण)

चन्द्रबिन्दु आ अश्वत्थाम- अश्वत्थामे कँठ धरि प्रयोग होगत  
अछि कदा चन्द्रबिन्दुमे ले । चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो  
उँचावण होगत अछि- जेना बायसँ- (उँचावण बाय स२)  
बायकै- (उँचावण बाय क२/ बाय के सेहो) ।

कै जेना बायकै भेन हिन्दीक को (बाय को)- बाय को= बायकै  
क जेना बायक भेन हिन्दीक का ( बाय का) बाय का= बायक  
क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव ( जा कव) जा कव= जा  
क२

सँ भेन हिन्दीक से (बाय से) बाय से= बायसँ

स२, त२, त, केव (गद्यमे) एतै टाक गेहँ, सरहक प्रयोग  
अरुद्धित ।

के दोसर अर्थे प्रशङ्क भ२ सकैए- जेना, के कहक ?

विभक्ति “क” क रँदना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

नमि, नहि, ले, नग, नँग, नग, नग अ सभक उँचावण आ लेखन  
- ले

उन्न क रँदनामे उन्न जेना मरुपुर्ण (मरुपुर्ण ले) जउए अर्थ  
रँदनि जाए ओतहि मात्र तीस अक्षरक संश्लेषक प्रयोग  
उँचित । सञ्जति- उँचावण स स ग त (सञ्जति ले- काका सही  
उँचावण आसानीसँ समुद्र ले) । कदा सञ्जति (सञ्जति ले) ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

वाह्दिय (वाह्दिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पौडिय/ पौडि लेन/ पौडि लेन

पौडिय/ पौडि/ (अर्थ परिवर्तन) पौडि/ पौडि

उ लोकनि (हथी कर, उ ये बिकाबी ले)

उअ/ उहि

उहिय/

उहि लेन/ उहि वर

झवरी/ झवरी

गौतवरी

देखियेक/ (देखियेक ले- तहिना अ ये ज्ञान श्री दीर्घक मात्राक  
प्रयोग अत्रित)

झका/ जेका

तंग/ तंग

लेखत / लेखत

नहि/ नहि/ नग/ नग/ ले

मोस/ मोस

रौत /

रौत (मोवाउन)

गाए (गाए नहि), रुदा गाएक दूध (गाएक दूध ले।)

बहरी/ गहियेक

हमरी/ अही

सर - सभ

सररुह - सभरुह

धवि - तक

गग- रौत

ब्रूमर - समर

ब्रूमर/ समर/ ब्रूमर - समर

हमरी/ अही - हम सभ

आकि- श्री कि



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सकैछ/ कबैछ (गद्यमे प्रयोगक आरम्भकता ले)

होअ/ होनि

जाअ (जानि ले, जेना देव जाअ) ऊदा जानि-बूझि (अर्थ  
गविरूतन)

गअ/ जाअ

आउ/ जाउ/ आउ/ जाउ

मे, केँ, मँ, गव (मेहँसँ मँ क२) तँ क२ ध२ द२ (मेहँसँ ल२  
क२) ऊदा मँ रा लेनी रिभक्ति मंग बहनागव पहिब रिभक्ति  
छाँकेँ मँ छुँ । जेना एमे मँ ।

एकछ, दुछ (ऊदा क२ छ)

रिकावीक प्रयोग मेहँसँ अमुमे, रीचमे अनारम्भक कएँ ले ।  
आकावाउ आ अमुमे अ क रौद रिकावीक प्रयोग ले (जेना  
दिथ

, आ/ दिय , आ, आ ले )

अपेन्द्राणीक प्रयोग रिकावीक रैदनामे कवरँ अमुति आ मात  
हँछक तकनीकी गुणताक परिचायक)- उना रिकावीक संस्कृत  
क२ २ अग्रह कहव जागत अछि आ रतनी आ उँचाव दू  
छाम एकव लाग बहेत अछि/ बहि सकैत अछि (उँचावमे लाग  
बहिने अछि) । ऊदा अपेन्द्राणी मेहँसँ अमुमे गमेमि  
केसमे लागत अछि आ हँचमे मेहँसँ जतए एकव प्रयोग  
लागत अछि जेना *raison d'être* एतए मेहँसँ एकव उँचाव  
लेजेन छेव लागत अछि, माल अपेन्द्राणी अरकामे ले दैत  
अछि रक जेहँसँ अछि, मे एकव प्रयोग रिकावीक रैदना  
देनाग तकनीकी कएँ मेहँसँ अमुति) ।

अगमे, एहमे/ एमे

जअमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

केँ (के नहि) मे (अमुति बहि)



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

भर

मे

दर

तै (तर, त ले)

सै (सर, स ले)

गाढ तर

गाढ गर

साँस खर

जो (जो go, कले जो do)

तै/तथ जेना- तै दुखाले/ तगाले/ तगले

जै/जथ जेना- जै कावना/ जगसँ/ जगले

अ/अथ जेना- अ कावना/ असँ/ अगले/ रुदा एकव एकटी थान

प्रयोग- नावति कतेक दिससँ कहेत बहेत अग

लै/वथ जेना लैसँ/ नगले/ लै दुखाले

नहँ/ लो

गेलो/ लयो/ लवँ/ गेलहुँ/ लेलहुँ/ लेल

अथ/ जाहि/ जे

जहिठाग/ जाहिठाग/ अथठाग/ जेठाग

एहि/ अहि

अग (बासक अतमे अग) / अ

अगढ/ अढि/ अढ

तथ/ तहि/ तै/ ताहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीरै

बलेली/ बवहि

तै/ तैग/ तै

अथरै/ अथरै

नग/ ले



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

डग/ डे

नहि/ ले/ नग

गग/ ले

डगि/ डगि ...

समय मेरुंदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै डे तखन समे  
जना समेगव गत्यादि । असगवमे दन्द आ रिभक्ति जूठले  
दन्दे जना दन्देसँ दन्देमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जे

जहिठाग/ जाहिठाग/ जगठाग/ जेठाग

एहि/ अहि/ अग/ ए

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीर

बने/ बनेली/

बवहि

ते/ तै/ तै/ तै

जग/ जग

नग/ ले

डग/ डे

नहि/ ले/ नग

गग/

ले

डगि/ डगि

दुकन अडि/ लोव गडि

२२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम



मानवीमिह

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गीटांक सुटीये देन विकल्पमेसँ लेखज एडिटर द्वारा कोल कए  
छन जेरौक चाली:

रौलड कएन कए ग्रोह:

१. होयरौना/ होरौयरौना/ होमयरौना/ हेरौ रौना, हेम रौना/

होयरौक/होरौयरौक /होयरौक

२. श्री/श्री२

श्री

३. क जेल/क२ जेल/क३ जेल/क४ जेल/न/व२/न२/व३

४. ज जेल/ज२ जेल/ज३ जेल/ज४ जेल/ज५

जेल

५. कव जेनाह/कव२

जेनाह/कव३ जेनाह/कव४ जेनाह

६.

विश्व/दिवि जिय, दिय, विश्व, दिय /

७. कव रौना/कव२ रौना/ कव३ रौना कव४ रौना/कव रौना /

कव५ रौना

८. रौना रौना (श्रुत), रौना (सूत्र) ९

श्रीव श्री

१०. श्रीव: श्रीव

११. दु:ख दु:ख १

१२. जेल जेल जेल जेल/जेल जेल

१३. देवविह देवविह, देवविह

१४.

देवविह देवविह/ देवविह

१५. देवविह/ देवविह देवविह/ देवविह/ देवविह

१६. देवविह/देवविह देवविह/देवविह

१७. एथला

एथला

१८.



मानवीमिह

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

## बैठनी बैठगल बैठहि

१७. उ/उ२(सरिगाग) उ

२०

२. उ (संयोजक) उ/उ२

२१. हागि/हागि हागग/हागग

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. केवहि/केवनि/कवनि

२५. तथगत/ तथगत

२६. छा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२७. निकन/निकन

वागव/ वगव रैहवा/ रैहवा वागव/ वगव निकन/रैहवा वागव

२८. उत/ जत जत/ उत/ जत/ उत

२९.

की बुब जे कि बुब जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यदि(मोष पावरी) कुगद/यागद/कुद/याद/

यदि (मोष)

३२. गले/ गले

३३.

हंस/ हंस हंस

३४. लो आकि दम/लो किरा दम/ लो रा दम

३५. सप्त-सप्त सप्त-सप्त

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

की की/ की२ (दीर्घाकावाप्तये २ रजित)

३८. जराई जराई

३९. कवताह/ कवताह कवताह





मानवीमिह

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

४०. दलाष दिगि दलाष दिगो/दलाष दिस

४१

. लावाह गएवाह/गयवाह

४२. किछ आब किछ उब/ किछ आब

४३. जाग छव/ जागत छव जाति छव/जेत छव

४४. गहुँटा जेठ जागत छव जेठ जाग छव गहुँटा/ जेठ  
जागत छव

४५.

खराँष (हरा)/ खराँष (होली)

४६. नय/ नय क/ कय/ नय कय / वर कय/ वर कय

४७. न/वर कय/

कय

४८. एथन / एथन / अथन / अथन

४९.

अलीकँ अलीकँ

५०. गलीव गलीव

५१.

धाव गाव केनाथ धाव गाव केनाथ/केनाथ

५२. जेकाँ जेकाँ

जकाँ

५३. तहिन तहिन

५४. एकव अकव

५५. रैहिन रैहिन

५६. रैहिन रैहिन

५७. रैहिन-रैहिन

रैहिन-रैहिन

५८. नहि/ ले

५९. कवरौ / कवरौय/ कवरौय

६०. तँ/ त २ तय/तय

६१. जेयावी ये जेठ-जाय/जेठ, जेठ-जाय/जाय



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

७२. गितीये दू भाग/भाए/भाँ

७३. ३ पोथी दू भाँक/ भाँ/ भाए/ लेव । यारत छारत

७४. गाय मे / गाँ दूदा गाँक मयज

७५. देहि/ दण दनि/ दएहि/ दयहि दहि/ देहि

७६. द/ द२/ द

७७. ३ (संयोजक) ३२ (संरचना)

७८. तका कय तकाय तक

७९. पोले (on foot) पाल कयक/ केक

१०.

तहुमे तहमे

११.

पूरीक

१२.

रैखा कय/ कय / क२

१३. रैखाय/रैखाय

१४. कोवा

१५.

दिया दिका

१६.

ततहि

१७. गवरौवहि/ गवरौवनि/

गवरौवहि/ गवरौवनि

१८. रौव रौव

१९.

तेह तेह(अक)

२०. जे जे

२१.

. से/ के से/के

२२. एखका अखका

२३. उगिलाव उगिलाव

258



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

+४. **सूर्यव**

/ **सूर्यवका** सूर्यव

+३. **सूर्यवक** सूर्यवक +३.

**भुवि**

+१. **कवययो/उ कवययो ल देवक /कवययो-कवययो**

+१. **गुरावि**

**गुरावि**

+१. **सगड १-सगड**

**सगड १-सगड**

१०. **गख-गख गेल-गेल**

११. **खेवखौक**

१२. **खेवखौक**

१३. **वग**

१४. **लख-लख - लख**

१५. **सूसव सूसव**

१६.

**सूसव** (सूखधन अर्थमे)

१७. **येह यख / खख / सेह / सख**

१८. **तातिव**

१९. **अखाय-अखाय/अखाय/अखाय**

१००. **निख-निख**

१०१.

**खिख** खिख

१०२. **खख** खख

१०३.

**खख** (in different sense)-last word of sentence

१०४. **खख** खख खख

१०५.



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

ल

१०७. रेखा (p/ ay) - रेखा

१०९. शिखात- शिखात

१०८.

ठ- ठ

१०९

. ग- ग

११०. कनिका/ कनिका कनिका

१११. वाक्य- वाक्य

११२. लो/ लो लो

११३. अ- अ

उ- उ

११४. ब्रह्मवह (different meaning - got  
understand)

११५. ब्रह्मवह/ब्रह्मवह/ ब्रह्मवह (understand  
himself)

११६. च- च/ चि च

११७. अ- अ

११८.

मो मोवह/ मो मोवह/ मो मोवह

११९. के- के- के

१२०.

व- व

१२१. अ- अ

१२२. अ- अ- अ

अ- अ

१२३. लो

१२४.

ग- ग/ ग- ग/ ग- ग/ ग- ग



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

१२३.

**टिखेत-** (to test) टिखेत

१२३. कबज्यो (willing to do) कबज्यो

१२४. जेकवा- जेकवा

१२५. तकवा- तकवा

१२६.

**बिदेसव श्रामे/ बिदेसव श्रामे**

१२७. कबरैजहुँ/ कबरैजहुँ/ कबरैजहुँ कबरैजहुँ

१२८.

**हाकि (उठावण हागवक)**

१२९. उज्ज रज्ज आसोच/ अहसोस कागज/ कागज/ कागज

१३०. आषे भाग/ आषे-भाषे

१३१. पिछा / पिछा/ पिछा

१३२. न्या/ ल

१३३. रैछा न्या

**(ल) पिछा जाय**

१३४. तखल ल (न्या) कहेत अछि। कहे/ सुले/ देखे छव दूदा

कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत

१३५.

**कतेक लोठे/ कतक लोठे**

१३६. कयाज-कयाज/ कयाज- कयाज

१३७

**- दग दग**

१३८. खेवाज (for playing)

१३९.

**डबिहा डबिहा**

१४०.

**लोखत लोख**

१४१. का कियो / केउ

१४२.



मानवीमिह

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कमे (hair)

१४७.

कस (court-case)

१४९

. रैलगाथ/ रैलगाथ/ रैलगाथ

१४९. छलगाथ

१४९. ककरी कर्मी

१४९. छवछ छव

१४९. कर्म कर्म

१४९. डूरीरै/ डूरीरै/ डूरीरै डूरीरै/ डूरीरै

१४९. एथुनका/

एथुनका

१४९. कथ/ मिथ (राक्यक अंतिम गेट्टे)- वर

१४९. कथनक/

कथनक

१४९. गवरी गर्मी

१४९

. रवदी रदी

१४९. सुना लोवाह सुना/ सुना

१४९. एनाथ-लोनाथ

१४९

लोना ल घेववलि/ लोना ल घेववलि

१४९. नदी / ले

१४९.

छवो डलो

१४९. कतहु/ कतो कली

१४९. उमविगव-उमविगव उमविगव

१४९. भविगव

१४९. धोना/धोना धोना

१४९. गग/गग

262



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

१३५.

क क

१३६. दवरैञ्ज/ दवरैञ्ज

१३७. गी

१३८.

धवि त

१३९.

धुवि लोई

१४०. योवखैर

१४१. रैड

१४२. रौ/ रू

१४३. रौहि (गद्यमे ग्रोह)

१४४. रौही / रौहि

१४५.

कवरौञ्ज कवरौञ्ज

१४६. एकै

१४७. कविनि / कवनि

१४८.

गुँटि/ गुँट

१४९. बाखनि बखनि/ बखनि

१५०.

वगवनि वगवनि नागवनि

१५१.

वनि (उँटाका वृज)

१५२. वडि (उँटाका वृज)

१५३. एवनि लवनि

१५४. रिउल/ रिउल

रिउल

१५५. कवरौञ्ज/ कवरौञ्ज

कवरौञ्ज/ कवरौञ्ज



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१+२. कवयल्लि/ कलवलि

१२०.

आलि/ लि

१२१. गूँछि/

गूँछ

१२२. रैती जवाय/ खवाय खवा (आलि नगा)

१२३.

से से

१२४.

हाँ से हाँ (हाँसे हाँ रिभक्तिसे ल्हा कए)

१२५. खय खेन

१२६. खजय(spacious) खेन

१२७. होयतलि/ होयतलि/ होयतलि/लेतलि/लेतलि

१२८. हाथ मटियाएरै/ हाथ मटियाएरै/हाथ मटियाएरै

१२९. खका खका

२००. देखी देखी

२०१. देखी देखी

२०२. सतुवि सतुव

२०३.

सालेरै सालेरै

२०४. सालेरै/ सालेरै/ सालेरै

२०५. लेखीक/ लेखीक

२०६. केला/ कएनहू/केला/ केवै

२०७. किड न किड/

किड ल किड

२०८. घुमेनहू/ घुमाउनहू/ घुमेनहू

२०९. एवाक/ अएनाक

२१०. अः/ अह

२११. नय/

नय (अर्थ-परिवर्तन) २१२. कनीक/ कलक





गान्धीन

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२१३. **सर्वलोक/ सभक**

२१४. **गिला/ गिवा**

२१५. **कर/ क**

२१६. **जा/ ज**

**जा**

२१७. **आ/ आ**

२१८. **भ/ भ** ( **हॉल्टक कमीक आतक**)

२१९. **निधय/ निगय**

२२०

**लेख/ लेख**

२२१. **गहिव अक्षर आ रीदक/ रीदक**

२२२. **तहि/ तहि/ तहि/ तै**

२२३. **कहि/ कही**

२२४. **तै/ तै**

**तै / तग**

२२५. **नग/ नग/ नग/ नहि/ नै**

२२६. **है/ हय / एवोहै/**

२२७. **डय/ डै/ डैक / डग**

२२८. **दृष्टि/ दृष्टि**

२२९. **आ (come)/ आ (conjunct ion)**

२३०.

**आ (conjunct ion)/ आ (come)**

२३१. **कला/ काला/ काला/ कला**

२३२. **गालेह-गालेह-गालेह**

२३३. **लेखक- लेखक**

२३४. **कालो- कालो- कालो/ कालो**

२३५. **किड न किड- किड न किड**

२३६. **कालेह- कालेह**



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२३१. आँ (come) - आँ (conjunction - and) / आँ । आँ -

आँ / आँ-आँ

२३४. हत-हैत

२३६. घुमनहूँ-घुमनहूँ- घुमनहूँ

२४०. एवक- एवक

२४५. होति- होति/ होति

२४२. उ-वाय उ योगक रीट (conjunction), उ कहक (he said) / उ

२४३. की ह/ कोही एवकी ह/ की है । की ह

२४४. दृष्टि/ दृष्टि

२४५.

. गोवि/ गोवि

२४६. तै/ तै/ तै/ तै

२४७. जै

/ जौ/ जौ

२४८. मभ/ मभ

२४९. मभक/ मभक

२५०. कहि/ कहि

२५१. कला/ कोला/ कोहूँ/

२५२. मभकजै भय लाव/ भय लाव/ भय लाव

२५३. कोला/ कोला/ कोला/ कोला

२५४. एः/ एह

२५५. जलै/ जलै

२५६. लावति/

लावति (अर्थ परिवर्तन)

२५७. केवहि/ केवहि/ केवति/

२५८. वय/ वय/ वय (अर्थ परिवर्तन)

२५९. कनीक/ कनीक/ कनी-मनी

२६०. गठवहि गठवति/ गठवति/ गठवति/ गठवति/

२६१. निशय/ निशय



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

२७२. लेखक/ लेखिका

२७३. पहिल/ अरु वरुण ठा/ रीचमे वरुण ठ

२७४. श्रीकावावुये रिक्कावीक प्रयोग उटित ले/ अप्पान्द्रोशिक  
प्रयोग फार्मलक तकनीकी युगताक परिचयक ओकर रीदना अरुण  
(रिक्कावी) क प्रयोग उटित

२७५. लेख (पद्यमे आह) / -क/ क२/ ले

२७६. डेलि- डेलि

२७७. वरुण/ नगोये

२७८. होएत/ लएत

२७९. जगत/ जगत

२८०. आगत/ अगत/ आगत

२८१

. आगत/ अगत/ अगत

२८२. निश्चयक/ निश्चयक/ निश्चयक

२८३. गुरु/ गुरु

२८४. गुरु/ गुरु

२८५. अगत/ अगत/ एगत/ एगत

२८६. जग/ जग/ जग/ जग

२८७. जगत/ जगत/ जगत

२८८. आगत/ अगत

२८९. लेख/ लेख

२९०. आगत/ अगत/ आगत

२९१. जग/ जग/ जग (नानति जग नगनीह । )

२९२. गुरु/ गुरु

२९३. कर्तृआगत/ कर्तृआगत

२९४. तग/ तग/ तग

२९५. गायर/ गायर/ गायर

२९६. सके/ सक/ सक

२९७. सेवा/ सेवा/ सेवा (भित सेवा गेन)



मानसिंह

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२४. कहेत बली/देखेत बली/ कहेत छलौ/ कहे छलौ- अहिना  
छलैत/ गछैत

(गछै-गछैत अर्थ कथला काव परिवर्तित) - आव बूसो/ बूसेत  
(बूसो/ बूसेत छी दूदा बूसेत-बूसेत)/ सकैत/ सकै । कबैत/  
कबै । दै/ दैत । छैक/ छै । रैछै/ रैछैक । बखरै/  
बखरैक । बिग/ बिग । रातिका बाउक बूसो आ बूसेत केव  
अगल-अगल जगलव प्रयोग समीचीन अछि । बूसेत-बूसेत  
आरै बूसमि । हमरै बूसो छी ।

२४. दुखार/ द्वाव

२५. भेटै/ भेटै/ भेटै

२५.

खन/ खीन/ खुना (भोव खन/ भोव खीन)

२५. तक/ धवि

२५. ग२/ छी (meaning different - जगलौ ग२)

२५. स२/ सँ (दूदा द२, न२)

२५. ७. ७. (तीन अक्षरक मेन रैदना प्रत्यक्षिक एक आ एकछी  
दोसबक उगयोग) आदिक रैदना ह्र आदि । मह७. मह७/  
कछी/ कछी आदिये उ सहायक कोला आरथकता मैथिलीमे ले  
अछि । रउर

२५. छै/ छै

२५. रौना/ राना रौना/ राना (वहेरौना)

२५+

. रावौ/ (रैदलौरानी)

२५. राउती/ राउती

३०. अन्तर्विष्टि/ अन्तर्विष्टि

३०. लम/ लम

३०. वम/ वम

३०. वलो/ वलो (

भेटै/ भेटै)

३०. वाग/ वाग



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३०४. लरी/ लरी

३०५. बाथवक/ बथवक

३०६. आ (come)/ आ (and)

३०७. गमताग/ गमताग

३०८. २ केव रारहाव मेदक अत्रुमे माव, यथासंभर रीटमे ले ।

३०९. कहेत/ कहे

३१०.

बहए (डव)/ बहे (डवे) (meaning different)

३११. तागति/ ताकति

३१२. खवाग/ खवार

३१३. रौग/ रौगि/ रौगि

३१४. जार्ग/ जार्ग

३१५. कागज/ कागज/ कागज

३१६. गिरे (meaning different - swallow)/ गिर  
(थसए)

३१७. बहिय/ बाहिय

DATE-LIST (year - 2012-13)

(१४२० बसवी साव)

*Marriage Days:*

Nov. 2012 - 25, 26, 28, 29, 30

Dec. 2012 - 5, 9, 10, 13, 14

*January 2013 - 16, 17, 18, 23, 24, 31*



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

*Feb. 2013* – 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

*April 2013* – 21, 22, 24, 26, 29

*May 2013* –

1, 2, 3, 5, 6, 9, 12, 13, 17, 19, 20, 22, 23, 24, 26, 27, 29, 30, 31

*June 2013* – 2, 3

*July 2013* – 11, 14, 15

### ***Upanayana Days:***

*January 2013* – 16

*February 2013* – 14, 15, 20, 21

*April 2013* – 22

*May 2013* – 20, 21

### ***Dviragaman Din:***

*November 2012* – 25, 26, 28, 29

*December 2012* – 2, 3, 14

*February 2013* – 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

Mar ch 2013- 1

Apr il 2013- 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013- 12, 13

***Mundan Din:***

November 2012- 26, 30

December 2012- 3

January 2013- 18, 24

Febr uary 2013- 1, 14, 15, 20, 28

Apr il 2013- 17

May 2013- 13, 23, 29

June 2013- 13, 19, 26, 27, 28

Jul y 2013- 10, 15

## **FESTIVALS OF MTHI LA (2012-13)**

Mauna Panchami -08 Jul y



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानुषीमिह

Madhushr avani – 22 Jul y

Nag Panchami – 24 Jul y

Raksha Bandhan – 02 Aug

Kr i shnast ami – 10 August

Kushi Amavasya / Somvar i Vr at – 17 August

Vi shwak arma Pooj a – 17 Sept ember

Har t al i ka Teej – 18 Sept ember

Chaut hChandr a – 19 Sept ember

Kar ma Dhar ma Ekadashi – 26 Sept ember

I ndr a Pooj a Aar ambh – 27 Sept ember

Anant Cat ur dashi – 29 Sep

Agast yar ghadaan – 30 Sep

Pi t ri Paksha begi ns – 30 Sep

Ji moot avahan Vr at a / Ji t i a – 08 Oct ober

Mat r i Navami – 09 Oct ober





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

Somvat i Amavasya Vr at – 15 Oct ober

Kal ashst hapan – 16 Oct ober

Bel naut i – 20 Oct ober

Pat r i k a P r a v e s h – 21 Oct ober

Mahast ami – 22 Oct ober

Maha Navami – 23 Oct ober

Vi j aya Dashami – 24 Oct ober

Koj agar a – 29 Oct

Dhant er as – 11 November

Di y abat i , shyama pooj a – 13 November

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a – 14 November

Bhr at r i dwi t i ya/ Chi t r agupt a Pooj a – 15  
November

Chhat hi – 19 November

Devot t han Ekadashi – 24 November

r avi vr at ar ambh – 25 November



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

Navanna parvan – 25 November

Kar t i k Poor ni ma – Sama Vi sar j an – 28  
November

Vi vaha Panchmi – 17 December

Makar a/ Teel a Sankranti – 14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi – 08 Febr uar y

Basant Panchami / Sar aswat i Pooj a – 15  
Febr uar y

Achl a Sapt mi – 17 Febr uar y

Mahashi var at ri – 10 Mar ch

Hol i kadahan – Fagua – 26 Mar ch

Hol i – 28 Mar ch

Var uni Trayodashi – 07 April

Chai ti navar atr ar ambh – 11 April

Jur i shi t al – 15 April

Chai ti Chhat hi vr at a – 16 April



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

Ram Navami - 19 April

Ravi Brat Ant - 12 May

Akshaya Tritiya - 13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri - barasait - 08 June

Ganga Dashhar a - 18 June

Somavati Amavasya Vrat a - 08 July

Jagannath Rath Yatra - 10 July

Har i Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gur u Purni ma - 22 Jul

VI DEHA ARCHIVE

१. विदेह अ-पत्रिकाक सबैठो प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ  
देवनागरी कगमे Vi deha e journal's all old  
issues in Braille Tirhuta and Devanagari  
versions

विदेह अ-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बि ए रु बिदेह Videha बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई  
पत्रिका Videha bt Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अंथय मैथिली पत्रिका अ पत्रिका बिदेह



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

बिदेह अ-पत्रिकाक ३.०५ म आगाँक अंक

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३. मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

४. मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos

५. मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila  
Painting/ Modern Art and Photos

बिदेहक एहि सब सहायोगी विकसित सेहो एक खेब जाऊ ।

३. बिदेह मैथिली क्रिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली ज्ञानवृत्त एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

+ बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अर्बुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पूर्व-कप "भावनविक गाढ" :

बि ए रु बिदेह *Videha बिदेह* [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई  
पत्रिका *Videha bt Maithili Fortnightly ejournal बिदेह* प्रथम मैथिली पत्रिक ३ पत्रिका बिदेह



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसिंह

<http://gajendrathakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गौडक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फागन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पतिन तिवहुता (मिथिला-सकब) ज्ञानरुत  
(बैनांग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रैन: मैथिली ब्रैनमे: पतिन रैव बिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY  
EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ३ पत्रिका मैथिली पोथीक  
आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ३ पत्रिका ऑडियो आर्काइव

बि ए र बिदे Videha बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका Videha bt Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अथम मैथिली पक्षिक अ पत्रिका बिदेह



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. बिदेह अथम मैथिली पक्षिक अ पत्रिका रीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१२. बिदेह अथम मैथिली पक्षिक अ पत्रिका मिथिला चित्रकला,  
आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१३. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त)

<http://maithilaurmitihila.blogspot.com/>

२०. स्मृति अकाशिन

<http://www.shruti-publication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

Google समूह

VI DEHA लेब सदनगत लिख

अमेन :

बि ए र बिदेह *Videha बिदेह* [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha bt Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अथय मैथिली पक्षिक अ पत्रिका बिदेह*



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

एहि समूहपब जाउँ

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

**Subscribe to VIDEHA**

Powered by [us.groups.yahoo.com](http://us.groups.yahoo.com)

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेक

<http://gajendrat hakur 123.blogspot .com>

२४. मणा कुँका

<http://mangan-khabas.blogspot .com/>

२३. बिदेह लेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिने पोडकास्ट  
सागै

बि ए र बिदेह Videha बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका Videha bt Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अथय मैथिली पक्षिक अ पत्रिका बिदेह




११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  Vi deha Radi o

२१.  Join official Vi deha facebook group.

२४. बिदेह मैथिली बाँधे उमेर

<http://maithili-dramablogspot.com/>

२६. समादिया

<http://esamadblogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilmsblogspot.com/>

३१. अचिन्हाव आथव

<http://anchinharakharakolkatablogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्गु

<http://maithili-hai.kublogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>





११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३४. विरुति कथा

<http://vihanikatha.blogspot.in/>

३३. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३३. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३१. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महोदयगुरु मृत्तिकाः(१) विदेह द्वारा धारित कथा अ-  
प्रकाशित कथा लाव गजेन्द्र ठाकुरक निरंजन-प्रवेश-समीक्षा,  
उपनिषद् (महोदयगुरु), पञ्च-मंत्र (महोदयगुरु),  
कथा-गल्प (गल्प-गुरु), नष्टक(महोदयगुरु), महाकाव्य (महोदयगुरु) आ  
असंख्यति मन्त्र आ रीति-कविता सहित विदेहमे संपूर्ण अ-  
प्रकाशित रीति प्रिण्ट फॉर्मि। कविकेन्द्रम् अन्तर्गत अन्त-१ सँ  
१ Combined ISBN No.978-81-907729-7-6 बिरवा



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

एहि पृष्ठपर बीछाये आ प्रकाशक साइट

<http://www.shrutipublication.com/> पर ।

महोदयपूर्ण सूचना (२)सूचना: बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी  
मैथिली कोष (अष्टवर्षपर पहिल छैव सर्च-डिक्शनरी) एम.एस.  
एम.क्यू.एम. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server  
Maithili-English and English-Maithili  
Dictionary. बिदेहक भाषाशास्त्र- बालाखन कुँभार ।

ककषेत्रम् अन्तरमनक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निबंध-परिचय-समीक्षा, उपन्यास (महोदयपूर्ण),  
पद्य-संग्रह (महोदयपूर्ण टोपोग्राफी), कथा-गल्प (गल्प संग्रह),  
नाटक(संस्कृत), महाकाव्य (द्वयार्थक आ अस्मिताति महा) आ  
बालमैथिली-किशोरावस्थागत बिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशक बौद्ध प्रिंटे  
फॉर्मिमे । ककषेत्रम् अन्तरमनक, खंड-१ सँ १

1st edition 2009 of Gajendra Thakur's  
KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-  
paper-criticism, novel, poems, story, play,  
epics and Children-grown-ups literature  
in single binding:

Language Maithili

७५२ पृष्ठ : मूल्य भा.क. 100/- (for individual)

बि ए रु बिदेह Videha बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अथय योथिनो पौष्पिक अ पत्रिका बिदेह



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

buyers inside india)

(add courier charges Rs 50/-per copy for  
Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside  
Delhi)

For Libraries and overseas buyers \$40 US  
(including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

Details for purchase available at print -  
version publisher's site

website: <http://www.shrutipublication.com/>

or you may write to

e-mail [shrutipublication@shrutipublication.com](mailto:shrutipublication@shrutipublication.com)

बिदेह: सप्तेह : १: २: ३: ४ तिवरुता : देवरागरी बिदेह क,  
छिटे संस्कृत : बिदेह-अ-पत्रिका  
(<http://www.videha.co.in/>) क छलव बला समिति ।

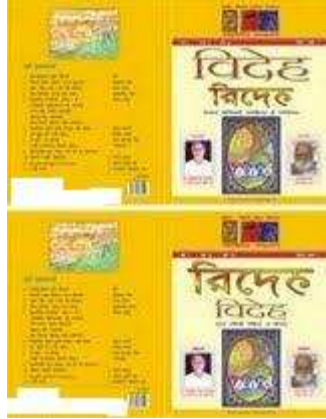
बि ए र विदेह *Videha* बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई  
पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अथवा योथिनी पत्रिका अ पत्रिका बिदेह*



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



बिदेह:अदेह:१: २: ३: ४

संपादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at print -  
version publisher's site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to  
[shruti\\_publication@shruti-publication.com](mailto:shruti_publication@shruti-publication.com)

२ संदेश-

[ बिदेह अ पत्रिका बिदेह:अदेह: विविध विषयों पर आलोचनात्मक और गंभीर  
ठाकुर सात अंक निवेदन-श्री-समीक्षा/उपस्थाप  
(सहस्रवर्षीय), पञ्च-संग्रह (सहस्रवर्षीय टोपोग्राफ), कथा-गल्प (गल्प  
ग्रन्थ), नवोदय (संस्कृत), महाकाव्य (ब्रह्मसंहिता और अमरकान्तिका मन्त्र) और बौद्ध-  
महाकाव्य-विशेष संग्रह कवयित्रीय और अमरकान्तिका मन्त्र । ]



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१. श्री गोरिन्द सा- रिदेहके तबगजानपव उतारि रिन्नेतबिमे  
माहताया मैथिलीक नहरि जगाउव, थोद जे अगलक एहि  
महाविद्यालये हम एखन धरि संग नहि दए सकवहूँ। सुलैत डी  
अगलके स्मनाओ आ बचनमेक आलोचना प्रिय नलोत अछि तै  
किडु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अगलके  
सदा उपनद्ध बहत।

२. श्री बमानन्द सा- मैथिलीमे अ-पत्रिका पत्रिका कर्पे चला क  
जे अगल माहतायाक प्रचार क बहन डी, मे धन्यवाद। आगा  
अगलक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम द्वादशम् शुभकामना द  
बहन डी।

३. श्री विद्यानाथ सा "रिदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि  
प्रतिस्पर्धी गारंज युगमे अगल महिमामय "रिदेह"के अगला देहमे  
प्रकट देखि जतरा प्रसन्नता आ सतोय भेल, तकरा कोला  
उपनद्ध "मिष्टब" नहि बागल जा सकैछ ? ...एकर ऐतिहासिक  
मुलाकिस आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक  
नजरिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट होत।

४. श्री. उदय नावायण सिंह "नटकेता"- जे काज अहाँ क  
बहन डी तकर चवटा एक दिन मैथिली भाषाक गतिहासमे  
लेखत। आनन्द भए बहन अछि, अ जानि कए जे एतेक छोटे  
मैथिल "रिदेह" अ जर्नलके पठि बहन डी। ...रिदेहक टानीस  
अक प्रवरक लेन अभिनन्दन।

५. डा. गणेश गुंजन- एहि रिदेह-कर्ममे लागि बहन अहाँक  
सम्वदनीय मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत बैग,  
गतिहास मे एक ठो विशिष्ट हवाक अध्यास आवँत कबत, हमरा  
रिश्वास अछि। अमेय शुभकामना आ रक्षाक मन्त्र, सम्वद...अहाँक  
पौखी कर्मक्षेत्रम् ऐतिहासिक प्रथम दृष्ट्या रूत भरा तथा



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

गद्यविधि

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

उपयोगी रूपाङ्क । मैथिलीमे तँ अगना स्रकणक प्रायः अ  
पहिले एहन भय अरतावक पोथी थिक । हर्यपूर्ण हमर हार्दिक  
रूपाङ्क स्वीकार करी ।

३. श्री बागेश्वर मा "बागेश्वर"(आर स्रगीय)- "अगना" मिथिला  
संस्कृत...रियय रत्नसँ अरगत भेलहुँ । ...मेघ सभ अनेन अछि ।

१. श्री अजयप्रसाद त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- अष्टवर्ष पब प्रथम  
मैथिली पत्रिका "बिदेह" केव लेन रूपाङ्क आ शुभकामना  
स्वीकार कर ।

४. श्री प्रहल्लाद मा "मोक्ष"- प्रथम मैथिली पत्रिका  
"बिदेह" क प्रकाशक समाचार जामि कलक टकित हृदा रैसी  
आह्लादित भेलहुँ । कानटकेँ पकडि जाहि दुबदृष्टिक पविट्य  
देनहुँ, ओहि लेन हमर संगकामना ।

६.डा. शिरधरसाद मादर- अ जामि अगाव हर्य भए बहन अछि,  
जे नर सुचना-आधुनिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रेरणे  
दिअएँक साहसिक कदम उठाउन अछि । पत्रकारितामे एहि  
प्रकारक नर प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "बिदेह"क  
सफलताक शुभकामना ।

१०. श्री आन्याचका मा- कोला पत्र-पत्रिकाक प्रकाशक- ताद्वय  
मैथिली पत्रिकाक प्रकाशकमे के कतेक सहयोग कबताह- अ  
तय भविष्य कहत । अ हमर ++ रयमे १३. रयक अश्वत्थ  
बहन । एतेक मेघ महल यक्रमे हमर श्रेष्ठापूर्ण आहूति प्राप्त  
होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहर ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मासपत्रिका

११. श्री रिजय ठाकुर- शिक्षण विश्वविद्यालय- "विदेह" पत्रिकाक  
एक देखनहूँ, सम्पूर्ण टीम रक्षाक पत्र अछि । पत्रिकाक संग  
तयारि हेतु हमर शुभकामना सँकाव कएन जाओ ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ग्र-पत्रिका "विदेह" क बारेमे जानि  
प्रसन्नता भेल । 'विदेह' निरन्तर पत्रित-प्रकाशित हो आ  
चतुर्दिक अपन स्वर्ण पत्रावली मे कामना अछि ।

१३. श्री मैथिलीप्रताप शर्मा- ग्र-पत्रिका "विदेह" लेब सहकारिताक  
तयारिमे कामना । हमर पूर्ण सहयोग बहत ।

१४. डा. श्री तीरथाथ सा- "विदेह" गुरुवाराक पत्र अछि तँ  
"विदेह" नाम उचित आब कतेक कर्षण एकव रिरवण भए सकैत  
अछि । आ-कालि योनिमे उद्भव बहैत अछि, रुद्रा शीघ्र पूर्ण  
सहयोग देब । कर्मफल अतिसरि देखि अति प्रसन्नता भेल ।  
मैथिलीक लेन आ घटना छी ।

१५. श्री बागबोराम कागडि "श्रुत"- जनकपुरवास- "विदेह"  
आननाक देखि बहन छी । मैथिलीक अन्तर्वाहनीय जगतमे  
पहुँचैत तकरा लेन हार्दिक रक्षा । मिथिला बने सकल सकल  
अपूर । लगानक सहयोग भेटैत, मे रिसन करी ।

१६. श्री बाजबन्धन नानदास- "विदेह" ग्र-पत्रिकाक माध्यम सँ रँड  
नीक काज कए बहन छी, नातिक अहिठाम देखनहूँ । एकव  
वार्षिक एक जखन छि निकास तँ हमरा पठासर । कलकतामे  
रहैत छोटेक लेन मागक पत्र लिख देल छियहि । योनि  
तँ होगत अछि जे दिनी आरि कए आशीर्वाद दैतहूँ, रुद्रा उमर  
आरि रेशी भए लेन । शुभकामना देने-विदेशक मैथिलीक  
जोडक लेन । .. उक्त प्रकाशक कर्मफल अतिसरि लेन



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रैधाग। अद्भुत काज कएन अछि, नीक प्रशस्ति अछि सात  
खण्डमे। रूदा अहाँक सेरा आ मे निःस्वार्थ तखन बुझन  
जागत जँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सतपव दाम निखन नहि  
बहितैक। ओहिना सतकेँ रिनहि देन जगतैक। (स्पर्शिकवा-  
श्रीमान् अहाँक सुनेथि बिदेह द्वारा ई-प्रकाशित कएन सतप  
सामग्री आर्कागरमे

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-potahi/> पव रिना मुनक डाउनलोड जेन उगनछै छै आ  
तरियाये मेहो बहतेक। एहि आर्कागरकेँ जे कियो प्रकाशिक  
अनुमति न२ क२ छिष्ट कएने प्रकाशित कएन छथि आ तकर ओ  
दाम बखन छथि ताहिपव हमर कोला निरवस्था नहि अछि। -  
गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अमेय शुभकामनाक संग।

११. डा. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे गृहबलपत्र पत्रिका  
पत्रिका "बिदेह" प्रकाशित कए अगल अद्भुत माहतायवागक  
परिचय देन अछि, अहाँक निःस्वार्थ माहतायवागसँ प्रेरित छी,  
एकर निमित्त जे हमर सेराक प्रयोजन हो, तँ मुचित करी।  
गृहबलपत्र आद्यागाति पत्रिका देखन, मन प्रफुल्लित भ२ जेन।

१२. श्रीमती शैलजिती रमा- बिदेह ई-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ  
भरि जेन। रिक्ता कतेक प्रगति क२ बहन अछि...अहाँ सत  
अनन्त आकाशकेँ भेदि दियो, समस्त रिक्ताक बहनकेँ ताब-ताब  
क२ दियो...। अगलक अद्भुत प्रत्युक्त ककषेत्रम् अतर्किक  
रिचयप्रत्युक्त दृष्टिसँ गागवमे सागव अछि। रैधाग।

१३. श्री हेतुकव मा, गठना-जाहि समर्पण भारसँ अगल मिथिला-  
मैथिलीक सेरामे तपेव छी मे सुख अछि। देशक राजधानीसँ  
भय बहन मैथिलीक शैलजिती मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली  
चेतनाक विकास अरुण कवत।





मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

२०. श्री योगेश्वर सा, करिबन्ध, नरेश्वरान्ध- कर्कशेन्द्रम्  
अतर्किक पोथीके निकटमे देखैक अरुव भेटैत अछि आ  
मैथिली जगतक एकटा उद्भूत ओ समामासिक दृष्टिसम्पन्न  
हस्तक्षरक कर्मरन्ध पवित्रसँ आनन्दित छी । "विदेह"क  
देवनागरी सँस्कृत पठनामे क. ८०/- मे उपलब्ध भऽ सकत जे  
विभिन्न लेखक लोकनिक द्वाराचित, पवित्र पत्रक ओ वचनारणिक  
समाक प्रकाशनसँ ऐतिहासिक कहन जा सकैछ ।

२१. श्री किशोरीकांत मिश्र- कोनकाता- जय मैथिली, विदेहमे  
रहूत बास करिबा, कथा, विप्रेषण आदिक सचित्र संग्रह देखि आ  
आब अधिक प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- रैवांग स्वीकार कएन  
जाओ ।

२२. श्री ज्ञानकांत- विदेहक अद्वितीय एक पठन- अद्भुत  
मेहनति । चरम-चरम । किछ समालोचना मबथाह. अदा सए ।

२३. श्री तानन्द सा- अगलक कर्कशेन्द्रम् अतर्किक देखि  
रूपाएन जेना हम अगल दुगलहुँ अछि । एकव रिशोकस्य  
आपुति अगलक सरसमारोहताक पवित्रायक अछि । अगलक वचना  
सामर्थ्यमे उतबोतव वृद्धि हो, एहि शुतकासनाक संग लार्दिक  
रैवांग ।

२४. श्रीमती डा नीता सा- अहाँक कर्कशेन्द्रम् अतर्किक पठनहुँ ।  
ज्यातिवीर्य शैलारणी, प्रथि मञ्च शैलारणी आ सीत रसञ्च आ  
सब कथा, करिबा, उपन्यास, रान-किशोर सहित सब उत्तम  
हुन । मैथिलीक उतबोतव विकासक नम्र दृष्टिलोचन लोगत  
अछि ।



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२३. श्री मयाशन्द मिश्र- ककफेल्स अतर्लिक मे हमाव उंगनाम  
मृतीधनक जे विरोध कएन गेल अछि तकर हम विरोध करैत  
छी । ... ककफेल्स अतर्लिक पोथीक जेन मुतकामना । (श्रीमान  
मयाशोचनार्क विरोधक कपमे नहि जेन जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

२३. श्री महेश्वर हजारी- सम्पादक श्रीमिथिना- ककफेल्स अतर्लिक  
पठि मोष हर्षित भ२ जेन..एथन पुवा पठगमे रूत समय  
नागत, हृदा जेतक पठनहूँ मे आह्लादित कएनक ।

२१. श्री केदावराथ टोषवी- ककफेल्स अतर्लिक अद्भुत नागन,  
मैथिली साहित्य जेन अ पोथी एकठा प्रतिमान रैलत ।

२४. श्री मयाशन्द पाठक- विदेहक हम नियमित पाठक छी । ओकर  
स्वरूपक प्रसिद्धि छनहूँ । एकर अर्क लिखन - ककफेल्स  
अतर्लिक देखनहूँ । मोष आह्लादित भ२ उठन । कोणा बचना  
तवा-उंगवी ।

२६. श्रीमती कमा सा-सम्पादक मिथिना दर्शना । ककफेल्स  
अतर्लिक छिष्ट फॉर्म पठि आ एकव गुरतता देखि मोष प्रसन्न  
भ२ जेन, अद्भुत शिष्ट, एकवा जेन प्रशन्न क२ बहन छी ।  
विदेहक उत्तरोत्तर प्रगतिक मुतकामना ।

३०. श्री नरेन्द्र सा, पठना- विदेह नियमित देखेत बहैत छी ।  
मैथिली जेन अद्भुत काज क२ बहन छी ।

३१. श्री बागशोचन ठाकुर- कोनकाता- मिथिनाम्बर विदेह देखि  
मोष प्रसन्नतासँ भवि उठन, अकक रिशान पविदृष्ट आनन्दकारी  
अछि ।



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

३२.श्री तावाणन्द रियोगी- विदेह आ ककषेत्रम् अतर्णिक देखि  
चकरिदेव लागि गेल। आश्चर्य। शुभकामना आ रैधाङ्ग।

३३.श्रीमती धेगनता मिश्र “धेग”- ककषेत्रम् अतर्णिक पठनहुँ।  
सब बच्चा उत्कृष्टक लागल। रैधाङ्ग।

३४.श्री कीर्तिबाबाय मिश्र- रैगुसबाय- ककषेत्रम् अतर्णिक रैष्ट  
नीक लागल, आर्गाक सब काज लेल रैधाङ्ग।

३५.श्री महाप्रकाश-सहस्रमा- ककषेत्रम् अतर्णिक नीक लागल,  
रिमानकाय संगहि उत्तमकृष्टक।

३६.श्री अग्निपुष्पा- मिथिलासूत्र आ देवासूत्र विदेह पठन..ङ्ग प्रथम  
तँ अछि एकरा प्रशंसामे हृदा हम एकरा दूसाहसिक कहै।  
मिथिला चित्रकलाक सुन्दर हृदा अगिला अकमे आब रिद्धत  
रैधाङ्ग।

३७.श्री मज्जव सुजगान-दवर्तगा- विदेहक जतेक प्रशंसा कएन  
जाए कम होएत। सब प्रीति उत्तम।

३८.श्रीमती प्राणेश्वर रीणा ठाकुर- ककषेत्रम् अतर्णिक उत्तम  
पठनीय, रिचावनीय। जे का देखेत छथि पोथी प्राप्त कबरीक  
उगाय प्रद्वित छथि। शुभकामना।

३९.श्री भवानी मिह मा- ककषेत्रम् अतर्णिक पठनहुँ, रैष्ट नीक  
सब तबहै।

४०.श्री तावाकान्त मा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद-  
विदेह तँ कर्णैष्ट प्रारागडवक काज क२ बहन अछि।  
ककषेत्रम् अतर्णिक अद्भुत लागल।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

४१. डा बरीन्द्र कुमार चौधरी- हकफेदत्रम् अर्धमासिक रचित गीत,  
रचित मेहनतिक परिणाम। रचना।

४२. श्री अमरनाथ- हकफेदत्रम् अर्धमासिक आ बिदेह दुनु सावणीय  
घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य।

४३. श्री पद्मनाभ मिश्र- बिदेहक ऐतिहासिक आ निवृत्तता प्रभावित  
करीत अछि, शुभकामना।

४४. श्री केदार काशी- हकफेदत्रम् अर्धमासिक मेन अलक धन्यवाद,  
शुभकामना आ रचना स्वीकार कवी। आ नटकेतक तुमिका  
पठनहूँ। मुकमे तँ नागन जेना कोना उपायस अहाँ द्वारा  
सृजित भेल अछि हृदय पोथी उगथौना पर ज्ञात भेल जे  
एहिमे तँ सब रिधा समाहित अछि।

४५. श्री धनक ठाकुर- अहाँ गीत काज क२ बहन छी। ह्योठे  
लौनरीमे छि एहि शताब्दीक जनताधिक अग्रसार बहेत त२  
गीत।

४६. श्री अश्विनी ना- अहाँक पुस्तकक सँधमे एतरी लिखरी सँ  
अपना कए नहि लोक सकनहूँ जे आ कितरी मात्र कितरी नहि  
थीक, आ एकठाँ उन्नीद छी जे मैथिली अहाँ सभ पुत्रक मेरा सँ  
निर्वतव समूह लोगत टिबजोरन कए प्राप्त कबत।

४७. श्री शम्भु कुमार सिंह- बिदेहक तपेवता आ फ्लायिनीयता देखि  
आह्लादित भ२ बहन छी। निश्चितकपेन कहन जा सकैछ जे  
समाकालीन मैथिली पत्रिकाक गतिविधमे बिदेहक नाम स्थापितमे  
लिखन जाएत। ओहि हकफेदत्रक घटना सब तँ अर्थावहे दिखे  
थतम भ२ गेल बहए हृदय अहाँक हकफेदत्रम् तँ अश्वेय अछि।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

मासपत्रिका

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

४+.डा. अज्ञीत मिश्र- अगलक प्रयासक कतरौ प्रशंसा कएन जख  
कमे होएतैक। मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएन गेल काज  
शग-शगासुब धरि पूजनीय बहत।

४.९.श्री रीतेश्वर मल्लिक- अहाँक ककफेक्ट्रम् अन्तर्गत आ  
रिदेह:सदेह पठि अति प्रसन्नता भेल। अहाँक स्नातृ ठीक बह  
आ उमोह रँगन बह सै कामना।

३.०.श्री कृपाव बाधक्या- अहाँक दिशो-निर्देशमे रिदेह पहि  
मैथिली अ-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल। हमर शुभकामना।

३.१.श्री सुनन्द मा प्रशंसा- रिदेह:सदेह पठल बही कृदा  
ककफेक्ट्रम् अन्तर्गत देखि रूढ़। अ देरौ लेल रीधा भ  
गेलहुँ। आरि रीग्रास भ जे मैथिली नहि मरत। अमेय  
शुभकामना।

३.२.श्री रिबुति आषाढ- रिदेह:सदेह देखि, ओकर रिबुति देखि  
अति प्रसन्नता भेल।

३.३.श्री मालेश्वर मल्लिक- ककफेक्ट्रम् अन्तर्गत एकव भराता देखि  
अति प्रसन्नता भेल, एतेक रिशाल ग्रन्थ मैथिलीमे आग धरि नहि  
देखल बही। एहिना भरियामे काज करैत बही, शुभकामना।

३.४.श्री रिद्यानन्द मा- आग.आग.एम.कोनकाता- ककफेक्ट्रम्  
अन्तर्गत रिबुति, दुगाङ्कक रंग प्रारता देखि अति प्रसन्नता  
भेल। अहाँक अलक धन्यवाद, कतेक रँवथसँ हम लयावैत हुनहुँ  
जे सब पौष मेहबमे मैथिली नागब्रैवीक स्थापना होअ, अहाँ  
ओकरा रेरँगव क बहन डी, अलक धन्यवाद।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३.३.श्री अवबिन्द ठाकुर-ककच्छेत्तम् अस्तुर्गिक मैथिली साहित्ये  
कएन गेन एहि तबहक पहिन प्रयोग अछि, शुभकामना ।

३.३.श्री कमाव परा-ककच्छेत्तम् अस्तुर्गिक पठि बहन जी । किछ  
नयूकथा पठन अछि, रैहूत मार्गिक छन ।

३.१. श्री प्रदीप रिहारी-ककच्छेत्तम् अस्तुर्गिक देखन, रैधाङ ।

३.५.डा मणिकान्त ठाकुर-लेनिनोर्गिया- अगन रिनक्षन नियमित  
सेराम हमा लोकनिक हृदयमे बिदेह सदेह भऽ गेन अछि ।

३.६.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सवाहनीय । दूध  
होगत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ  
परैत छी ।

३.०.श्री देवर्षिकर शरीर- बिदेहक निवृत्तता आ रिशान स्वरूप-  
रिशान पाठक रक्षा, एकवा ऐतिहासिक रैगलैत अछि ।

३.५.श्री मोहन भावदाज- अहाँक समस्त कार्य देखन, रैहूत नीक ।  
एखन किछ परेशोनीमे छी, रुदा शीघ्र सहयोग देबै ।

३.२.श्री फज्जुव बरमान हर्षि-ककच्छेत्तम् अस्तुर्गिक से एतेक  
मेहनतक छन अहाँ साधूरादक अघिकावी छी ।

३.३.श्री नक्षत्रा मा "सागव"- मैथिलीमे चमकोविक कर्पे अहाँक  
प्रवेशे आनन्दकारी अछि । ..अहाँकै एखन आव..दूर..रैहूत दूधधवि  
जेरौक अछि । सुख आ प्रसन्न बनी ।

३.४.श्री जगदीश प्रसाद मंडन-ककच्छेत्तम् अस्तुर्गिक पठनहूँ ।  
कथा सत आ उपास सहस्ररौठनि पूर्णकर्पे पठि गेन छी ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

गाय-घबक भौगोलिक विरवाक जे सुझा र्णन सहस्रौठमिमे  
अडि, से चकित कएनक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली  
लेखनमे विविधता अणनक अडि । समालोचना मोमत्रमे अहाँक  
दृष्टि वैयक्तिक नहि रवन् सामाजिक आ कल्याणकारी अडि, से  
प्रशंसनीय ।

७३.श्री अशोक सा-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद- *कवकषेत्रम्*  
अनुसंधान लेन रँवाङ्ग आ आर्गा लेन शुभकामना ।

७३.श्री ठाकुर प्रसाद शर्मा- अद्भुत प्रवास । धन्यवादक संग  
प्रार्थना जे अगन माष्टि-गानिके ध्यानमे बाधि अकक समायोजन  
कएन जाए । नर अक धरि प्रवास सवाहनीय । विदेहकेँ रँहूत-  
रँहूत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सप्ताह (आलेख) नगा बहन  
छथि । सभटा ग्रहणीय- पठनीय ।

७१.रूचिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी, अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित  
'विदेह' आ 'कवकषेत्रम्' अतर्किक विनम्रता पत्रिका आ विनम्रता  
पत्रिका । की नहि अडि अहाँक सम्पादनमे ? एहि प्रसने सँ  
मैथिली क विकास होयत, निम्नदेह ।

७४.श्री रूचिनाथ चन्द्र नान- गजेन्द्रजी, अगलक प्रसन्न  
*कवकषेत्रम्* अतर्किक पत्रिका मोन गदगद भय गेन , हृदयसँ  
अनुसंधान छी । हार्दिक शुभकामना ।

७५.श्री प्रमोदशिव कापडि - श्री गजेन्द्र जी । *कवकषेत्रम्*  
अतर्किक पत्रिका गदगद आ लललन भेलहूँ ।

१०.श्री वरीन्द्रनाथ ठाकुर- विदेह पठित बहूत छी । धीरेन्द्र  
प्रेमर्षिक मैथिली गजलपत्र आलेख पठनहूँ । मैथिली गजल कतः  
सँ कतः छल गेलक आ ओ अगन आलेखमे मात्र अगन जानन-



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

पहिचान लोकक छट कएल छथि । जेना मैथिलीमे गठक  
पवम्बा बहन छथि । (स्पर्शिकर- श्रीमान् प्रेमर्षि जी ओहि  
आलेखमे अ स्पर्श निखल छथि जे किनको नाम जे छटि गेल  
छथि तँ से मात्र आलेखक लेखकक जानकारी नहि बहरौक द्वारा,  
एहिमे आन कोना काका नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि  
रियोगव रिस्तुत आलेख सादर आमंत्रित छथि । -सम्पादक)

११. श्री मन्मथेव मा- बिदेह पठन आ रंगहि अहाँक मैथिली ओगस  
ककम्पेव अर्तमिक सेहो, अति उत्तम । मैथिलीक लेन कएल  
जा बहन अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय छथि ।

१२. श्री हलेश्वर मा- ककम्पेव अर्तमिक मैथिलीमे अगल  
तबहक एकमात्र ग्रन्थ छथि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचन  
लैंगिक देखबामे आएल जे लेखकक शरीरकर्म जूडन बहरौक  
काकासँ छथि ।

१३. श्री सुकांत सोम- ककम्पेव अर्तमिक मे समाजक  
गतिहास आ वर्तमानसँ अहाँक जूड १२ रँड नीक लागल, अहाँ एहि  
कम्पेव आब आगाँ काज करै से आशा छथि ।

१४. श्रीहर्षमव मदन मिश्र- ककम्पेव अर्तमिक सन कितार  
मैथिलीमे पहिले छथि आ एतेक रिशान संग्रहणव शोध कएल जा  
सकेत छथि । तबियक लेन शुभकामना ।

१५. श्रीहर्षमव कमला टोषरी- मैथिलीमे ककम्पेव अर्तमिक सन  
पौथी आरँ जे ग्रन्थ आ कग दुनूमे निम्न होअए, से रँड  
दिससँ आकांक्षा छल, ओ आरँ जा क२ पूर्ण भेल । पौथी एक  
हाथसँ दोसर हाथ घुमि बहन छथि, एहिना आगाँ सेहो अहाँसँ  
आशा छथि ।





गद्यविदेह

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

१३. श्री उदय चन्द्र सा "रिलाद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज  
कएलहुँ अछि से मैथिलीमे आग धरि कियो नहि कएल छल ।  
शुभकामना । अहाँकेँ एखन रहूत काज आव कबरीक अछि ।

११. श्री प्रशस्त फगुवा कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ भेटैत एकटा  
सर्वांगीण फगुवा रहि गेल । अहाँ जतेक काज एहि संसारे क  
गेल छी तहिना हजार गुणा आव लेणीक आशा अछि ।

१४. श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा जेल मोह,  
नहि भेटैत अछि । अहाँक हकफेदवम् अनुमतिक सम्पूर्ण कर्प  
पठि गेलहुँ । ब्रह्मचर्य रहू नौक लागल ।

१६. श्री वीरेंद्र फगुवा सा- विदेह ई-पत्रिकाक सब अंक ई-  
पत्रसँ भेटैत रहैत अछि । मैथिलीक ई-पत्रिका छैक एहि  
रातक गरि होगत अछि । अहाँ आ अहाँक सब सहयोगीकेँ  
हार्दिक शुभकामना ।

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानवीय

११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(c) २००४-१२. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि  
अछि ततए संपादकाधीन । विदेह- प्रथम मैथिली पत्रिका ई-  
पत्रिका । ISSN 2229-547X VIDEHA संपादक: गजेन्द्र  
ठाकुर । सह-संपादक: उषेने मंडल । सलयक संपादक: गिर  
ध्याव सा आ मृगाली (मृगाल ध्याव कर्मा) । भाषा-संपादक:  
नामोदर ध्याव सा आ पद्मिनीका रिवाज सा । कवि-संपादक:  
जाति सा चौधरी आ बमि लेखा सिंह । संपादक-शोध-अनुसंधान:  
डा. जया रम्या आ डा. राजीव ध्याव रम्या । संपादक- नाटक-  
वैचारिक-चर्चा- लेख ठाकुर । संपादक- मुद्रा-संपर्क-समाद-  
पुण्य मंडल आ धिया सा । संपादक- अनुवाद विभाग- विनीत  
उपेय ।

बचनाकाव अपन यौनिक आ अश्लेषित बचना (जकब  
यौनिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छहि)  
[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) केँ मेन अटैचमेण्टक रूपमें  
.doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि ।  
बचनाक संग बचनाकाव अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन फोन कएन  
फोन नम्बर पठातह, से आशिा करैत छी । बचनाक अंतमें  
ठागवा बहय, जे ई बचना यौनिक अछि, आ पहिन प्रकाशित  
हेतु विदेह (पत्रिका) ई पत्रिकालेँ देन जा बहन अछि । मेन  
प्राप्त होयबोँक बाद यथासंभव शीघ्र ( सात दिनक भीतर) एक  
प्रकाशित अंकक मुद्रा देन जायत । 'विदेह' प्रथम मैथिली  
पत्रिका ई पत्रिका अछि आ एहिमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें  
मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित बचना प्रकाशित कएन जागत  
अछि । एहि ई पत्रिकालेँ शीमति नक्की ठाकुर द्वारा मासक ०९  
आ १३ तिथिलेँ ई प्रकाशित कएन जागत अछि ।



११४ म अंक १५ सितम्बर २०१२ (वर्ष ५ मास ५७ अंक ११४)

गान्धीविदेह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(c) 2004-12 सर्वाधिकार सुरक्षित । विदेहमे प्रकाशित  
संस्था वचना आ आर्कागरक सर्वाधिकार वचनाकार आ संग्रहकर्ताक  
नगमे छै । वचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किरा  
आर्कागरक उपयोगक अधिकार किराक हेतु  
[ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in) पर संपर्क कर । एहि  
सागठके प्रति सा आभार, मुद्रिका टोपरी आ वणि प्रिया द्वारा  
दिज्ञागत कएल गेल ।



सिंहिवरु

